अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	स्नातक स्तर	सीनियर सैकण्डरी स्तर	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ एवं पुरातात्विक स्थल	✓	✓	1 -10
2.	प्रमुख शासक और उनकी उपलब्धियाँ * गुर्जर प्रतिहार राजवंश * चौहान राजवंश * गुहिल राजवंश * राठौड़ राजवंश * कच्छवाहा राजवंश * अन्य राजवंश	✓	✓	11 – 62
3.	प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	✓	✗	63 – 73
4.	1857 की क्रांति	✓	✓	74 – 82
5.	किसान आंदोलन	✓	✓	83 – 93
6.	जनजाति आंदोलन	✓	✓	94 – 99
7.	राजनीतिक जनजागरण	✓	✗	100 – 106
8.	प्रजामंडल आंदोलन	✓	✓	107 – 113
9.	राजस्थान का एकीकरण	✓	✓	114 – 120
10.	प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व	✓	✓	121 - 133
11.	CET 10+2 एवं स्नातक स्तर विगत वर्षों के प्रश्न			134 - 141

❑ ❑ ❑ ❑

प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ एवं पुरातात्विक स्थल

01

कांस्य युगीन सभ्यताएँ

- भारत में पुरातत्व सर्वेक्षण का कार्य प्रारंभ करने का श्रेय **अलेक्जेण्डर कनिंघम** को दिया जाता है। कनिंघम को **'भारतीय पुरातत्व का जनक'** माना जाता है।
- अलेक्जेण्डर कनिंघम ने **1861 ई.** में **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI),** नई दिल्ली का गठन किया था।
- राजस्थान में पुरातात्त्विक सर्वेक्षण का कार्य सर्वप्रथम **1871 ई.** में प्रारंभ करने का श्रेय **ए. सी. एल. कार्लाइल** (Archibald Campbell Carlyle) को जाता है।
- कार्लाइल को **'राजस्थान पुरातत्व एवं सर्वेक्षण का जनक'** माना जाता है।
- वर्ष 1950 ई. में **'राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग'** की स्थापना की गई थी।

कालीबंगा सभ्यता

- उत्तरी राजस्थान में प्राचीन **सरस्वती या दृषद्वती** नदी के बाएं या दक्षिणी तट पर स्थित **हनुमानगढ़** जिला मुख्यालय के **दक्षिण-पश्चिम दिशा** में प्रसिद्ध **कालीबंगा संस्कृति** का विकास हुआ था।
- वर्ष 1947 के विभाजन के बाद कालीबंगा नामक पुरातात्विक स्थल भारत में राजस्थान राज्य के वर्तमान हनुमानगढ़ क्षेत्र में रह गया था।
- कालीबंगा देश का **तीसरा सबसे बड़ा पुरातात्त्विक स्थल** है।
- देश के दो सबसे बड़े पुरातात्त्विक स्थल **राखीगढ़ी (हरियाणा) एवं धौलावीरा (गुजरात)** है।
- प्राचीन सरस्वती नदी का वर्तमान स्वरूप **'घग्घर'** है।
- सर्वप्रथम **ऑरेल स्टेन** ने घग्घर नदी का सर्वेक्षण किया था। यह सर्वेक्षण **''ए सर्वे वर्क ऑफ एननशिएंट साइट अलोंग दी लॉस्ट सरस्वती रिवर''** के नाम से प्रकाशित हुआ था।
- सरस्वती नदी पौराणिक हिंदु ग्रंथों तथा ऋग्वेद में वर्णित मुख्य नदियों में से एक है।
- इस नदी का वेदों में 80 बार उल्लेख हुआ है। सरस्वती नदी का उल्लेख **ऋग्वेद के दसवें मण्डल** में मिलता है।
- घग्घर नदी को **दृषद्वती नदी, सोता नदी, मृत नदी, हकरा व राजस्थान का शोक** भी कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता एक प्रसिद्ध सैंधव स्थल है। यह पंजाबी भाषा का शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ **'काले रंग की चूड़ियाँ'** होता है। यहाँ से उत्खनन में बड़ी संख्या में काले रंग की चूड़ियाँ प्राप्त हुई है। इस कारण इस सभ्यता को **'कालीबंगा'** कहा गया है।

खोज एवं एवं उत्खनन कार्य -

- सर्वप्रथम **इतालवी इण्डोलॉजिस्ट एल. पी. टेस्सीटोरी** ने कालीबंगा सभ्यता के बारे में जानकारी प्रदान की थी।
- कालीबंगा सभ्यता को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय **अमलानंद घोष** को दिया जाता है। **ए.एन.घोष** ने 1952 ई. में कालीबंगा सभ्यता की खोज की थी।
- कालीबंगा सभ्यता का उत्खनन भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण, नई दिल्ली द्वारा **वर्ष 1961 से 1969** ई. के मध्य **बी. बी. लाल तथा बी.के. थापर** के निर्देशन में किया गया।

कालीबंगा सभ्यता के उत्खननकर्ता (1961-69 ई.) -

1. बी.बी. लाल	2. बी.के. थापर	3. अमलानंद घोष
4. एम.डी. खरे	5. के.एम. श्रीवास्तव	6. एस.पी. श्रीवास्तव
7. एस.पी. जैन	8. जे.पी. जोशी	

- कालीबंगा सभ्यता का **उत्खनन पाँच स्तरों में** किया गया था।
- **प्रथम व द्वितीय स्तर** से **प्राक् हड़प्पाकालीन** और **तृतीय, चतुर्थ व पंचम स्तर** से **विकसित हड़प्पाकालीन** साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा के समान **प्राक् हड़प्पाकालीन** साक्ष्य **पाकिस्तान के कोटदीजी** से प्राप्त हुए है।

सभ्यता का समय काल-

- कालीबंगा सभ्यता को **छः हजार वर्ष प्राचीन सभ्यता** माना जाता है। इस सभ्यता का समयकाल **2600 ई.पू. से 1900 ई.पू.** माना जाता है।
- **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार कालीबंगा सभ्यता का समय **2350** ई.पू. से **1750** ई.पू. माना जाता है।

कालीबंगा सभ्यता के उपनाम -

- इस सभ्यता को गरीब सभ्यता (दीन-हीन बस्ती), नगरीय सभ्यता, मातृसत्तात्मक सभ्यता, कांस्ययुगीन सभ्यता, हड़प्पाकालीन सभ्यता, साक्षर सभ्यता व ताम्र-कांस्य युगीन सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- संस्कृत साहित्य में कालीबंगा को **''बहुधान्यदायक क्षेत्र''** कहा गया है।
- प्रसिद्ध इतिहासकार **डॉ. दशरथ शर्मा** ने कालीबंगा सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा है।

कालीबंगा शहर दो भागों या टीलों में विभाजित था-

(1) पश्चिमी भाग (2) पूर्वी भाग

- पश्चिमी टीला ऊँचाई पर स्थित था जहाँ पर संभवत: पुरोहित वर्ग का निवास रहा होगा।
- **पूर्वी भाग अपेक्षाकृत कम ऊँचाई** पर था, जिसे **नगर** कहा जाता था। यहाँ पर सामान्य जनता निवास करती थी।
- **वर्ष 1961** में कालीबंगा अवशेष पर भारत सरकार द्वारा **90 पैसे का डाक टिकट** जारी किया गया।
- राज्य सरकार द्वारा कालीबंगा से प्राप्त पुरा अवशेषों के संरक्षण हेतु वर्ष **1985 ई. में एक संग्रहालय की स्थापना** की गई।

कालीबंगा सभ्यता के उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य -

- अण्डाकार कुएं, सात अग्निवेदिकाएं/हवनकुंड, बलिप्रथा के साक्ष्य, अण्डाकार कब्र, युग्मित शवाधान, छः छेद वाली खोपड़ी (शल्य चिकित्सा का ज्ञान), मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर, मृणपट्टिका पर सींगयुक्त देवता की प्रतिमा का अंकन, सिक्कों पर व्याघ्र व महिला कुमारी देवी का चित्र, कांसे का दर्पण, तांबे की चुड़िया, भूकम्प के साक्ष्य, स्वास्तिक का चिह्न, मापक गिलास, रूई कातने का चक्र व तकली, ऊँट की हड्डियाँ, हाथीदाँत का कंघा, पंख फैलाये बगुले की प्रतिमा, भागते हुए बैल की मृण्मूर्ति, खिलौना बैलगाड़ी, लकड़ी का हल, जूते हुए खेत के साक्ष्य, एक साथ दो फसलें बौने के साक्ष्य, स्पष्ट जल निकास प्रणाली का अभाव, द्वारपाल कक्ष व समकोण पर काटती सड़कें।
- कालीबंगा से दुर्गीकरण के साक्ष्य प्राप्त हुए है।
- यहां से दोहरी रक्षा प्राचीर व प्राचीर युक्त किलेबंदी के अवशेष प्राप्त हुए है।
- कालीबंगा सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, चना, सरसों, कपास व बाजरा की फसलों से परिचित थे।
- इस सभ्यता के लोग माल ढोने के लिए संभवत: बैलगाड़ी का प्रयोग करते थे।

- कालीबंगा सभ्यता के लोगों के घर व चबूतरे धूप में सुखाई गई कच्ची ईंटों से निर्मित होते थे। यहां के घरो के फर्श अलंकृत ईंटों से बने होते थे।
- कालीबंगा के घरो में जल निकास व्यवस्था में नालियों के निर्माण में लकड़ी व पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था। यहां से लकड़ी की नालियों के अवशेष प्राप्त हुए है।
- कालीबंगा के घरो के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर ना खुलकर पीछे की ओर खुलते थे।
- यहां से चाक पर निर्मित हल्के-पतले लाल रंग के मृदभांड प्राप्त हुए है, जिनपर काले व सफेद रंग की धारियाँ बनी हुई होती थी।
- कालीबंगा सभ्यता की लिपि सैंधवकालीन लिपि (बुस्त्रोफेदन / गौमुत्राक्षर / रहस्यमयी) के समान थी, जो दायें से बायें ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को अब तक नहीं पढा जा सका है।
- कालीबंगा सभ्यता से लोहा, घोड़ा, नहर, शैलचित्र, मातृदेवी की मूर्ति, मंदिर व चावल के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए है।

राजस्थान के अन्य हड़प्पाकालीन स्थल

सोथी सभ्यता (बीकानेर)

- **खोज -** एल.पी. टेस्सीटोरी द्वारा
- **उत्खननकर्ता -** अमलानन्द घोष (1950-53)
- **उपनाम -** कालीबंगा प्रथम, हड़प्पा सभ्यता का उद्‌गम स्थल
- **प्रमुख केन्द्र -** 1. पूगल (बीकानेर), 2. साबनिया (बीकानेर)

रातडिया री डेरी (रामगढ़, जैसलमेर)

- **खोजकर्ता -**
  1. दिलीप कुमार सैनी
  2. पार्थ जगानी
  3. प्रो. जीवनसिंह खरकवाल
  4. डॉ. तमेध पंवार
  5. डॉ. रविन्द्र देवडा
  6. प्रदीप कुमार गर्ग
- **उत्खनन से निम्नलिखित हडप्पाकालीन साक्ष्य प्राप्त हुए है-**
  1. लाल लेपयुक्त मृद्‌भाण्ड व कटोरे।
  2. मिट्टी व शंख से बनी चूड़ियाँ।
  3. मोहनजोदडो (पाकिस्तान) व कानमेर (गुजरात) जैसी भट्टी।
  4. चर्ट से बने ब्लेड।
  5. त्रिकोण और इडलीनुमा टेराकोटा कैक।
  6. परफोरेटेड (छिद्रित) जार।
  7. पत्थर के पीसने-घिसने के औजार।

करणपुरा सभ्यता (हनुमानगढ़)

- **उत्खनन -** वी.एन. प्रभाकर के नेतृत्व में ASI द्वारा
- **साक्ष्य -**
  1. तांबे का दर्पण।
  2. गेंडे की हड्डियाँ।
  3. तांबे की अंगूठी, कुल्हाड़ी व चूड़ियाँ।
  4. टैराकोटा की मूर्तियों व खिलौने।
  5. रूई कातने का चक्र व तकली।

बिनजौर सभ्यता (अनूपगढ, श्रीगंगानगर)

- **स्थिति -** सरस्वती / घग्घर नदी के किनारे
- यहाँ से हड़प्पाकालीन साक्ष्य प्राप्त हुए है।

बरोर सभ्यता (श्रीगंगानगर)

- **स्थिति -** घग्घर / सरस्वती नदी के किनारे
- **उत्खनन (2003) से प्राप्त साक्ष्य -**
  1. बटन के आकार की मुहरे।
  2. कच्ची इंटों से निर्मित घर।
  3. शहरी सभ्यता के पुरावशेष व सुनियोजित नगर विन्यास।
  4. उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था।
  5. यहाँ से प्राप्त मृद्धाण्डों में काली मिट्टी मिली है।
- इस सभ्यता से मई, 2006 में मिट्टी के एक पात्र में सेलखड़ी के लगभग 8000 मनके मिले है, उनके साथ शंख की तराशी चूड़ियाँ, अंगूठी, बोरला तथा लाजवर्द मनके मिले है।
- लाजवर्द मनके केवल अफगानिस्तान में मिलते है। संभवत: इस सभ्यता के लोगों ने इन्हें अफगानिस्तान से आयात किया होगा।
- उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के आधार पर यहाँ की सभ्यता को प्राक् एवं विकसित सैंधवकाल की माना जाता है।

ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल

गणेश्वर सभ्यता

- **स्थिति -** कांतली नदी के किनारे, नीम का थाना (सीकर)
- **खोज -** श्री रतन चन्द्र अग्रवाल द्वारा (1972 ई.)
- **सर्वप्रथम उत्खनन -** आर. सी. अग्रवाल द्वारा (1972 ई.)
- **अन्य उत्खननकर्ता -** डॉ. विजय कुमार (1978-79 ई.)
- **समयकाल -** 2800 ई.पू. (लगभग 5 हजार वर्ष पुरानी संस्कृति)
- **उपनाम -** 1. ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी, 2. ताम्रसंचयी सभ्यता, 3. पुरातत्व का पुष्कर
- **साक्ष्य -**
  1. गैरिक मृद्‌भाण्ड।
  2. दोहरी पेचदार सिरे वाली ताम्रपिन।
  3. नालीदार प्याला।
  4. छल्लेदार बर्तन।
  5. मछली पकड़ने के कांटे।
  6. कृपषवर्णी / कपीशवर्णी (काले व नीले रंग के) मृद्‌पात्र।
  7. लगभग 2000 ताम्र उपकरण व आयुध।
  8. ताम्र उपकरणों व पात्रों में 99% प्रतिशत ताँबे की मात्रा।
  9. बस्ती को बाढ़ से बचाने के लिए पत्थर से निर्मित बांध।
  10. पत्थर से निर्मित घर।
- यह एक प्रागैतिहासिक, प्राक् हड़प्पा, हड़प्पाकालीन व ताम्रयुगीन सभ्यता थी।
- इस सभ्यता का विस्तार जोधपुरा (साबी नदी) तक था। इस कारण इसे "गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति" भी कहा जाता है।
- जोधपुरा सभ्यता (कोटपूतली-बहरोड़) से भी गणेश्वर (सीकर) के समान गैरिक मृद्‌भाण्ड प्राप्त हुए है।
- गणेश्वर सभ्यता के लोगों को ईटों का ज्ञान नहीं था।
- गणेश्वर में ताम्र आपूर्ति खेतड़ी (झुंझुनूं) की खानों से होती थी।
- यहाँ से से तांबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ों भेजा जाता था।

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- **स्थिति - आयड़/बेड़च नदी के तट** पर।
- **खोज -** डॉ. रत्नचन्द्र अग्रवाल द्वारा (1954 ई.)।
- **सर्वप्रथम उत्खनन -** अक्षयकीर्ति व्यास द्वारा (1953 ई.)।
- **अन्य उत्खननकर्त्ता -** डॉ. आर.सी. अग्रवाल (1956 ई.) व एच.डी. सांकलिया (1961-62 ई.)।
- **प्राचीन नाम -** ताम्रवती नगरी।
- **स्थानीय नाम -** धूलकोट।
- **अन्य नाम -** बनास संस्कृति, ब्लैक एण्ड रेड वेयर संस्कृति, ग्रामीण सभ्यता, मृतकों के टीलों की सभ्यता, आघाटपुर व पितृसत्तात्मक सभ्यता।

- आहड़ सभ्यता एवं संस्कृति से संबंधित अब तक लगभग 90 से अधिक केंद्रों की खोज की जा चुकी है। इनमें बालाथल, धौलीमगरा, झाड़ोल व भगवानपुरा (उदयपुर), गिलूण्ड व पछमता (राजसमंद), ओझियाना (ब्यावर), रोजड़ी (गुजरात), पिंड, अलोद व केली प्रमुख है।
- दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (उदयपुर) में विकसित आहड़ सभ्यता बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी नदियों के तटों और घाटियों में फैली हुई थी। अत: डॉ. एच.डी. सांकलिया ने इसे **'बनास संस्कृति'** कहा है।
- आहड़ एक **ताम्रयुगीन / ताम्रपाषाणयुगीन सभ्यता** है, जो लगभग **4000 वर्ष** प्राचीन मानी जाती है।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** ने आहड़ सभ्यता का समृद्ध काल 1900 ई.पू. से 1200 ई.पू. माना है।

आहड़ से प्राप्त पुरातात्त्विक अवशेष -

- लहंगा पहने नारी की खण्डित मूर्ति।
- रंगाई-छपाई में प्रयुक्त ठप्पें।
- अनाज पीसने की चक्की।
- दो ताँबे की कुल्हाड़ियाँ
- ताँबे की छह मुद्राएँ तथा तीन मुहरें
- मिट्टी की बनी टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ
- बैल की मृण्मूर्ति (बनासियन बुल)
- दो मुंह वाला चूल्हा, सिलबट्टा व पेन।
- माप-तौल के बांट।
- गेहूं, चावल व ज्वार की फसलों के साक्ष्य।
- शरीर से मेल छुड़ाने के झावे।
- कच्ची ईंटों से निर्मित घर।
- हाथी, घोड़े व अन्य जंगली जानवर एवं मवेशियों के साक्ष्य।
- इस सभ्यता के लोग घरों का गंदा पानी बाहर निकालने के लिए चक्रकूप पद्धति का प्रयोग करते थे।
- आवासीय भवनों की नीव पत्थर से बनी होती थी।
- नीव व दीवारों को मजबूत तथा सौन्दर्ययुक्त बनाने हेतु मिट्टी में क्वार्ट्ज के टुकड़े एवं चिप्स के सम्मिश्रण का प्रयोग करते थे।
- यहाँ एक घर से 6 चूल्हे प्राप्त हुए हैं। जिससे संयुक्त परिवार प्रथा व सामूहिक भोजन व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- आहड़ सभ्यता के उत्खनन से अनेक विदेशी (ईरानी) वस्तुएं प्राप्त हुई है। जैसे- लैपिस लाजुली, धूप दानियां व बिना हत्थे के जलपात्र।
- आहड़ सभ्यता से **लाल व काले** रंग के **(Black and Red Ware Culture)** मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'गौरे' व 'कोठ' कहा जाता है।
- आहड़ से प्राप्त इन कृष्ण-लोहित (लाल व काले रंग) मृदभांडों को उल्टी तपाई विधि से पकाया जाता था। इन मृदभांडों का उपयोग अनाज भरने में किया जाता था।
- आहड़वासी **ताम्रधातु** कर्मी थे। यहां से बड़ी संख्या में ताँबे के औजार व उपकरण मिले है।
- आहड़ अपने ताम्र के प्रचुर भंडार के लिये प्रसिद्ध था। धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख साधन था।
- यहाँ के लोगों का महत्त्वपूर्ण व्यवसाय अयस्क तांबे को गलाना तथा ताम्र वस्तुएँ बनाना था।
- आहड़ से तांबे की 40 खदाने, 6 मुद्राएँ, 2 कुल्हाड़ियाँ, अंगूठी व चूडियां प्राप्त हुई है।
- इस सभ्यता के लोग तांबा, लोहा तथा टिन नामक धातुओं से परिचित थे।
- आहड़ सभ्यता के लोग अपने **मृतकों को आभूषणों के साथ दफनाते** थे।
- मृतक का **सिर उत्तर व पैर दक्षिण** दिशा में रखे जाते थे।
- यहाँ से लोहे के 79 उपकरण प्राप्त हुए है, जो यह दर्शाते हैं कि यह सभ्यता केवल तांबे तक सीमित नहीं थी, बल्कि धीरे-धीरे लोहे का भी प्रयोग करने लगी थी।
- इसी आधार पर इस सभ्यता को दो कालखंडों में विभाजित किया गया है-
- **कालखंड प्रथम**, जो ताम्रयुगीन था और जिसमें केवल तांबे का प्रयोग होता था,
- **कालखंड द्वितीय**, जिसमें लोहे के उपकरणों का भी उपयोग होने लगा था।
- आहड़वासी खेती करना जानते थे। यहां के लोग कपड़ो की रंगाई व छपाई से परिचित थे।
- आहड़ से यूनानी चिह्नांकित मुद्राएँ प्राप्त हुई है। यहां से प्राप्त यूनानी मुहर पर अपोलो (सूर्य) का चित्र बना हुआ है।

बालाथल (प्रागैतिहासिक ताम्रपाषाणिक स्थल)

- **स्थिति -** बेड़च नदी के किनारे (वल्लभनगर, उदयपुर)
- **उत्खनन -** प्रो. वी.एन. मिश्र द्वारा (1993 ई.)

बालाथल से प्राप्त पुरातात्त्विक अवशेष -

- लोहा गलाने की 5 भट्टियाँ।
- लौहयुगीन नलकूप।
- दुर्गीकरण के साक्ष्य।
- 11 कमरों वाला विशाल भवन।
- मिट्टी से निर्मित सांड की आकृतियाँ।
- अपरिष्कृत मृद्भाण्ड।
- हाथ से बुना सूती कपड़े का टुकड़ा।
- तांबे के औजार व सिक्कें।
- योगी मुद्रा (बैठी हुई अवस्था) में शवाधान।
- उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्डों, तांबे के औजारों और मकानों पर सिंधु घाटी सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है।
- इससे स्पष्ट होता है कि बालाथल का सिंधुवासियों अर्थात् हड़प्पा सभ्यता के लोगों के साथ संपर्क था।
- बालाथल एक ताम्रपाषाणिक व लौहयुगीन सभ्यता थी।
- यहाँ से एक 4000 वर्ष पुराना नर कंकाल मिला है। इसे भारत में कुष्ठ रोग का प्राचीनतम प्रमाण माना जाता है।

गिलुण्ड (राजसंमद)

- **स्थिति-** बनास नदी के किनारे (राजसमंद)।
- **सर्वप्रथम उत्खनन -** श्री बी.बी. लाल द्वारा (1957-58 ई.) में।
- **अन्य उत्खननकर्ता -** प्रो. वी.एस.शिन्दे व प्रो. गेगरी पोशल (1998-2003 ई.)।
- **समयकाल -** 1900 ई. पू. से 1700 ई.पू.।
- **उपनाम -** नवपाषाणिक संस्कृति व ताम्रप्रस्तर युगीन सभ्यता।
- **उत्खनित स्थल -** मोडिया मगरी

गिलुण्ड सभ्यता से प्राप्त पुरातात्त्विक अवशेष -

- हाथीदांत की चूड़ियाँ।
- एक मटके में गेहूँ के दाने।
- मिट्टी के खिलौने (हाथी, ऊँट व कुत्ते की आकृति)।

- पत्थर की गोलियाँ।
- पक्की ईटों से निर्मित दीवार।
- दीवारों के मध्य में अनाज भरने की कोठी एवं चूल्हे के अवशेष।
- पाँच प्रकार के मृद्भाण्ड (सादे, काले, भूरे, लाल-काले व पॉलिशदार)।

ओझियाना - बदनौर (ब्यावर)

- **स्थिति -** बदनोर (ब्यावर) के पास खारी नदी के तट पर एक पहाड़ी पर स्थित एक आहड़ सभ्यता का प्रसिद्ध केंद्र।
- **उत्खनन -** बी.आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाठी द्वारा (2000-2001 में)
- यहाँ से तांबे की चूड़िया, अंगूठी व मांदलिया प्राप्त हुआ है।
- यहाँ से **बैल (वृषभ) तथा गाय की मृण्मय मूर्तियाँ** प्राप्त हुई है। जिन पर सफेद रंग से डिजाइन किया गया है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- **स्थिति -** प्राचीन सरस्वती/दृषद्वती या घग्घर नदी के किनारे।
- **उत्खनन कार्य -** डॉ. श्रीमती हन्नारिड के निर्देशन में स्वीडिश दल द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया।
- ***अन्य उत्खननकर्ता -*** होलगर अर्बमेन व के.एरिस्किन।

पुरातात्त्विक साक्ष्य -

- लाल-गुलाबी मृदभाण्ड।
- गुरु-शिष्य की मूर्ति।
- कुषाणकालीन तथा उसके पूर्व के कुल 105 तांबें के सिक्कें।
- गांधार शैली की मूर्तियाँ।
- चावल की खेती के साक्ष्य।
- ईटों से निर्मित घर।
- पंचमार्क (आहत) एवं कुषाण शासक कनिष्ककालीन सिक्कें।
- बच्चों के खेलने की मिट्टी की छोटी पहिएदार गाड़ियाँ।
- घंटाकार मृद्पात्र, टोटींदार घड़े व बर्तनों के ढक्कन।
- अजैकपाद (भगवान शिव का एक रूप) की मूर्ति।
- रंगमहल को कुषाणकालीन सभ्यता के समान माना जाता है।
- लाल रंग के पात्रों पर काले रंग के डिजाइन के कारण इसे रंग महल नाम मिला।
- रंगमहल में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने और उजड़ने के संकेत मिले है।

मलाह (भरतपुर)

- यह स्थल भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- इस स्थल से अधिक संख्या में ताँबे की तलवारें एवं हार्पून प्राप्त हुए हैं।

कुराड़ा (डीडवाना-कुचामन)

- यह ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल है।
- पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा 1934 ई. में यहाँ पर उत्खनन किया गया था।
- यहाँ से एक नालीदार प्याले (ईरान के जैसा) सहित 103 उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- कुराड़ा को 'औजारों की नगरी' भी कहा जाता है।

किराड़ोत (जयपुर)

- इस सभ्यता स्थल से **ताम्रयुगीन 56 चूड़ियाँ** प्राप्त हुई है। इसमें अलग-अलग आकार की 28 चूड़ियों के 2 सेट प्राप्त हुए हैं।

लौह युगीन सभ्यता स्थल

बैराठ सभ्यता (कोटपुतली-बहरोड़)

- बैराठ सभ्यता वर्तमान कोटपूतली-बहरोड़ जिले में बाणगंगा नदी के किनारे स्थित है।
- बैराठ सभ्यता की खोज एवं सर्वप्रथम उत्खनन का कार्य वर्ष 1936-37 में दयाराम साहनी के नेतृत्व में हुआ था।
- दयाराम साहनी ने उत्खनन के बाद 'द आर्कियोलॉजिकल रिमेन्स एण्ड एक्सकेवेशन एट बैराठ' नामक प्रतिवेदन तैयार किया था।
- वर्ष 1962-63 ई. में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित द्वारा यहां पर वृहद् स्तर पर उत्खनन कार्य किया गया था।
- बैराठ सभ्यता को प्राचीन युग की चित्रशाला, विराटनगर व लोहयुगीन सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- 'भीम डूंगरी', 'गणेश डूंगरी', 'महादेव डूंगरी' व 'बीजक पहाड़ी' का संबंध बैराठ सभ्यता से है।
- बैराठ से **महाभारतकाल, महाजनपदकाल, मौर्यकाल, गुप्तकाल,** मुगलकाल तथा **बौद्ध धर्म** एवं **संस्कृति** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- बैराठ, लालसोट, शेरगढ़ तथा नगरी **राजस्थान में बौद्ध धर्म एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्र थे।**
- बैराठ का प्राचीन नाम **'विराटनगर'** था। महाजनपद काल में यह मत्स्य जनपद की राजधानी था।
- यहां से उत्तर गुप्तकालीन शंख लिपि व लौहयुगीन चित्रित धूसर रंग के मृदभांड प्राप्त हुए हैं।
- बैराठ सभ्यता के लोग लौह धातु से परिचित थे। यहाँ उत्खनन से लोहे के तीर तथा भाले प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ से मुगलकालीन टकसाल व हथियारों का कारखाना होने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ मुगल काल में ढाले गये सिक्कों पर 'बैराठ अंकित' मिलता है।
- यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- 7वीं सदी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बैराठ की यात्रा की तथा अपने यात्रा वृतांत सी-यू-की में इसका उल्लेख किया है।
- ह्वेनसांग ने बैराठ को पी-लो-यो-तो-लो कहा तथा यहां के बैल व भेड़े प्रसिद्ध बताई।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार यहां पर 8 बौद्ध मठ थे जिन्हें कालांतर में हूण शासक मिहिरकुल ने तुड़वा दिया था।
- बैराठ बौद्ध धर्म एवं संस्कृति का केंद्र था।
- यहां से गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप, चैत्य तथा विहार के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- यहां से महात्मा बुद्ध की मूर्ति व 6-7 कमरों का एक खंडहरनुमा भवन प्राप्त हुआ है।
- प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् टी.एच. हैण्डले ने नलियासर नामक पुरास्थल की पहचान भी एक बौद्ध कस्बे के रूप में की थी।
- बैराठ, मौर्य साम्राज्य का हिस्सा था। जिसके कई प्रमाण मिले है। जैसे-

1. अशोक द्वारा निर्मित हीनयान संप्रदाय का गोल या वृत्ताकार बौद्ध मंदिर।
2. अशोक स्तम्भ व अशोक कालीन दो शिलालेख-
   (a) भाब्रू शिलालेख (b) लघु शिलालेख

- कैप्टन बर्ट को 1837 ई. में बीजक पहाड़ी से भाब्रू शिलालेख प्राप्त हुआ था। वर्तमान में यह रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है।

- इस शिलालेख में अशोक द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- भाब्रू शिलालेख से बौद्ध धर्म के त्रि-रत्नों (बुद्ध, धम्म व संघ) के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- भाब्रू अभिलेख में मौर्य सम्राट अशोक ने बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन की अनुशंसा की थी।
- इस अभिलेख में बौद्ध धर्म की 7 पुस्तकों का उल्लेख हुआ है।
- ए.सी.एल. कार्लाइल ने 1871 ई. में भीम पहाड़ी से सम्राट अशोक के लघु शिलालेख कि खोज की थी।
- बैराठ में बीजक की पहाड़ी पर एक अशोक कालीन वृत्ताकार मन्दिर के साक्ष्य मिले हैं, दयाराम साहनी ने अपनी रिपोर्ट में इसका उल्लेख किया था।
- बैराठ सभ्यता के लोग वस्त्र बुनाई की तकनीक से परिचित थे।
- बैराठ से सूती कपडे का टुकड़ा प्राप्त हुआ है जिसमें 36 मुद्राएं बंधी हुई प्राप्त हुई है।
- यहां से एक सूती कपड़े के टुकड़े में बंधी हुई 36 मुद्राएं प्राप्त हुई है। इनमें से 8 चांदी के पंचमार्क (आहत) सिक्कें व 28 सिक्कें इंडो-ग्रीक शासकों के थे।
- 28 में से 16 सिक्कें प्रसिद्ध हिंद-यूनानी शासक मिनेण्डर के थे।
- ध्यातव्य रहे कि बालाथल सभ्यता से भी एक सूती कपड़े का टुकड़ा प्राप्त हुआ है।
- यहां से चित्रित शैलाश्रय, भीमताल व कीचक महल के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।
- महाभारत काल में पांडवों ने अपना अज्ञातवास विराटनगर में बिताया था।

- चित्रित धूसर मृदभांड - बैराठ
- काले व लाल रंग के मृदभांड - आहड़
- कपीशवर्णी मृदभांड - गणेश्वर
- लाल-गुलाबी मृदभांड – रंगमहल
- गेरिक मृदभांड – गणेश्वर व जोधपुरा
- लाल मृदभांड जिन पर सफेद व काले रंग की धारिया - कालीबंगा

नगरी सभ्यता (चित्तौड़गढ़)

- **स्थिति -** बेडच नदी के किनारे
- **प्राचीन नाम -** माध्यमिका

नगरी / माध्यमिका के बारे में जानकारी देने वाले स्त्रोत -

- वेदव्यास का महाभारत
- पाणिनी का अष्टाध्यायी
- पतंजलि का महाभाष्य
- बडली शिलालेख (443 ई.पू.)
- **खोज -** ए.सी. एल. कार्लाइल द्वारा (187१३)
- **उत्खनन -** भण्डारकर (1919-20 ई.) तथा सौन्दरराजन द्वारा (1961-62 ई.)

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- गुप्तकालीन शिव मंदिर।
- वैष्णव मंदिर।
- नहर के साक्ष्य।
- शिवि जनपद के सिक्कें।
- चार चक्राकार कुँए।
- लेखयुक्त शिलाएं।
- अलंकरणयुक्त ईटें।
- हाथियों का बाड़ा और प्रकाश स्तंभ।
- यह राजस्थान का प्रथम उत्खनित स्थल माना जाता है।
- यह बौद्ध, जैन तथा वैष्णव धर्मो का केन्द्र था।
- पतंजलि के महाभाष्य के अनुसार यवन आक्रमणकारियों ने इसे नष्ट कर दिया था।

रैढ़ सभ्यता (टोंक)

- **स्थिति -** ढील नदी के किनारे, निवाई तहसील, टोंक
- **उत्खनन -** केदारनाथ (के.एन.) पुरी द्वारा (1938-40ई.)
- **उपनाम -** प्राचीन राजस्थान का टाटा नगर

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- मातृदेवी की एक मृणमयी मूर्ति।
- उष्णीश युक्त स्त्री की मूर्ति।
- पगड़ी पहने स्त्री की मृणमूर्ति।
- 115 घेरेदार कूप व मिट्टी के मकान।
- लौह उपकरण व अनाज के दाने।
- सेलखड़ी की डिबिया व पाषाण के मनके।
- सीसे की एक मुहर जिस पर मालव 'जनपद स' ब्राह्मी लिपि में अंकित है।
- यहाँ से 3075 आहत (पंचमार्क) मुद्राएं मिली है। इनमें मालव, मित्र, अपोलोडोट्स तथा इण्डोससेनियन सिक्कें प्रमुख है।

सुनारी (झुंझुनूँ)

- **स्थिति -** कांतली नदी के किनारे

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- घोड़े व चावल के अवशेष।
- लौहा गलाने की भट्टियाँ (भारत में प्राचीनतम)।
- कुषाणकालीन मृण्मूर्तियाँ तथा चाक पर निर्मित काले रंग के मृद्पात्र।
- लोहे के तीर व शंख की चूड़ियाँ।
- घोड़े से खींचे जाने वाले रथ।
- यह एक वैदिककालीन बस्ती थी। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ कि बस्ती वैदिक आर्यों ने बसाई थी।

जोधपुरा (कोटपुतली-बहरोड़)

- **स्थिति -** साबी नदी के किनारे (कोटपूतली-बहरोड़)
- **उत्खनन -** आर.सी. अग्रवाल व डॉ. विजय कुमार द्वारा (1972-75 ई.)
- **समयकाल -** 2500 ई.पू. से 200 ईस्वी

उपनाम -

1. धरतूल घाट की सभ्यता
2. लौहयुगीन सभ्यता

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- लौहा गलाने की भट्टियाँ।
- लौह उपकरण (कीलें व तीर के अग्रभाग)।
- ताम्र उपकरण।
- कुबड़बैल की आकृतियाँ।
- मिट्टी एवं पत्थर के मनकें।
- स्लेटी रंग के चित्रित मृद्भाण्ड।
- गैरिक रंग के पानी पीने के पात्र, कटोरे तथा तश्तरियाँ।

ईसवाल (उदयपुर)

- **उत्खनन -** राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के पुरातत्व विभाग द्वारा।
- **उपनाम -** प्राचीन औद्योगीक बस्ती।

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- लौहा गलाने की भट्टियाँ।
- ऊँट का दाँत।
- लौह अयस्क व लौहमल।
- 5 स्तर पर खुदाई।
- मिट्टी में प्रयुक्त होने वाले पाइप।
- पत्थर के मकान।

नोह (भरतपुर)

- **स्थिति -** रूपारेल नदी के तट पर
- **उत्खनन -** आर.सी. अग्रवाल द्वारा (1963-64 ई.)

पुरातात्विक साक्ष्य -

- कुषाण शासक हुविस्क एवं वासुदेव के सिक्कें
- शुंगकालीन यक्ष (जाख बाबा) की पाँच मीटर ऊंचाई वाली मूर्ति
- लोहे के कृषि उपकरण
- 16 चक्राकार कूप
- मिट्टी की कच्ची ईटों से निर्मित परकोटा
- मौर्यकालीन पॉलिशयुक्त चुनार के चिकने पत्थर के टुकड़े
- यहाँ से 5 सांस्कृतिक युगों के अवशेष मिले है।
- यह ताम्रयुगीन व लौहयुगीन सभ्यता है।
- यहाँ के निवासी मकान बनाने के लिए पक्की ईटों का प्रयोग करते थे।

नगर (टोंक)

- टोंक जिले में **उणियारा कस्बे** के पास स्थित है। इसे **कार्कोट नगर** भी कहा जाता है।
- महाभारत में उल्लिखित मालवों की राजधानी कार्कोट नगर का समीकरण इससे किया जाता है।
- इसका प्राचीन नाम '**मालव नगर**' था।

उत्खनन कार्य -

- वर्ष 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा।

पुरातात्त्विक साक्ष्य-

- यहाँ से बड़ी संख्या में **मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएँ** प्राप्त हुई है।
- 1871 ई. में कार्लाइल को यहाँ से 6000 मालव सिक्कें प्राप्त हुए थे।
- यहाँ से प्राप्त मृद्भांडों के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
- नगर में उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित **महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति** प्राप्त हुई है।
- यहाँ से एकमुखी शिवलिंग तथा शुंगकालीन कामदेव-रति व इन्द्र-इन्द्रानी की प्रतिमाएं प्राप्त हुई है।
- इसके अतिरिक्त यहाँ से मोदक रूप में गणेश का अंकन, फणधारी नाग का अंकन, कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा प्राप्त हुई है।
- नगर सभ्यता को '**खेड़ा सभ्यता**' के नाम से भी जाना जाता है।

भीनमाल (जालोर)

- **उत्खनन -** श्री आर. सी. अग्रवाल द्वारा (1953-54ई.)
- **प्राचीन नाम -** श्रीमाल (बिजौलिया शिलालेख के अनुसार)
- **उत्खनन में प्राप्त साक्ष्य -** 1. यूनानी दुहत्थी सुराही, 2. रोमन ऐम्फोरा (सुरापात्र) 3. शक क्षत्रपों के सिक्कें
- यहाँ से प्राप्त मृद्पात्रों पर विदेशी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।
- 'शिशुपाल वध' के रचयिता महाकवि माघ का कार्यक्षेत्र यहीं था।
- गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त का जन्म स्थान भी भीनमाल ही था।
- ब्रह्मगुप्त (भारत का न्यूटन) ने 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' व 'खण्डखाद्यक' नामक ग्रंथों की रचना की है।
- चीनी यात्री ह्वेसांग/श्वैनत्सांग/युआनच्वांग 641 ई. में भीनमाल आया था। इसने भीनमाल को प्रतिहारों की राजधानी बताया और इसे 'पी-लो-मो-लो' कहा।

अन्य पुरातात्त्विक स्थल

बागौर सभ्यता

- **भीलवाड़ा में कोठारी नदी** के किनारे स्थित है।
- **उत्खनन कार्य -** यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष 1967-68 में डॉ. विरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस. लेश्निक व डेक्कन कॉलेज पूना तथा राजस्थान पुरातत्त्व विभाग के सहयोग से किया गया।
- राजस्थान में आरंभिक मानव बस्ती बागौर में पाई गई है।
- बागौर में सिक्खों के दसवें गुरू गोविंद सिंह जी 1707 ई. में दक्षिण भारत से लौटते समय रुके थे। उनके ठहरने के स्थान पर गुरूद्वारा **कलगीधर बागौर साहिब** बनाया गया है।
- वी.एन. मिश्र ने बागौर की तुलना मोरहाना पहाड़ (उत्तरप्रदेश) से की है।
- **उत्खनित स्थल –** महासतियों का टीला।
- **उत्खनन के स्तर –** 3 (मध्यपाषाण काल, ताम्रपाषाण काल व लौहकाल)।

अन्य नाम

(1) आदिम संस्कृति का संग्रहालय
(2) प्राचीन सभ्यताओं का पालना
(3) लघुपाषण उपकरणों का घर
(4) मध्य पाषाणकालीन सभ्यता स्थल

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य/पुरावशेष -

(1) भारत में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य।
(2) 14 प्रकार की कृषि के साक्ष्य।
(3) पशुओं के कंकाल व कसाई खाने के साक्ष्य।
(4) एक कंकाल के गले में पत्थर व हड्डियों का हार।
(5) 5 ताम्र उपकरण, 7 लौह उपकरण व एक 10.5 सेमी. छेद वाली तांबे की सूई।
(6) मध्य पाषाणकालीन लघु उपकरण (माइक्रोलिथ)।
(7) पत्थर व ईंटों से निर्मित घर तथा चाक पर निर्मित मृदभाण्ड।

तिलवाड़ा (बालोतरा)

- बाड़मेर जिले में लूणी नदी के किनारे तिलवाड़ा सभ्यता की खोज डॉ. वी.एन. मिश्रा ने की थी।
- वर्तमान में तिलवाड़ा बालोतरा जिले में स्थित है।

उत्खनन कार्य -

- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष 1967-68 में **'राजस्थान राज्य पुरातत्त्व विभाग'** द्वारा डॉ. वी.एन. मिश्र के नेतृत्व में करवाया गया।
- यह एक **ताम्र पाषाणकालीन स्थल** है जहाँ से 500 ई.पू. से 200 ई.पू. तक विकसित सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ से पाषाणकालीन लघु उपकरण प्राप्त हुए है।

नलियासर (जयपुर)

- प्रसिद्ध पुरातत्वविद् टी.एच. हैण्डले ने इस पुरास्थल की पहचान एक बौद्ध कस्बे के रूप में की थी। इसे 'चौहान पूर्व सभ्यता' भी कहा जाता है।
- राजस्थान में बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र बैराठ, लालसोट, शेरगढ़, नगरी तथा नलियासर थे।
- इस लौहयुगीन सभ्यता स्थल के उत्खनन से निम्नलिखित पुरावशेष प्राप्त हुए है-
- 105 कुषाणकालीन मुद्राएं।

- हड्डी के पासे व काँसे के कड़े।
- पूजा पात्र व तलवार।
- अलंकरण युक्त ईंटें व नालियों के गोल पाइप।
- आहत मुद्राऐं तथा इण्डोससेनियन सिक्के।
- कुषाण शासक हुविस्क, इण्डो-ग्रीक, यौधेयगण एवं गुप्तयुगीन चांदी के सिक्कें।
- स्वर्ण निर्मित सिंह सिर व तांबे के पात्र।
- मिट्टी के आभूषण, मनके, शीशें की चूड़ियाँ तथा सिलबट्टे।

लाछूरा (भीलवाड़ा)

- **उत्खनन -** 1998-99 ई. में बी.आर. मीणा के निर्देशन में एस.सी. सरन, कंवर सिंह व बी.आर. सिंह द्वारा

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- ललितासन में नारी की मृणमूर्ति।
- लोहे का चाकू व तांबे की चूड़ियाँ।
- मिट्टी की मुहरें जिन पर ब्राह्मी लिपि के चार अक्षर अंकित है।

बहज गाँव सभ्यता (डीग)

- **उत्खनन -** भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा (2024-25) डॉ. विनय गुप्ता व पवन सारस्वत के निर्देशन में।
- **समयकाल -** 3500 ई.पू. से 1000 ई.पू.

उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य -

- शिव-पार्वती की टेराकोटा मूर्तियाँ।
- 1700 वर्ष पुराना नर कंकाल।
- 15 यज्ञ कुण्ड व कुषाणकालीन सिक्कें।
- ब्राह्मी लिपि व खरोष्ठी लिपि की मुहरें।
- महाभारत और मौर्यकालीन अवशेष।
- नर कंकाल व शंख की चूड़ियाँ ।
- मिट्टी के खंभों से बनी इमारतें।
- परतदार दीवारों के लिए बनाई गई खाई।
- हड्डी से बने औजार व अर्द्धकीमती पत्थर के मनके।
- महाभारतकालीन वस्त्र व बर्तन।
- मौर्यकालीन मातृदेवी का सिर।
- अश्विनीकुमार की मूर्ति।
- यहां से महाभारत काल, महाजनपद काल, मौर्य काल, शुंगकाल व कुषाणकाल के अवशेष प्राप्त हुए है।
- बहज गाँव में एक पुरानी नदी के चैनल की खोज की है। गाँव में 23 मीटर की गहराई पर एक प्राचीन नदी तंत्र (पैलियो चैनल) मिला है। इतिहासकार इसे ऋग्वेद में वर्णित सरस्वती नदी से जोड़कर देख रहे है।

कोटड़ा (झालावाड़)

- इस स्थल का उत्खनन **वर्ष 2003 में दीपक शोध संस्थान** द्वारा किया गया।
- यहाँ से 7वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

कणसवा (कोटा)

- इस स्थल से **मौर्य शासक धवल** का 738 ई. से संबंधित लेख मिला है।

डडीकर (अलवर)

- इस स्थल से पाँच से सात हजार वर्ष पुराने शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।

गरड़दा (बूँदी)

- **छाजा नदी** के किनारे स्थित इस स्थान से **पहली बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग** प्राप्त हुई है।

बांका (भीलवाड़ा)

- यहाँ से **राजस्थान की प्रथम अलंकृत गुफा** मिली है।

गुरारा

- सीकर जिले में स्थित है।
- यहाँ से चाँदी के लगभग 2744 पंचमार्क सिक्के मिले हैं।

क्र.सं.	सभ्यता	जिला	नदी	उत्खननकर्ता
1.	कालीबंगा	हनुमानगढ़	सरस्वती	बी.बी.लाल, बी.के.थापर, जे.पी.जोशी, एम.डी.खरे, के.एम.श्रीवास्तव, एस.पी.श्रीवास्तव व एस.पी.जैन
2.	आहड़	उदयपुर	बेड़च	अक्षयकीर्ति व्यास, आर.सी.अग्रवाल व एच.डी. सांकलिया
3.	गिलूण्ड	राजसमन्द	बनास	बी.बी.लाल, ग्रेगरी पोशल तथा वी.एस.शिंदे
4.	बागोर	भीलवाड़ा	कोठारी	वी.एन.मिश्र व एल.एस.लेश्निक
5.	बालाथल	उदयपुर	बेड़च	वी.एन.मिश्र
6.	गणेश्वर	सीकर	कांतली	आर.सी.अग्रवाल व डॉ. विजय कुमार
7.	रंगमहल	हनुमानगढ़	सरस्वती	श्रीमती हन्नारिड, होलगर अर्बमेन व के.एरिस्किन
8.	ओझियाना	भीलवाड़ा	खारी	बी.आर.मीणा व आलोक त्रिपाठी
9.	नोह	भरतपुर	रूपारेल	आर.सी.अग्रवाल
10.	नगरी	चित्तौड़गढ़	बेड़च	डी.आर. भण्डारकर व सौन्दर राजन
11.	जोधपुरा	जयपुर	साबी	आर.सी.अग्रवाल व डॉ. विजय कुमार
12.	तिलवाड़ा	बालोतरा	लूनी	वी.एन.मिश्र
13.	रैढ़	टोंक	ढील	कैदारनाथ पुरी
14.	बैराठ	जयपुर	बाणगंगा	दयाराम साहनी, एन.एल.बनर्जी व के.एन. दीक्षित
15.	निम्बाहेड़ा	चित्तौड़गढ़	कादमली	वी.एन.मिश्र
16.	मंडपिया/मांड्या	भीलवाड़ा	बनास	वी.एन.मिश्र
17.	सुनारी	झुंझुनूँ	कांतली	राजस्थान पुरातत्त्व विभाग

क्र. स.	संस्कृति काल	स्थल
1.	**पुरापाषाण काल**	डीडवाना (सबसे प्राचीन स्थल), जायल (नागौर), भानगढ़ (अलवर) विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़), दर (भरतपुर), इन्द्रगढ़ (बूंदी), बूढ़ा पुष्कर व होकरा (अजमेर)
2.	**मध्यपाषाण काल**	बागौर व मंडपिया (भीलवाड़ा), सोजत व धनेरी (पाली), तिलवाड़ा (बालोतरा), निम्बाहेड़ा (चित्तौड़), बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़), हरसौरा (अलवर), सोहनपुरा (सीकर) आदि।
3.	**नवपाषाण काल**	आहड़ (उदयपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), गिलूण्ड (राजसमंद),
4.	**ताम्रपाषाण काल**	बागोर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बालोतरा), आहड़ (उदयपुर), बालाथल (उदयपुर)
5.	**ताम्रयुगीन**	गणेश्वर (सीकर), साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ा पुष्कर (अजमेर), बेणेश्वर (डूँगरपुर), नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथबाड़ी (जयपुर), कुराड़ा (परबतसर), एलाना (जालोर), झाड़ोल (उदयपुर), ओझियाना (ब्यावर), कुराड़ा (डीडवाना), मलाह (भरतपुर), कोल माहौली (सवाईमाधोपुर)
6.	**लौहयुगीन**	नोह (भरतपुर), सुनारी (झुंझुनूँ), विराटनगर व जोधपुरा (कोटपूतली-बहरोड़), सांभर (जयपुर), रैढ़, नगर, नैणवा (टोंक), भीनमाल (जालोर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक–84, तरखानवाला (श्रीगंगानगर), ईसवाल (उदयपुर)
7.	**हड़प्पाकालीन स्थल**	कालीबंगा व करणपुरा (हनुमानगढ़), सोंथी (बीकानेर), बिनजौर (श्रीगंगानगर), रातड़िया री डेरी (जैसलमेर)
8.	**वैदिक / आर्य सभ्यता के प्रमुख केंद्र**	अनूपगढ़, तरखान वाला डेरा, चक-64 (श्रीगंगानगर)

राजस्थान के अन्य महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थल

क्र. सं.	पुरातात्त्विक स्थल	जिला
1.	नगरी, निंबाहेड़ा, पिण्ड-पाडलिया व मरमी गांव	चित्तौड़गढ़
2.	पूगल, साबणिया, सोंथी व डाडाथोरा	बीकानेर
3.	एलाना व भीनमाल	जालोर
4.	झाडोल, आहड़, बालाथल, भगवानपुरा व धौलीमगरा	उदयपुर
5.	मलाह, नोह व दर	भरतपुर
6.	चीथवाड़ी, नन्दलालपुरा व किराड़ोत	जयपुर
7.	कोल माहोली	सवाईमाधोपुर
8.	अहेड़ा, बूढ़ा पुष्कर व होकरा	अजमेर
9.	चक-84, चक-64, बरोर, बिनजौर, तरखानवाला डेरा व अनूपगढ़	श्रीगंगानगर
10.	नैनवा व गरदड़ा	बूँदी
11.	कालीबंगा, पीलीबंगा, रंगमहल, करणपुरा व बड़ोपल	हनुमानगढ़
12.	कुण्डा व ओला तथा रातड़िया री डेरी	जैसलमेर
13.	बागौर, मंडपिया, लाछुरा व जहाजपुर	भीलवाड़ा
14.	कोटड़ा व खानपुरा	झालावाड़
15.	खुरड़ी व कुराड़ा	परबतसर (डीडवाना)
16.	आलनीया व दर्रा	कोटा
17.	सोजत व धनेरी	पाली
18.	नीम का थाना व गुरारा	सीकर
19.	भानगढ़ व ढिंगरिया	अलवर
20.	बहज गांव	डीग
21.	जायल	नागौर (पुरा पाषाण कालीन)
22.	चन्द्रावती	सिरोही

अभ्यास प्रश्न

1. **कालीबंगा प्राचीन सभ्यता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:**
(a) यह सभ्यता प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदियों की घाटी में पुष्पित-पल्लवित हुई थी।
(b) यह सभ्यता राजसमंद जिले में स्थित है।
(c) सबसे पहले 1952 में अमलानंद घोष ने इस सभ्यता को खोजा था।
(d) 1961-62 में, बी.बी. लाल और बी.के. थापर ने यहाँ उत्खनन किया था।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें :
(a) केवल (a), (c) और (d)
(b) केवल (a), (b) और (d)
(c) केवल (a), (b) और (c)
(d) केवल (b), (c) और (d) **[a]**

2. **नीचे दो कथन दिए गए हैं एक अभिकथन A (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण R (Reason R) के रूप में।**
अभिकथन-A: कालीबंगा के कब्रगाह में छह (6) छेदों वाली बालक की खोपड़ी मिली है।
कारण-R: छेद/छिद्र, मस्तिष्क ज्वर के उपचार के सूचक हो सकते है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(b) A सही है लेकिन R सही, नहीं है।
(c) A सही नहीं है लेकिन R सही है।
(d) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है। **[d]**

3. **कालीबंगा की अग्निवेदिकाओं के संबंध में कौनसा कथन सही नहीं है?**
(a) अग्निवेदिकाएँ पश्चिमी टीले पर मिली हैं।
(b) वेदिकाएँ मिट्टी की ईंटों से बने ऊँचे चबूतरे प्राप्त हुई हैं।
(c) प्रत्येक अग्निवेदिका में त्रिभुजाकार अग्निकुण्ड है।
(d) अग्निवेदिका के पास बना कुआँ यहाँ धार्मिक अनुष्ठान होने के संकेत देता है। **[c]**

4. **गणेश्वर की खुदाई के संदर्भ में सबसे असत्य कथन का चयन करें–**
(a) गणेश्वर, नीम का थाना में कंतली नदी के स्रोत पर खोजी गई।
(b) गणेश्वर में राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा की गई खुदाई में लगभग 5000 वर्ष पुरानी संस्कृति प्रकाश में आई।
(c) यहाँ हड़प्पा से तांबा प्राप्त किया जाता था।
(d) गणेश्वर तांबे की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण स्थल है। **[c]**

5. **निम्नलिखित कथनों पर विचार करें :**
(a) आहड़ संस्कृति उत्तर-पश्चिमी राजस्थान की ताम्रपाषाण संस्कृति है।
(b) आहड़ संस्कृति को हड़प्पा संस्कृति के ताम्रपाषाण स्थलों से अलग पाया गया है।
(c) आहड़ संस्कृति के मुख्य वितरण का संकेन्द्रण बनास नदी घाटी में प्रतीत होता है।
(d) आहड़ के लोगों की प्रौद्योगिकी मुख्यतया पत्थर आधारित थी।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) केवल (c) और (d) (b) केवल (a) और (d)
(c) केवल (a) और (b) (d) केवल (b) और (c) **[d]**

6. **आहड़ सभ्यता के बारे में सही कथन का चयन कीजिए–**
1. आहड़वासी ताँबा गलाना जानते थे।
2. ये लोग चावल से परिचित नहीं थे।
3. धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।
4. यहाँ से काले–लाल रंग के मद्भाण्ड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
कूट:-
(a) 1, 3 एवं 4 सही है। (b) 1 एवं 2 सही है।
(c) 1, 2 और 3 सही है। (d) 3 एवं 4 सही है। **[a]**

7. **राजस्थान के आहड़ पुरातात्विक स्थलों के विषय में निम्न में से कौनसा कथन असत्य है?**
(a) यहां से चावल और जंगली जानवर एवं मवेशियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
(b) ताम्र उपकरण कुल्हाड़ी, अंगूठी, चूड़ियां इत्यादि यहां पर पाए गए।
(c) आहड़ अपने कांस्य के प्रचुर भण्डार के लिए प्रसिद्ध है।
(d) आहड़ सभ्यता बनास एवं उसकी सहायक नदियों पर स्थित थी। **[c]**

8. **बैराठ के 'बौद्ध मठ' और 'अशोक स्तंभ' के आधार पर राजस्थान के बौद्ध धर्म के प्रमुख स्थान थे–**
(a) बैराठ, लालसोट, शेरगढ़, नगरी
(b) बड़नगर, आसपुरा, भूरी, भैंसलाना
(c) बैराठ, जोधपुरा, गणेश्वर, बालेश्वर
(d) लाटा, विराटनगर, अहिरवाला, नागौर **[a]**

9. **निम्नलिखित कथनों को पढ़िये एवं नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही विकल्प को चुनिए:**
A. बी. बी. लाल के निर्देशन में गिलूण्ड का उत्खनन किया गया था।
B. वी. एन. मिश्र के निर्देशन में बालाथल का उत्खनन किया गया था।
कूट :
(a) केवल A सही है।
(b) केवल B सही है।
(c) A और B दोनों सही हैं।
(d) A और B दोनों गलत हैं। **[a]**

10. **निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:**
(a) बालाथल पुरातत्व स्थल राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित है।
(b) बालाथल पुरातत्व स्थल की खोज वी.एन. मिश्रा ने की थी।
(c) कालीबंगा में खोजे हुए कब्रिस्तान से वहाँ प्रचलित दफन प्रणाली के बारे में जानकारी मिलती है।
(d) कालीबंगा नियोजित शहर नहीं था।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें :
(a) केवल (b) और (c)
(b) केवल (c) और (d)
(c) केवल (a) और (b)
(d) केवल (a) और (c) **[a]**

11. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
a. कालीबंगा हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
b. आहड़वासियों ने अपने मृतकों को आभूषणों और गहनों के साथ दफनाया था।
c. बागोर टोंक ज़िले में स्थित है।
d. ताम्रपाषाण मृद्भाण्ड गिलूण्ड में पाये जाते हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) a, b, c (b) a, b, d
(c) b, c, d (d) a, c, d **[b]**

12. बागोर से सम्बन्धित निम्नलिखित कथनों को पढ़िये एवं सही विकल्प को चुनिये :
A. बागोर एशूलियन उपकरणों का एक समृद्ध स्थल था।
B. बागोर से प्राप्त पाषाण उपकरण मुख्यतः क्वार्ट्ज (स्फटिक) एवं चर्ट (रामसैकाश्म) से बनाये गये थे।
कूट:-
(a) केवल B सही है। (b) A एवं B दोनों सही हैं।
(c) A एवं B दोनों गलत हैं। (d) केवल A सही है। **[a]**

13. बागोर पुरास्थल के संदर्भ में कौनसे कथन सही हैं?
(1) यह कोठारी नदी के तट पर स्थित है।
(2) स्थानीय लोग इसे 'महासती' के नाम से जानते हैं।
(3) इसके उत्खनन कार्य से डॉ. वी.एन. मिश्रा सम्बद्ध रहे।
(a) केवल (1) और (2) सही हैं।
(b) केवल (1) और (3) सही हैं।
(c) केवल (2) और (3) सही हैं।
(d) (1), (2) और (3) सभी सही हैं। **[d]**

14. निम्नलिखित प्रमुख सभ्यताओं को उनके प्रथम प्रमुख उत्खन्न /अन्वेषण के अनुसार आरंभिक से अद्यतन के क्रम में व्यवस्थित करें।
a. बागौर **b. कालीबंगा**
c. गिलूण्ड **d. आहड़**
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) d, b, a, c (b) d, c, b, a
(c) a, b, c, d (d) b, d, c, a **[d]**

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक अभिकथन (Assertion) A के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason) R के रूप में;
अभिकथन A: नोह उत्खनन से प्राप्त सिक्के ने कुषाण सम्राट वासुदेव पर प्रकाश डाला है।
कारण R: सिक्के के आमुख भाग पर यूरोपियन शैली का लिबास पहने सम्राट को अग्नि के समक्ष अर्पण करते दिखाया गया है जबकि प्रतिमुख भाग पर माता पार्वती समझी जाने वाली एक आकृति दर्शाई गई है।
उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(b) A सही है लेकिन R सही नहीं है।
(c) A सही नहीं है लेकिन R सही है।
(d) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है। **[d]**

16. सूची I को सूची II से सुमेलित करें-

सूची I (स्थान)	**सूची II (साक्ष्य)**
a. बेड़च	**I. अशोक का अभिलेख**
b. आहड़	**II. प्रस्तर युग**
c. बैराठ	**III. घग्गर**
d. कालीबंगा	**IV. ताम्र युग**

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) a-I, b-II, c-III, d-IV
(b) a-IV, b-II, c-I, d-III
(c) a-II, b-IV, c-I, d-III
(d) a-IV, b-III, c-I, d-II **[c]**

17. सूची I को सूची II से सुमेलित करें-

सूची I (स्थल)	**सूची II (संबंधित नाथ)**
a. आहड़ सभ्यता	**I. उन्तला (वल्लभनगर)**
b. कालीबंगा	**II. माउंट आबू (सिरोही)**
c. बालाथल	**III. हनुमानगढ़**
d. चंद्रावती	**IV. ताम्रवती नगरी**

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(a) a-I, b-II, c-III, d-IV
(b) a-IV, b-I, c-III, d-II
(c) a-I, b-III, c-IV, d-II
(d) a-IV, b-III, c-I, d-II **[d]**

18. ओजियाना पुरातत्व स्थल की खुदाई के सन्दर्भ में कौनसा कथन सत्य है-
(a) यहां लोहा लगाने के प्रमाण मिले हैं।
(b) पुरातत्व स्थल ओजियाना का उत्खनन कार्य अमलानन्द घोष के निर्देशन में हुआ।
(c) यहां प्रचुर मात्रा में लोहा प्राप्त हुआ है।
(d) तांबे की चूड़ियां और तांबे की शैली अंगूठी और माँदलिया उल्लेखनीय आभूषण प्राप्त हुए हैं। **[d]**

19. निम्नांकित में से कौन–से कथन सत्य है?
1. रंगमहल का उत्खनन वी. एन. मिश्रा एवं राजस्थान राज्य पुरातत्त्व विभाग ने संयुक्त रूप से 1959 ई. में किया था।
2. उत्तरी राजस्थान में रंगमहल प्राक्–हड़प्पा युगीन पुरास्थल है।
3. रंगमहल का उत्खनन स्वडिश के पुरातत्त्वविद हन्नारिड़ ने 1952–53 ई. में किया था।
4. रंगमहल संस्कृति कुषाणकालीन है।
कूट:–
(a) 1 और 4 (b) 3 और 4
(c) 2 और 3 (d) 1 और 2 **[b]**

20. निम्न में से लौह युगीन सभ्यता है-
(a) बेणेश्वर (डूँगरपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), पूंगल (बीकानेर)
(b) भीनमाल (जालौर), प्लाना (जालौर), मलाह (भरतपुर)
(c) नोह (भरतपुर), जोधपुरिया (कोटपूतली), सुनारी (झुँझुनूँ)
(d) तरखानवाला (गंगानगर), बूढ़ा पुष्कर (अजमेर), कुराड़ा (परबरतसर) **[c]**

♦♦♦♦

गुर्जर प्रतिहार राजवंश

- 750-1000 ईस्वी के दौरान, राजस्थान और अधिकांश उत्तरी भारत पर **प्रतिहार वंश** ने शासन किया था।
- आठवीं से दसवीं शताब्दी तक राजस्थान में प्रतिहार राजवंश का वर्चस्व रहा था।
- राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में स्थित गुर्जरत्रा क्षेत्र में प्रतिहार वंश का शासन रहा था।
- प्रतिहार शब्द का शाब्दिक अर्थ 'रक्षक' व 'द्वारपाल' होता है।
- प्रतिहार स्वयं को लक्ष्मण (सौमित्र) के वंशज तथा रघुवंशी क्षत्रिय मानते हैं।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार गुर्जर–प्रतिहारों ने छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- चंदेल वंश के शिलालेख में गुर्जर–प्रतिहार शब्द का उल्लेख मिलता है।
- अरब यात्रियों ने प्रतिहारों को 'जुर्ज' कहा है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इन्हें 'कू-चे-लो' कहा है।
- घटियाला शिलालेख (861 ई.) व बाउक प्रशस्ति (837 ई.) में प्रतिहारों को 'ब्राह्मण' कहा गया है।
- मिहिरभोज के शासनकाल में रचित 'ग्वालियर प्रशस्ति' में प्रतिहारों को इक्ष्वाकु कुल के रघुवंशी क्षत्रिय तथा लक्ष्मण का वंशज कहा गया है।
- बुचकला शिलालेख (815 ई.) व राजौरगढ़ अभिलेख (960 ई.) से भी प्रतिहार वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- नीलकुण्ड, देवली, राधनपुर व करहाड़ अभिलेखों तथा संजन, माने व भड़ौच ताम्रपत्रों में प्रतिहारों को गुर्जर कहा गया है।
- प्रतिहार शब्द प्रथम साहित्यिक उल्लेख बाणभट्ट के ग्रंथ 'बादामी के चालुक्य शासक 'पुलकेशिन–द्वितीय' के 'एहोल अभिलेख (634 ई.)' में प्रतिहार शब्द का हर्षचरित्र' में हुआ है।
- यशस्तिलकचम्पू, कुवलयमाला व स्कंदपुराण नामक ग्रंथों में प्रतिहारों को गुर्जर शब्द से संबोधित किया गया है।
- मुहणोत नैणसी ने गुर्जर–प्रतिहारों की '26 शाखाओं' का वर्णन किया, जिनमें मंडोर, जालोर, राजोरगढ़, कन्नौज, उज्जैन और भड़ौंच के गुर्जर–प्रतिहार बड़े प्रसिद्ध रहे थे।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन 26 शाखाओं में से मण्डौर शाखा सबसे प्राचीनतम और महत्त्वपूर्ण थी।
- मंडोर के प्रतिहार क्षत्रिय माने जाते है।
- हरिश्चन्द्र को गुर्जर–प्रतिहार वंश का संस्थापक व 'आदिपुरुष' माना जाता है।
- बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- प्रतिहार राजवंश ने मंदिर निर्माण की महामारू (गुर्जर-प्रतिहार) शैली को प्रोत्साहन प्रदान किया।

प्रतिहारों की उत्पत्ति से संबंधित सिद्धांत

सिद्धांत/मत	प्रतिपादक/समर्थक
अग्निवंशी	चंद्रबरदाई
सूर्यवंशी	जी.एच.ओझा
रघुवंशी	ग्वालियर प्रशस्ति
ब्राह्मणवंशी	घटियाला शिलालेख
शक या सीथियन	जेम्स टॉड व क्रुक
हूण	डॉ. स्मिथ
कूषाण (यू - ची)	डॉ. कनिंघम
ईरानी	केनेडी
खजर	जैक्सन व भण्डारकर

मंडोर के प्रतिहार

1. हरिश्चन्द्र
- मण्डौर में प्रतिहार वंश के संस्थापक हरिश्चन्द्र को यौगिक क्रिया में निपुण होने के कारण 'रोहिलद्धि' के नाम से भी जाना जाता है।
- हरिश्चन्द्र ने क्षत्रिय रानी भद्रा के साथ विवाह किया था।
- हरिश्चन्द्र व भद्रा के बीच भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल व दद्द (दह) नामक चार पुत्र उत्पन्न हुए थे।
- हरिश्चन्द्र के चारों पुत्रों ने माण्डव्यपुर (मण्डोर) को जीतकर इसके चारों ओर परकोटा बनवाया तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।

2. रज्जिल
- मण्डोर के प्रतिहार वंश की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से शुरू होती है।

3. नरभट्ट
- यह रज्जिल का पुत्र था।
- ह्वेनसांग ने इसे 'पेल्लोपेल्ली' कहा है।

4. नागभट्ट–प्रथम
- यह नरभट्ट का पुत्र व रज्जिल का पौत्र था जो एक प्रतापी शासक था।
- नागभट्ट–प्रथम को नाहड़ के नाम से भी जाना जाता था।
- घटियाला शिलालेख के अनुसार नागभट्ट–प्रथम ने अपनी राजधानी मण्डोर से मेड़ता (मेदांतक) स्थानांतरित की थी।

5. यशोवर्धन
- नागभट्ट के पुत्र तात का पुत्र।
- राजोली ताम्रपत्र में वर्णन।

6. शीलुक
- प्रतिहार शासक शीलुक ने वल्लदेश के शासक देवराज भाटी को हराकर उससे छत्र छीन लिया था।

7. कक्क
- यह व्याकरण, ज्योतिष, तर्क (न्याय) और सर्वभाषाओं के कवित्व में निपुण था।
- यह वत्सराज प्रतिहार का सामंत था।
- कक्क ने मुदागिरी (मुंगेर, बिहार) के युद्ध में गौड़ (बंगाल) शासक धर्मपाल के खिलाफ वत्सराज की तरफ से भाग लिया था।
- कक्क की भटियाणी रानी पद्मिनी से उत्पन पुत्र बाउक तथा दूसरी रानी दुर्लभदेवी से उत्पन पुत्र कक्कुक था।

8. बाउक

- मयूर के आक्रमण को विफल किया, मण्डोर के विष्णु मंदिर में बाउक प्रशस्ति (837 ई.) लगवाई।

9. कक्कुक

- यह प्रतिहार शासक कक्क का पुत्र व बाउक का भाई था।
- इसे 'प्रतिहार वंश का कर्ण' कहा जाता है।
- इसके समय घटियाला शिलालेख (861 ई.) उत्कीर्ण किया गया था।
- घटियाला शिलालेख में मण्डोर के प्रतिहार वंश की प्रारंभिक स्थिति व वंशावली मिलती है।
- कक्कुक ने आभीरों का दमन कर इस जीत के उपलक्ष में रोहिंसकूप व मण्डोर में जय स्तम्भों का निर्माण करवाया था।
- घटियाला के शिलालेखों में कक्कुक को मरु, वल्ल, गुर्जरात्रा, मांड (जैसलमेर), अज्ज (मध्य प्रदेश) व त्रवणी आदि राज्यों में ख्याती फैलाने वाला राजा कहा गया है।
- कुक्कुक ने वट्टनानक (बेड़ा–नाणा) नामक नगर बसाया था।
- मण्डोर के इन्दा प्रतिहारों ने हम्मीर परिहार से परेशान होकर 1395 ई. में अपनी राजकुमारी किशोर कंवर का विवाह मारवाड़ के राव चूंडा के साथ कर दहेज में मण्डोर दे दिया था।
- इस घटना के बाद मण्डोर में प्रतिहार राजवंश का विस्तार समाप्त हो गया था।

जालौर, अवंति (उज्जैन) व कन्नौज के प्रतिहार

नागभट्ट-प्रथम (730–760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम को जालौर में प्रतिहार वंश का प्रवर्तक माना जाता है।
- इससे जालौर, उज्जैन व कन्नौज के रघुवंशी प्रतिहारों की वंशावली प्रारंभ होती है।
- अरब आक्रमणकारियों को पराजित करने के कारण नागभट्ट–प्रथम को ग्वालियर प्रशस्ति में 'नारायण का अवतार' व 'म्लेच्छो का नाशक' कहा गया है।
- नागभट्ट-प्रथम ने बिलोंचो (बलुचिस्तान) तथा अरबों के आक्रमण को विफल किया तथा अनेक शासकों को उनके आधिपत्य से भी मुक्त किया था।
- नागभट्ट-प्रथम ने मेवाड़ के गुहिल शासक बप्पा रावल के साथ मिलकर अरब आक्रमणकारियों के खिलाफ एक सैन्य गठबंधन का निर्माण किया था।
- इसे 'राम का प्रतिहार', 'मेघनाद के युद्ध का अवरोधक', 'इन्द्र के गर्व का नाशक', 'नारायण की मूर्ति का प्रतीक', 'नागावलोक' व 'नाहड़राव' के नाम से भी जाना जाता है।
- नागभट्ट प्रथम ने जालौर तथा उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया था।
- इसने राष्ट्रकुट शासक दंतिदुर्ग के हिरण्यगर्भ यज्ञ में प्रतिहार का कार्य किया था।
- डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार नागभट्ट-प्रथम ने जालौर में सुकड़ी नदी के किनारे कनकाचल/सोनगिरि पहाड़ी पर 'सुवर्णगिरि' दुर्ग का निर्माण करवाया था।

वत्सराज (783–795 ई.)

- उद्योतन सूरि ने अपने ग्रंथ कुवलयमाला में वत्सराज को **'रणहस्तिन'** की उपाधि प्रदान की है।
- वत्सराज को **'गुर्जर-प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक'** माना जाता है।
- वत्सराज ने ओसियाँ (जोधपुर) में भगवान महावीर स्वामी को समर्पित जैन मंदिर का निर्माण करवाया था।
- इसने कन्नौज के शासक इंद्रायुध व बंगाल के पाल शासक धर्मपाल को हराया था परंतु यह राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हो गया था।
- प्रतिहार एवं पाल शासकों पर अपनी विजय की खुशी में ध्रुव ने गंगा व यमुना के चिह्नों (एम्बलम) को 'राष्ट्रकूट कुलचिह्न' में सम्मिलित किया था।
- इसके शासनकाल में जिनसेन सूरी ने हरिवंश पुराण व उद्योतन सूरि ने कुवलयमाला नामक ग्रंथो की रचना की थी।
- कुवलयमाला नामक ग्रन्थ में 18 भाषाओ का उल्लेख हुआ है। इसमें मरूभाषा (मारवाड़ी) का उल्लेख हुआ है।

नागभट्ट-द्वितीय (795–833 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय का संबंध प्रतिहार राजवंश से था।
- नागभट्ट–द्वितीय के पिता वत्सराज तथा माता 'सुंदर देवी' थी।
- इसे दूसरा नागावलोक तथा दूसरा नाहड़राव भी कहा जाता है।
- इसके दरबार को "नागावलोक का दरबार" कहा जाता था।
- नागभट्ट-द्वितीय ने कन्नौज के चक्रायुध को पराजित किया था। बुचकला अभिलेख के अनुसार इस जीत के बाद नागभट्ट ने 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि धारण की थी।
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर अधिकार को लेकर वत्सराज के समय जो त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारम्भ हुआ वह नागभट्ट-द्वितीय के समय समाप्त हुआ।
- नागभट्ट-द्वितीय त्रिपक्षीय संघर्ष में विजेता रहा था।
- जी.एच.ओझा के अनुसार इसने पुष्कर झील के घाटों का निर्माण करवाया था।
- इसने झालरापाटन (झालावाड़) के सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया जिसे 'पद्मनाभ मंदिर' व 'सात सहेलियों के मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है।
- जेम्स टॉड ने इसे 'चारभुजा मंदिर' कहा है।
- चंद्रप्रभ सूरि के ग्रंथ 'प्रभावक चरित्र' के अनुसार नागभट्ट-द्वितीय ने 833 ई. में गंगा नदी में जल समाधि ली थी।
- नागभट्ट-द्वितीय ने अपने पराक्रम से गुर्जरों की प्रतिष्ठा को पुन: स्थापित किया था।
- मुसलमानों के विरुद्ध नागभट्ट–द्वितीय के संघर्ष का प्रमाण 'खुम्माण रासो' नामक ग्रन्थ से मिलता है।

मिहिरभोज (836–885 ई.)

- ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार मिहिरभोज ने 'आदिवराह' तथा दौलतपुर अभिलेख के अनुसार 'प्रभास' की उपाधि धारण की थी।
- मिहिरभोज द्वारा चाँदी व ताँबे के द्रम्म नामक सिक्कें प्रारम्भ किए गए जिन पर श्रीमदादिवराह लिखा होता था।
- मिहिरभोज का वास्तविक नाम 'भोज प्रथम' था। इसे प्रतिहार वंश का सबसे शक्तिशाली शासक माना जाता है।
- इसके पिता रामभद्र, माता अप्पादेवी व रानी चंद्रभट्टारिका थी।
- यह अपने पिता रामभद्र की हत्या करके शासक बना इस कारण इसे 'प्रतिहार वंश का पितृहंता शासक' कहा जाता है।
- मिहिरभोज के शासन काल में बालादित्य द्वारा संस्कृत भाषा में ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई थी।
- कश्मीरी कवि कल्हण के ग्रंथ 'राजतरंगिणी' से मिहिरभोज के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- स्कन्ध पुराण के अनुसार मिहिरभोज ने तीर्थ यात्रा करने के लिए अपने पुत्र महेन्द्रपाल को सिंहासन सौंपकर राजपाट त्याग दिया था।
- 851 ई. में अरबी यात्री 'सुलेमान' ने मिहिरभोज के शासन काल में भारत की यात्रा की थी।

- सुलेमान ने मिहिरभोज को इस्लाम का शत्रु व बरूआ कहा तथा इसकी सैन्य शक्ति एवं समृद्धि की प्रशंसा की है।
- सुलेमान के अनुसार मिहिरभोज की अश्व सेना अत्यधिक शक्तिशाली थी तथा इसका राज्य अपराधों से मुक्त था।
- गौड़ प्रदेश (बंगाल) का शासक देवपाल मिहिरभोज (भोज प्रथम) का समकालीन शासक था।
- मिहिरभोज ने बंगाल के पाल शासक नारायण पाल व राष्ट्रकूट शासक कृष्णा तृतीय को पराजित किया था।
- मिहिरभोज द्वारा रचित ग्रन्थ **शृंगार प्रकाश, शृंगार मंजरी, कृत्यकल्पतरू, विद्याविनोद, आयुर्वेद सर्वस्व, सरस्वती कण्ठाभरण, कूर्मशतक, शब्दानुशासन, भोजचंपू, राजमार्तण्ड, प्राकृत व्याकरण, योगसूत्र वृति, युक्ति कल्पतरु, सिद्धांत संग्रह व राजमृडाड** हैं।

महेंद्रपाल-प्रथम (885–910 ई.)

- माता: चन्द्रा भट्टारिका देवी
- गुरु व दरबारी कवि: **राजशेखर**
- उपाधियाँ: **'सकल कला निलय' 'निर्भयराज', 'निर्भय नरेन्द्र', 'निर्भय नरेश', 'रघुकुल तिलक', 'रघुग्रामणी' व 'महाराष्ट्र चूड़ामणी'**
- **राज्य विस्तार:** काठियावाड़ तक
- **दरबारी - राजशेखर** की रचनाएँ: **कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, विद्धशालभंजिका, प्रबंधकोष, बालभारत, बालरामायण, हरविलास, भुवनकोष**
- बी.एन.पाठक ने अपने ग्रंथ **'उत्तर भारत का राजनैतिक इतिहास'** में महेन्द्रपाल प्रथम को 'हिंदू भारत का अंतिम महान् **हिंदू सम्राट** कहा है।'

महिपाल-प्रथम (914–943 ई.)

- राजशेखर द्वारा दी उपाधियाँ: आर्यावर्त का महाराजाधिराज, रघुवंश-मुकुटमणि
- राजशेखर के ग्रन्थ **'प्रचंडपाण्डव'** में **महिपाल की विजयों** का वर्णन मिलता है।
- अरब यात्री **अलमसूदी(915 ई.)** इसके काल में आया था।
- अरब यात्री **'अल मसूदी'** के अनुसार इसने उत्तर–पश्चिम में पंजाब के 'कुलूतों' और 'रनठों' को पराजित किया था।
- अलमसूदी ने महिपाल को बौरा व प्रतिहार राज्य को अल गुर्जर कहा है।

राज्यपाल (990–1019 ई.)

- **विजयपाल** का उत्तराधिकारी **राज्यपाल** हुआ था।
- इनके समय कन्नौज भारत का एक सुन्दर व समृद्ध शहर था, जहाँ पर 10,000 सुंदर मन्दिर थे।
- राज्यपाल ने कन्नौज की रक्षा हेतु कन्नौज के चारों ओर 7 किले बनवाए थे।
- जब 1018 ई. में गजनी के सुल्तान महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया, तब राज्यपाल भागकर जंगलों में चला गया था, इस कारण बुंदेलखंड के शासक **'विद्याधर चंदेल'** ने राज्यपाल को कायर कहना प्रारंभ कर दिया था।
- इनके समय प्रतिहार वंश का शासन पुन: राजस्थान तक सिमट गया था।
- **विद्याधर चंदेल** ने राज्यपाल पर आक्रमण किया। इस दौरान **राज्यपाल वीरगति** को प्राप्त हुआ।

यशपाल (1027–1036 ई.)

- यह गुर्जर–प्रतिहार वंश का **अंतिम शासक** था।
- **कड़ा शिलालेख** में यशपाल व उसके द्वारा किए गए दान का उल्लेख मिलता है।
- 1093 ई. चंद्रदेव गहड़वाल ने इसे हराकर कन्नौज पर अधिकार कर लिया था।

अभ्यास प्रश्न

1. मण्डोर शाखा के निम्न प्रतिहार शासकों का सही कालानुक्रम है–

1. नागभट्ट –1 **2. रज्जिल**
3. बाउक **4. टाटा**

(a) 1, 3, 2, 4 (b) 3, 4, 1, 2
(c) 1, 2, 4, 3 (d) 2, 1, 4, 3 **[d]**

2. मण्डोर के प्रतिहारों के सम्बन्ध में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है?

(a) हरिश्चन्द्र "रोहिलद्धि" के नाम से जाने जाते थे।
(b) रज्जिल से मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली प्रारम्भ होती है।
(c) नागभट्ट प्रथम मण्डोर से मेड़ता राजधानी ले गया था।
(d) भोगभट्ट ने वल्लदेश के शासक देवराज भाटी को परास्त किया था। **[d]**

3. निम्न में से किन शिलालेख में प्रतिहारों को गुर्जर के नाम से सम्बोधित किया गया है?

i. नीलकुण्ड ii. राघनपुर iii. करहाड़ iv. देवली
सही कूट का चयन कीजिए:

(a) i, iii, iv
(b) ii, iii, iv
(c) ii, iv
(d) i, ii, iii, iv **[d]**

4. राजोरगढ़ में मथानदेव द्वारा निर्मित प्रसिद्ध मंदिर निम्न में से किस देवी/देवता को समर्पित था?

(a) शिव
(b) विष्णु
(c) सूर्य
(d) महिषासुर मर्दिनी **[a]**

5. गुर्जर प्रतिहार राजवंश की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?

(a) नागभट्ट-I (b) मिहिरभोज
(c) कृष्ण-I (d) गोपाल **[a]**

6. मण्डोर के गुर्जर प्रतिहार वंश के विषय में निम्न कथनों पर विचार कीजिए एवं नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए -

(अ) घटियाला का शिलालेख मण्डोर के गुर्जर प्रतिहार वंश की जानकारी का प्रमुख स्रोत है।
(ब) यह शिलालेख प्रसिद्ध प्रतिहार शासक कक्कुक ने उत्कीर्ण करवाया था।

(a) (अ) एवं (ब) दोनों सही नहीं हैं।
(b) केवल (अ) सही है।
(c) केवल (ब) सही है।
(d) (अ) एवं (ब) दोनों सही हैं। **[d]**

7. मिहिरभोज के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए:
कथन:
1. ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार मिहिरभोज ने 'आदिवराह' की उपाधि धारण की थी और उसने चाँदी व ताँबे के 'द्रम्म' नामक सिक्के चलाए।
2. मिहिरभोज को प्रतिहार वंश का 'पितृहंता' शासक कहा जाता है क्योंकि उसने अपने पिता रामभद्र की हत्या कर सत्ता प्राप्त की थी।
3. मिहिरभोज के शासनकाल की जानकारी कश्मीरी कवि कल्हण की रचना 'राजतरंगिणी' और बालादित्य द्वारा रचित 'ग्वालियर प्रशस्ति' से मिलती है।
विकल्प:
(a) केवल 1 और 2 सही हैं।
(b) केवल 2 और 3 सही हैं।
(c) केवल 1 और 3 सही हैं।
(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं। **[d]**

8. गुर्जर प्रतिहारों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(a) बाऊक अभिलेख (मंडोर का शिलालेख) के अनुसार उनका अधिवासन मारवाड़ में 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था।
(b) पम्पा द्वारा रचित विक्रमार्जुन विजय में प्रतिहार महिपाल को 'गुर्जर राज' कहा गया है।
(c) डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने प्रतिहारों को जाति न मानकर एक पद से संबंधित माना है।
(d) ग्वालियर से मिली प्रशस्ति में लिखा है कि उनके वंश में पौलस्त्य (रावण) को मारने वाले राम हुए। **[d]**

9. 'महामारू शैली/गुर्जर-प्रतिहार शैली' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह शैली 8वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत में विकसित हुई थी।
2. इस शैली में बने अधिकांश मंदिर 'सूर्य' या 'विष्णु' को समर्पित हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2 **[b]**

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (Assertion-A) और दूसरे को कारण (Reason-R) कहा गया है:
अभिकथन (A): नीलकुण्ड, देवली, राधनपुर और करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को 'गुर्जर प्रतिहार' कहा गया है।
कारण (R): इन क्षेत्रों में निवास करने के कारण अरब यात्रियों ने भी इन्हें 'अल गुर्जर' नाम से पुकारा।
उपरोक्त कथनों के प्रकाश में, निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A)सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है। **[b]**

11. गुर्जर प्रतिहारों के विषय में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(a) स्मिथ ह्वेनसांग के वर्णन के आधार पर प्रतिहारों का मूल स्थान भीनमाल को मानते हैं।
(b) कुछ विद्वान प्रतिहारों का मूल स्थान 'उज्जैन' को भी मानते हैं।
(c) गुर्जर प्रतिहार मंडोर में स्थित 'दुर्गा माता' को अपनी कुलदेवी के रूप में पूजा करते थे।
(d) घटियाला शिलालेख के अनुसार, हरिशचन्द्र नाम का एक ब्राह्मण विद्वान छठी शताब्दी के द्वितीय चरण में था। **[c]**

♦ ♦ ♦ ♦

चौहान राजवंश

- **चौहानों का मूल स्थान -** सपादलक्ष (सांभर झील के आस-पास का क्षेत्र)
- **प्रारंभिक राजधानी –** अहिच्छत्रपुर (नागौर)
- **चौहानों के कुल देवता –** हर्षनाथ (सीकर)
- **चौहानों की कुल देवी –** शाकंभरी माता (जयपुर)
- **जालौर व नाडोल के चौहानों की कुल देवी –** आशापुरा माता
- **सीकर के चौहानों की कुल देवी –** जीण माता (रैवासा)
- चौहानों की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न सिद्धांत निम्नलिखित है-

क्र.	सिद्धांत/मत	प्रवर्तक/समर्थक
1.	अग्निवंशी	पृथ्वीराज रासो, मुहणोत नेणसी व सूर्यमल्ल मीसण
2.	सूर्यवंशी	हम्मीर महाकाव्य, पृथ्वीराज विजय, सुर्जन चरित्र, हम्मीर रासो, चौहान प्रशस्ति, बेदला शिलालेख व जी.एच.ओझा
3.	चंद्रवंशी	हांसी अभिलेख (हरियाणा) व अचलेश्वर मंदिर का अभिलेख (सिरोही)
4.	इंद्रवंशी	रायपाल का सेवाड़ी (पाली) अभिलेख
5.	ब्राह्मणवंशी	बिजोलिया शिलालेख (भीलवाड़ा), चंद्रावती शिलालेख (सिरोही), कायम खां रासो (न्यामत खां), दशरथ शर्मा, डी.आर. भण्डारकर व गोपीनाथ शर्मा
6.	विदेशी	जेम्स टॉड, विलियम क्रूक व डॉ. स्मिथ

- राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रो में चौहान वंश की निम्नलिखित शाखाओ का शासन था –

राजस्थान के चौहान

क्र.स.	क्षेत्र	वंश
1.	अजमेर	सपादलक्ष के चौहान
2.	जालौर	सोनगरा चौहान
3.	सिरोही	देवड़ा चौहान
4.	बूंदी	हाड़ा चौहान
5.	कोटा	हाड़ा चौहान

शाकम्भरी के चौहान

वासुदेव चौहान

- इसे चौहान वंश का संस्थापक/आदिपुरुष/मूलपुरुष माना जाता है।
- बिजौलिया शिलालेख (**1170** ई.), राजशेखर के प्रबंधकोष, चंद्रशेखर के **'सुर्जन चरित्र'** व डॉ. दशरथ शर्मा के ग्रंथ **'द अर्ली चौहान डायनेस्टी'** के अनुसार शाकम्भरी के चौहान वंश का आदिपुरुष **वासुदेव** था जिसने **551** ई. के आस–पास सपादलक्ष में चौहान वंश की स्थापना की।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार वासुदेव चौहान ने **सांभर झील का निर्माण** करवाया था।
- वासुदेव ने सर्वप्रथम **अहिच्छत्रपुर (नागौर)** को अपनी **राजधानी** बनाया

विग्रहराज द्वितीय

- 973 ई. के हर्षनाथ अभिलेख से विग्रहराज द्वितीय के शासन काल तथा विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- हर्षनाथ लेख के अनुसार यह प्रारंभिक चौहानों का सबसे प्रतापी शासक था।
- विग्रहराज-द्वितीय ने चालुक्य शासक मूलराज – प्रथम को पराजित किया तथा भड़ौंच में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता के मंदिर का निर्माण करवाया था।

गोविंद III-

- फरिश्ता के अनुसार गजनी के राजा को मारवाड़ पार करने नहीं दिया।

  उपाधि – वैरिघट्ट (शत्रुसंहारक) पृथ्वीराज विजय के अनुसार

अजयराज (1105–1133 ई.):

- यह **पृथ्वीराज–प्रथम** का पुत्र था।
- अजयराज के शासन काल को चौहानों के साम्राज्य निर्माण का काल माना जाता है।
- अजयराज स्वयं शैव मतावलंबी होने के साथ धर्म-सहिष्णु शासक था इसने अजमेर में जैन मंदिर बनाने की अनुज्ञा दी तथा पार्श्वनाथ मंदिर के लिए सुवर्ण-कलश (स्वर्ण कलश) प्रदान किया।
- अजयराज ने जैन धर्म के दिगम्बर और श्वेतांबर सम्प्रदाय की शास्त्रार्थ अध्यक्षता कर शास्त्रों का जानकार होने का प्रमाण दिया है।
- अजयराज ने राज्य का शासन अपने पुत्र अर्णोराज को सौंपकर शेष जीवन पुष्करारण्य (पुष्कर) में व्यतीत किया।
- इसने अजमेर में टकसाल की स्थापना कर **'अजयप्रिय द्रम्म'** नामक चाँदी व ताँबे के सिक्के चलाए थे।
- अजयराज की कुछ मुद्राओं पर इसकी रानी **सोमलवती (सोमलेखा)** का नाम भी अंकित मिलता है।
- अजयराज को जयानक द्वारा अपने **'पृथ्वीराज विजय'** ग्रंथ में **पृथ्वी को चाँदी की मुद्राओं से भर देने का श्रेय** दिया गया है।
- अजयराज ने 1113 ई. में अजमेर नामक नवीन शहर की स्थापना कर यहां स्थित बीठली पहाड़ी पर एक दुर्ग का निर्माण करवाया जिसे तारागढ़ तथा गढ़ बीठली के नाम से भी जाना जाता है।
- पृथ्वीराज विजय के अनुसार इसने गजनी के शासक **'गर्जन मातंग'** (सालार हुसैन) को पराजित किया तथा **'गर्जन मातंग'** की उपाधि धारण की।

अर्णोराज (आनाजी) (1133–1155 ई.) –

- इन्होंने **'महाराजाधिराज', 'परमभट्टारक', 'परमेश्वर'** की उपाधि धारण की।
- अर्णोराज ने अपने राजकाल के प्रारंभ में एक गजनवी आक्रमण को खदेड़ दिया था।
- अर्णोराज ने मालवा के शासक नरवर्मन तथा गुजरात के चालुक्य शासक जयसिहं सिद्धराज को परास्त किया परंतु यह गुजरात के चालुक्य शासक कुमार पाल से हार गया।
- कुमार पाल व अर्णोराज के मध्य हुए युद्ध का वर्णन हेमचंद्र कृत ग्रंथ द्वयाश्रय महाकाव्य तथा मेरुतुंग कृत प्रबंध चिन्तामणि में प्राप्त होता है।
- अर्णोराज ने जयसिंह सिद्धराज की पुत्री कांचन देवी के साथ विवाह किया तथा अपनी राजकुमारी जाल्हण देवी का विवाह कुमार पाल चालुक्य के साथ किया।
- अर्णोराज ने तुर्कों के रक्त से दूषित युद्ध स्थल को पवित्र करने के लिए अजमेर में **आनासागर झील** का निर्माण करवाया था।

- अर्णोराज **शैव धर्मावलंबी होने के साथ-साथ धर्म-सहिष्णु शासक था।**
- इसने अजमेर में खतरगच्छ (जैन धर्म का एक पंथ) के अनुयायियों को भूमिदान दिया।
- देवबोध और धर्मघोष अर्णोराज के समय के प्रकाण्ड विद्वान थे।
- इसने **पुष्कर में वराह मंदिर (भगवान विष्णु)** का निर्माण करवाया था।
- अर्णोराज ने मालवा के परमार शासक नरवर्मा को पराजित कर ऊपरमाल क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- अर्णोराज की हत्या 1155 ई. में इसके पुत्र जगदेव ने की थी। अत: जगदेव को चौहान वंश का पितृहंता शासक कहा जाता है।
- पितृ-हंता जग्गदेव के अल्पकालीन शासन (1155-58 ई.) के पश्चात् विग्रहराज चतुर्थ (1158-63 ई.) अजमेर का शासक बना।

विग्रहराज चतुर्थ / बीसलदेव (1158–1163 ई.)

- विग्रहराज चतुर्थ को बीसलदेव के नाम से भी जाना जाता है।
- जयानक भट्ट ने अपने ग्रंथ पृथ्वीराज विजय में विग्रहराज को कविबंधु की उपाधि प्रदान की है।
- बीसलदेव ने संस्कृत भाषा में **'हरिकेलि'** नामक नाटक की रचना की तथा इसकी पंक्तियां **सरस्वती कंठाभरण** नामक संस्कृत पाठशाला की दीवारों पर उत्कीर्ण करवाई।
- यह नाटक भारवि के किरातार्जुनीयम पर आधारित है।
- प्रसिद्ध यूरोपीय विद्वान **किलहोर्न** ने विग्रहराज की तुलना कालिदास तथा भवभूति से की है।
- प्रसिद्ध इतिहासकार **डॉ. दशरथ शर्मा** ने विग्रहराज चतुर्थ के शासनकाल को **'सपादलक्ष (अजमेर) के चौहानों का स्वर्णकाल'** माना है।
- इसने बाहरवीं शताब्दी में बीसलपुर (टोंक) की स्थापना की तथा यहां पर एक जलाशय व गौकर्णेश्वर शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- विग्रहराज के दरबारी विद्वान सोमदेव ने **'ललित विग्रहराज'** नामक ग्रंथ की रचना की जिसमें इंद्रपुरी की राजकुमारी देसलदेवी तथा विग्रहराज के प्रेम-प्रसंग का उल्लेख मिलता है।
- विग्रहराज ने सोमदेव के इस ग्रंथ की पंक्तियां भी संस्कृत पाठशाला की दीवारों पर उत्कीर्ण करवाई थी।
- नरपति नाल्ह द्वारा गौड़वाड़ी भाषा में रचित **'बीसलदेव रासो'** नामक प्रेम काव्य में बीसलदेव तथा रानी राजमति की प्रेम कहानी का वर्णन मिलता है।
- यह शैव धर्म का अनुयायी था तथा इसने धर्मघोष सूरि के कहने पर एकादशी के दिन पशुवध पर प्रतिबंध लगा दिया।
- विग्रहराज ने **'जवालिपुर'** का नाम बदलकर **'ज्वालापुर'** कर दिया था।
- बिजोलिया शिलालेख (1170 ई.) के अनुसार विग्रहराज ने तोमरों को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार किया।
- विग्रहराज चतुर्थ दिल्ली पर अधिकार करने वाला प्रथम चौहान शासक था।
- शिवालिक अभिलेख व ललित विग्रहराज के अनुसार विग्रहराज ने गजनी के अमीर खुसरो शाह को परास्त किया था।
- विग्रहराज चतुर्थ ने गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल को पराजित कर उससे जालौर, पाली, नाडौल व चित्तौड़ छीन लिये।
- इसने पंजाब में हिसार और अन्य प्रदेश को मुसलमानों से जीतकर अपने अधिकार में किया।
- विग्रहराज ने अपने राज्य की सीमा शिवालिक पहाड़ी सहारनपुर (उत्तरप्रदेश) तक विस्तारित कर दी थी।
- विग्रहराज ने दिल्ली में शिवालिक स्तम्भ अभिलेख लगवाया जो मौर्य सम्राट अशोक के दिल्ली-टोपरा अभिलेख (हरियाणा) के ठीक नीचे लिखा हुआ है।
- बीसलदेव ने अशोक के स्तम्भ पर 9 अप्रैल, 1163 ई. में अपनी प्रशस्ति (दिल्ली-शिवालिक अभिलेख) उत्कीर्ण करवाई थी।
- दिल्ली शिवालिक स्तम्भ में विग्रहराज यह घोषणा करता है कि 'मैंने आर्यावर्त से म्लेच्छों का दमन कर दिया है तथा अपने उत्तराधिकारियों को यह आदेश देता हूं कि वें इन्हें अटक तक सीमित रखे।'

अढाई दिन का झोंपड़ा

- विग्रहराज चतुर्थ ने अजमेर में सरस्वती कण्ठाभरण नामक संस्कृत पाठशाला/महाविद्यालय का निर्माण करवाया जिसे शाहबुद्दीन मुहम्मद गौरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक (लाखबक्श) ने तुड़वाकर एक मस्जिद में बदल दिया।
- वर्तमान में इसे 'अढाई दिन का झोपड़ा' कहा जाता है। यहां पर पंजाब शाह पीर का अढाई दिन का उर्स लगता है।
- अबु बकर ने अढाई दिन की इस मस्जिद का डिजाइन तैयार किया था।
- कर्नल जेम्स टॉड ने अढाई दिन के झोपड़े के लिए कहा है कि "मैंने राजस्थान में इतनी प्राचीन व सुरक्षित इमारत नहीं देखी"।
- यह राजस्थान की पहली मस्जिद हैं, इसे 16 खंभों का महल भी कहते हैं।

सोमेश्वर चौहान

- अर्णोराज व कांचन देवी का पुत्र सोमेश्वर चौहान, पृथ्वीराज द्वितीय की नि:संतान मृत्यु होने के बाद शाकंभरी का शासक बना।
- सोमेश्वर चौहान शासक बनने से पूर्व गुजरात के जयसोम व कुमारपाल का दरबारी था।
- इसने चेदि नरेश अचलराज कलचूरि की पुत्री कर्पूरी देवी के साथ विवाह किया था। इससे पृथ्वीराज तृतीय व हरिराज नामक पुत्रों का जन्म हुआ।
- इसने अजमेर में वैद्यनाथ मन्दिर (भगवान शिव) का निर्माण करवाया तथा यहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश की मूर्तियाँ लगवाई।
- इसके शासनकाल में गुणभद्र द्वारा संस्कृत भाषा में बिजौलिया शिलालेख (1170 ई.) रचना की गई।
- बिजौलिया शिलालेख में सोमेश्वर को प्रताप लंकेश्वर की उपाधि प्रदान की गई है।
- इसने बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर को 'रेवाणा' नामक गांव प्रदान किया था।
- सोमेश्वर ने अपने पिता अर्णोराज तथा स्वयं की मूर्ति बनाकर नवीन मूर्तिकला को जन्म दिया।
- सोमेश्वर ने कोंकण के मल्लिकार्जुन को परास्त किया था।
- जयानक द्वारा संस्कृत भाषा में रचित पृथ्वीराज विजय नामक ग्रंथ से सोमेश्वर चौहान के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- चालुक्यवंशी शासक भीम द्वितीय ने सोमेश्वर की हत्या कर दी।

पृथ्वीराज-तृतीय / पृथ्वीराज चौहान (1177–1192 ई.)

- पृथ्वीराज–तृतीय का जन्म 1166 ई. में गुजरात के 'अन्हिलपाटन' नामक स्थान पर हुआ था।
- इनके पिता का नाम सोमेश्वर व माता का नाम कर्पूरी देवी था।
- राज्याभिषेक के समय पृथ्वीराज की आयु मात्र 11 वर्ष थी अत: माता कर्पूरी देवी इसकी संरक्षिका बनी।
- पृथ्वीराज 6 भाषाओं तथा शब्द भेदी बाण का ज्ञाता था।

◈ पृथ्वीराज–तृतीय के मुख्यमंत्री 'कदम्बवास' व सेनाध्यक्ष 'भुवनमल्ल' थे। स्कंद, वामन, सोढ़, सोमेश्वर व चामुण्डराय इसके अन्य मंत्री थे।
◈ पृथ्वीराज–तृतीय ने 'रायपिथौरा' व 'दलपुंगल' (विश्व विजेता) नामक उपाधियाँ धारण की थी।
◈ सर्वप्रथम इन्होंने 1178 ई. में अपने चचेरे भाइयों नागार्जुन व अपरगांग्य के विद्रोह का दमन किया था।
◈ पृथ्वीराज चौहान–III ने 1182 ई. में मथुरा, अलवर तथा भरतपुर क्षेत्रों में रहने वाली भण्डानक जनजाति का दमन किया था। यह जानकारी जिनपति सूरि की पुस्तकों से प्राप्त होती है।
◈ यह जनजाति पंजाब के सतलज क्षेत्र से आकर गुरुग्राम व हिसार क्षेत्रों में निवास करने लगी थी।

तुमुल/महोबा का युद्ध (1182 ई.)

◈ परमार्दिदेव चन्देल ने पृथ्वीराज के घायल सैनिकों की हत्या करवा दी थी अत: इन दोनों के मध्य तुमुल नामक स्थान पर एक भीषण युद्ध हुआ था।
◈ इस युद्ध में पृथ्वीराज ने परमार्दिदेव चन्देल को पराजित कर पंजुनराय को महोबा का प्रशासक नियुक्त किया।
◈ परमार्दिदेव चंदेल के पराक्रमी सेनापति आल्हा और ऊदल इस युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

नागौर का युद्ध (1184 ई.)

◈ 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार 1184 ई. में पृथ्वीराज–तृतीय तथा चालुक्य नरेश भीमदेव–द्वितीय दोनों के मध्य आबू के परमार शासक सलख की पुत्री इच्छिनी से विवाह को लेकर विवाद हुआ था।
◈ भीमदेव–द्वितीय के सेनापति जगदेव प्रतिहार ने दोनों के बीच संधि करवा दी थी।
◈ पृथ्वीराज व मोहम्मद गौरी के बीच लड़े गए युद्धों की संख्या को लेकर विद्वानों में मतभेद है जो इस प्रकार है-
◈ प्रबंध चिंतामणि – **23 बार**
◈ पृथ्वीराज रासो – **21 बार**
◈ सुर्जन चरित्र **– 21 बार**
◈ प्रबंध कोष **– 20 बार**
◈ पृथ्वीराज प्रबंध **– 8 बार**
◈ हम्मीर महाकाव्य **– 7 बार**
◈ परंतु आधुनिक इतिहासकारों व उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर ऐसा माना जाता है कि इन दोनों के बीच तराईन के मैदान में दो प्रमुख युद्ध हुए थे जो निम्नलिखित है-

तराईन का प्रथम युद्ध (1191 ई.):- करनाल (हरियाणा)

युद्ध के कारण -

i. मुहम्मद गौरी द्वारा **तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार** कर काजी जियाउद्दीन को वहां का प्रशासक नियुक्त करना।
ii. चौहानों तथा गजनी के शासकों के मध्य लम्बे समय से चली आ रही दुश्मनी।

◈ यह युद्ध **पृथ्वीराज–तृतीय और मुहम्मद गौरी** के मध्य हुआ था, जिसमें पृथ्वीराज ने गौरी को हराकर काजी जियाउद्दीन को गिरफ्तार कर लिया।
◈ इस युद्ध में पृथ्वीराज का सेनापति **'चामुण्डराय'** था।
◈ इस युद्ध में **दिल्ली के गोविन्दराज तोमर ने** गौरी को घायल कर दिया था।

तराईन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

◈ पृथ्वीराज का मंत्री सोमेश्वर शत्रुओं के पक्ष में चला गया अत: इस युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय हुई।
◈ पृथ्वीराज को सिरसा के पास सरस्वती नामक स्थान पर गिरफ्तार कर मौत के घाट उतार लिया गया।
◈ लक्ष्मीधर द्वारा रचित विरुद्ध - विधि - विध्वंस के अनुसार पृथ्वीराज की तराईन के युद्ध मैदान में मृत्यु हुई थी।
◈ हसन निजामी के ग्रंथ ताज-उल-मासिर के अनुसार पृथ्वीराज ने कुछ समय तक गौरी के अधीन शासन किया था।
◈ चंद्रबरदाई के ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार पृथ्वीराज को गजनी ले जाया गया जहाँ इसने शब्द भेदी बाण से गौरी की हत्या कर दी थी।
◈ इस संबंध में चन्द्रबरदाई की यह वीरोक्ति प्रसिद्ध है-
"चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता उपर गौरी खड़ा, मत चूके चौहान।।"

पृथ्वीराज–तृतीय के दरबारी विद्वान

1. **चन्दबरदाई (पृथ्वी भट्ट)-** इसका जन्म लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ था। इसने पिंगल भाषा में **पृथ्वीराज रासो** नामक ग्रंथ की रंचना की थी। 'जल्हण' ने इस ग्रंथ को पुरा किया था।
2. **जयानक भट्ट –** इसने संस्कृत भाषा में पृथ्वीराज विजय नामक ग्रंथ की रचना की जिससे अजमेर के चौहान वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इस ग्रंथ में अजमेर की तुलना इंद्रपुरी से की गई है।

◈ **वागीश्वर जनार्दन, आशाधर, विद्यापति गौड़, विश्वरूप** आदि इसके अन्य प्रमुख दरबारी विद्वान थे।
◈ पृथ्वीराज ने **कला एवं संस्कृति विभाग** की स्थापना की थी, जिसके **मंत्री पद्मनाभ** थे।
◈ पृथ्वीराज ने **दिल्ली में पिथौरागढ़** का निर्माण करवाया था।
◈ पृथ्वीराज के शासन काल में प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भारत आए तथा अजमेर को अपना केंद्र बनाया।

रणथम्भौर के चौहान

गोविन्दराज –

◈ तराईन के द्वितीय युद्ध (1192ई.) में पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद उसके पुत्र **गोविन्दराज** ने **मुहम्मद गौरी** की अधीनता स्वीकार की तथा अजमेर का शासक बना।
◈ गोविन्दराज के चाचा हरिराज ने विद्रोह करके अजमेर पर अधिकार कर लिया था। अत: यह **रणथम्भौर** चला गया तथा यहाँ पर 1194 ई. **चौहान वंश की स्थापना** की।
◈ इस समय मुहम्मद गौरी का सेनापति **गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक** था।
◈ इसने **कुतुबुद्दीन ऐबक की सहायता से** रणथम्भौर में चौहान वंश की स्थापना की थी।
◈ **वीरनारायण** के समय इल्तुतमिश (दिल्ली) ने रणथंभौर पर आक्रमण किया था।
◈ रणथम्भौर के शासक वागभट्ट एवं हम्मीर ने दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध प्रतिरोध किया था।
◈ वागभट्ट के समय दिल्ली के नासिरुद्दीन महमूद ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया, लेकिन वह रणथम्भौर पर अधिकार करने में असफल रहा।
◈ वागभट्ट ने रजिया सुल्तान के सेनापति मलिक कुतुबुद्दीन तथा हसनगौरी को पराजित किया था।
◈ रणथंभौर के सबसे शक्तिशाली चौहान शासक हम्मीर ने जलालुद्दीन खिलजी व अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध संघर्ष किया था।
◈ **जैत्र सिंह** ने 32 वर्षों तक शासन किया तथा अपने जीवनकाल में ही अपने बेटे हम्मीर को राजा बना दिया था।

हम्मीर देव चौहान (1282–1301 ई.) –

- हम्मीर देव चौहान ने अपने शासन काल में कुल 17 युद्ध लडे, जिनमें से यह 16 युद्धों में विजेता रहा था।
- हम्मीर ने अपनी दिग्विजय नीति के तहत अनेक पडौसी राज्यों जैसे भीमरस के अर्जुन, मेवाड़ के समरसिंह, आबू के प्रतापसिंह व धारा नगरी (मालवा) के भोज परमार को पराजित किया था।
- हम्मीर ने झाईन के निकट जलालुद्दीन खिलजी (दिल्ली) को हराया था।
- हम्मीर ने श्रृंगार हार नामक ग्रंथ की रचना की तथा अपने पिता जैत्रसिंह (जयसिम्हा) के 32 वर्षों के शासन काल की याद में रणथम्भौर में 32 खम्भों की छतरी का निर्माण करवाया।
- हम्मीर के गुरु राघव देव तथा दरबारी विद्वान बीजादित्य था।
- हम्मीर ने कोटियज्ञ का आयोजन करवाया जिसका पुरोहित विश्वरूप था।
- हम्मीर देव चौहान व जलालुद्दीन खिलजी के मध्य वर्ष 1290 व 1292 ई. में दो बार युद्ध हुए थे।
- जलालुद्दीन खिलजी ने प्रथम मुठभेड़ (1290 ई.) के समय रणथम्भौर दुर्ग की कुंजी कहे जाने वाले झाईन दुर्ग पर आक्रमण किया था। इस समय हम्मीर का सेनापति गुरुदास सैनी मारा गया।
- सुल्तान ने दूसरी बार 1292 ई. में आक्रमण किया था परंतु जब दुर्ग को जीतने के समस्त प्रयास असफल रहे तब जलालुद्दीन खिलजी ने कहा कि **"ऐसे दस किलों को भी मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"**
- अमीर खुसरो ने अपने ग्रंथ 'मिफ्ता-उल-फुतूह' में जलालुद्दीन खिलजी के द्वारा रणथम्भौर पर किए गए इन आक्रमणों का उल्लेख किया है।
- हम्मीर द्वारा मंगोल विद्रोहियों मीर मुहम्मद शाह व केहब्रू को शरण देने से सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी हम्मीर से नाराज हो गया।
- हम्मीर ने अलाउद्दीन के विद्रोहियों को लौटाने से इनकार कर दिया अत: 1299 ई. में उसे खिलजी के आक्रमण का सामना करना पड़ा लेकिन खिलजी सेना असफल रही।
- इस आक्रमण के समय अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति उलूग खां, नुसरत खां व अलप खां थे। जबकि हम्मीर के सेनापति धर्म सिंह व भीमसिंह थे।
- 1300 ई. अलाउद्दीन का सेनापति नुसरत खां लड़ता हुआ मारा गया।
- बनास नदी के तट पर हुए हिंदुवाट घाटी के संघर्ष में हम्मीर का सेनापति भीमसिंह लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।
- हम्मीर ने भीमसिंह की मौत का उत्तरदायी धर्मसिंह को ठहराकर उसे अंधा कर दिया तथा उसके पद पर धर्म सिंह के भाई भोज को नियुक्त किया।
- भोज द्वारा राज्य के कार्य को ठीक से नहीं संभाल पाने के कारण हम्मीर ने भोज को पदच्युत कर धर्म सिंह को पुन: राज्य सर्वेसर्वा बना दिया।
- भोज अपने भाई पृथ्वीराज के साथ अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में चला गया जहां खिलजी ने उसे जगरा की जागीर प्रदान की।
- रणमल व रतिपाल के विश्वासघात के कारण जुलाई 1301 ई. में राजपूतों ने हम्मीर के नेतृत्व में केसरिया किया तथा वीरांगनाओं ने रानी रंगदेवी के नेतृत्व में जौहर किया।
- यह राजस्थान का प्रथम साका माना जाता है।
- हम्मीर व रानी रंगदेवी की पुत्री **'देवलदे'** ने पद्मला तालाब में कूदकर प्राणोत्सर्ग किया इस कारण इसे **'जल जौहर'** कहा जाता है।
- अमीर खुसरो ने अपने ग्रंथ **'खजाइन-उल-फुतुह'** में इस युद्ध का आँखों देखा वर्णन किया है।
- यह फारसी भाषा में जौहर का प्रथम उल्लेख माना जाता है। खुसरो के इस ग्रंथ को **'तारीख-ए-अलाई'** के नाम से भी जाना जाता है।
- 11 जूलाई 1301 ई. को अलाउद्दीन का रणथम्भौर पर अधिकार हो गया था।
- इस समय अमीर खुसरो ने कहा कि **'आज कुफ्र का गढ़ इस्लाम का घर हो गया'**।
- इस जीत के बाद अलाउद्दीन ने उलूग खां को रणथम्भौर का प्रशासक नियुक्त किया।
- हम्मीर के प्रति वफादारी के कारण मंगोल नेता मीर मुहम्मद शाह को अलाउद्दीन खिलजी ने हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया था।

हम्मीरदेव से संबंधित पुस्तकें

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक
1.	हम्मीर महाकाव्य	नयनचन्द्र सूरी
2.	हम्मीरायण	भाण्डऊ व्यास
3.	हम्मीर हठ	चन्द्रशेखर
4.	हम्मीर रासो	जोधराज
5.	हम्मीर बंधन	अमृत कैलाश
6.	हम्मीर रासो	सारंगधर लेखक
7.	हम्मीर रासो	महेश

नाडोल के चौहान

- **संस्थापक:** लक्ष्मण चौहान (वाक्पतिराज का पुत्र, शाकम्भरी शाखा से)
- **981 ई.** में **नाडोल में आशापुरा माता मंदिर** का निर्माण कराया।
- उत्तराधिकारी **शोभित (सोही)** ने **भीनमाल के परमार शासक मान परमार** को पराजित कर भीनमाल पर शासन स्थापित किया।
- **किराडू अभिलेख में उल्लेख:** उत्तरकालीन शासक **अल्हणदेव**।

जालौर के चौहान

- **जालोर का प्राचीन नाम** - जाबालिपुर (बिजौलिया प्रशस्ति में) व किले को **सुवर्णगिरि** कहते थे।
- कीर्तिपाल ने 1181 ई. में कुंतपाल परमार को हराकर जालौर में चौहान वंश की **'सोनगरा शाखा'** की स्थापना की।
- **जाबालि ऋषि** की तपोस्थली होने के कारण बिजोलिया शिलालेख में जालौर का प्राचीन नाम **'जाबालिपुर'** मिलता है।
- जालौर का किला सूकड़ी नदी के किनारे कनकाचल पर्वत / सोनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- इस कारण यहाँ पर शासन करने वाले चौहान **सोनगरा चौहान** कहलाए।
- कीर्तिपाल नाडोल की चौहान शाखा के शासक **अल्हण का पुत्र तथा केल्हण का भाई** था।
- कीर्तिपाल का समकालीन मेवाड़ का शासक **सामंत सिंह** था, जिसे **कीर्तिपाल ने 1179 ई.** में इसे हराया था।
- **सुंधा माता अभिलेख** में कीर्तिपाल को **'राजेश्वर'** कहा गया है।
- **मुहणौत नैणसी** के ग्रंथ **'नैणसी-री-ख्यात'** के अनुसार **"कीतू एक महान राजा था।"**

समरसिंह

- इसने अपनी पुत्री लीला देवी का विवाह गुजरात के चालुक्य शासक भीमदेव द्वितीय के साथ किया था।

उदयसिंह (1205–1257)

- उदयसिंह के समय 1228 ई. में दिल्ली के सुल्तान **इल्तुतमिश** ने जालोर पर आक्रमण किया था परंतु उदयसिंह ने इसे असफल कर दिया तथा इसने इल्तुतमिश से मंडोर (जोधपुर) तथा नाडोल (पाली) छीन लिए थे।
- कान्हड़दे प्रबंध के अनुसार 1254 ई. में **नसीरुद्दीन महमूद** ने उदयसिंह पर आक्रमण परंतु, मुस्लिम सेना को परास्त होकर वापस लौटना पड़ा।

चाचिगदेव (1257–1282)

- उदयसिंह का उत्तराधिकारी चाचिगदेव हुआ था।
- चाचिगदेव ने **महाराजाधिराज की उपाधि** धारण की थी।
- इनके समय दिल्ली का सुल्तान **नसीरुद्दीन महमूद व बलबन** था परंतु इन दोनों का जालौर पर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ।
- चाचिगदेव ने सुंधा माता मंदिर का निर्माण करवाया था।
- उत्तराधिकारी – सामंत सिंह → कान्हड़देव।

कान्हड़देव (1305–1311)

- कान्हड़देव जालोर के सोनगरा चौहान शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था।
- यह सामंत सिंह का पुत्र था, कान्हड़देव का पुत्र वीरमदेव था।

कान्हड़दे के बारे में जानकारी के स्त्रोत निम्नलिखित है –

1. कान्हड़दे प्रबन्ध – पद्मनाभ
2. वीरमदे सोनगरा री बात – पद्मनाभ
3. मकराना – शिलालेख
4. हम्मीरायण – पद्मनाभ
5. नैणसी री ख्यात – नैणसी
6. तारीख–ए–फरिश्ता – फ़रिश्ता
7. खजाइन–उल–फुतुह – अमीर खुसरो
8. जालोर प्रशस्ति

अलाउद्दीन खिलजी से संघर्ष:

1. **कान्हड़दे प्रबंध के अनुसार** अलाउद्दीन खिलजी की सेना के गुजरात अभियान से लौटते समय कान्हड़देव के सेनापति / मुख्यमंत्री **'जैता देवड़ा'** ने रास्ता रोक लिया तथा उनसे सोमनाथ मंदिर के शिवलिंग के टुकड़े छीन लिए थे। इस कारण कान्हड़देव व अलाउद्दीन खिलजी के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हो गया।

- **फरिश्ता के अनुसार** 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सेनापति **ऐन–उल–मुल्क मुल्तानी** को जालोर पर आक्रमण करने के लिए भेजा।
- 1298 ई. में जालौर के निकट कान्हड़देव ने अलाउद्दीन ख़िलजी की सेना के दो प्रमुख सेनानायकों उलुग खाँ और नुसरत खाँ के अधीन खिलजी सेना को पराजित किया था।
- **ऐन-उल-मुल्क मुल्तानी** ने कान्हड़देव के साथ समझौता कर कान्हड़देव को अलाउद्दीन खिलजी के दरबार (दिल्ली) ले गया।
- **तारीख-ए-फरिश्ता ग्रंथ** के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी ने कान्हड़देव को हिन्दू शासकों की शक्ति को चुनौती दी थी जिसको कान्हड़देव सहन न कर सका और जालोर लौट कर युद्ध की तैयारियाँ शुरू की थी।
- **नैणसी के अनुसार** - कान्हड़देव के पुत्र वीरमदेव ने अलाउद्दीन खिलजी की पुत्री **फिरोजा से विवाह** करने से इन्कार कर दिया था इसलिए अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था।
- पद्मनाथ के ग्रंथ **'वीरमदे सोनगरा री वात'** से भी अलाउद्दीन व कान्हड़दे के बीच हुए संघर्ष तथा वीरमदेव - फिरोजा की प्रेम कहानी के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

सिवाणा (बालोतरा) दुर्ग पर अलाउद्दीन का आक्रमण –

- अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने कमालुद्दीन गुर्ग के नेतृत्व में 1308 ई. में जालोर की कुंजी कहे जाने वाले सिवाना दुर्ग पर आक्रमण कर इस पर अधिकार कर लिया था।
- भायला पंवार नामक सैनिक के विश्वासघात के कारण कान्हड़देव के भतीजों सातल व सोम के नेतृत्व में 1308 ई. में सिवाणा दुर्ग में पहला साका हुआ।
- भायला पंवार ने सिवाणा दुर्ग स्थित **'भांडेलाव'** नामक तालाब को **'गौ-रक्त'** से दूषित कर दिया था।
- अलाउद्दीन ने सिवाना दुर्ग पर अधिकार कर इसका नाम बदलकर खैराबाद कर दिया तथा कमालुद्दीन गुर्ग को यहां का प्रशासक नियुक्त किया।
- मेड़ता के पास मलकाना नामक स्थान पर हुए युद्ध में कान्हड़ देव की सेना ने अलाउद्दीन खिलजी के सेनानायक शम्स खां व उसकी पत्नी को बंदी बना लिया था।

जालौर युद्ध - 1311 ई. –

- अलाउद्दीन खिलजी ने 1311 ई. में कमालुद्दीन गुर्ग के नेतृत्व में आक्रमण किया था। फिरोजा की धाय मां गुलविहिश्त भी इस अभियान में खिलजी सेना के साथ आई थी।
- इस युद्ध में कान्हड़देव का सेनापति जैता देवड़ा था।
- दहिया सेजवल बिक्रम (बीका दहिया) के विश्वासघात के कारण 1311 ई. में जालौर दुर्ग में कान्हड़देव तथा वीरमदेव के नेतृत्व में **'साका'** हुआ।
- हीरा दे ने अपने देशद्रोही पति बीका दहिया की हत्या कर दी।
- इस युद्ध की जानकारी पद्मनाथ के ग्रंथ **'कान्हड़दे प्रबंध'** तथा **'वीरमदेव सोनगरा री बात'** में मिलती है।
- फरिश्ता के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी का जालौर पर द्वितीय आक्रमण 1311 ई. में हुआ था।
- इस युद्ध में अलाउद्दीन खिलजी विजयी रहा। इस युद्ध में खिलजी ने जालौर के सोनगरा चौहान वंश का अंत कर दिया।
- अलाउद्दीन ने जालौर का नाम बदलकर जलालाबाद कर दिया तथा यहां पर मलिक शाह की दरगाह व अलाई या तोपखाना मस्जिद का निर्माण करवाया।
- हसन निजामी ने जालोर दुर्ग के विषय में कहा है कि 'यह एक ऐसा किला है जिसका दरवाजा कोई आक्रमणकारी नहीं खोल सका है'।
- जालोर के सोनगरा चौहानों की कुलदेवी आशापुरा माता (महोदरी माता) को माना जाता है।

राजस्थान के विभिन्न दुर्गो/शहरों परिवर्तित नाम

क्र.	दुर्ग/शहर	परिवर्तित नाम	परिवर्तनकर्ता
1.	जालौर	जलालाबाद	अलाउद्दीन खिलजी
2.	सिवाणा	खैराबाद	अलाउद्दीन खिलजी
3.	झाईन	नौशहर	अलाउद्दीन खिलजी
4.	चित्तौड़गढ़	खिज्राबाद	अलाउद्दीन खिलजी
5.	गागरोण	मुस्तफाबाद	महमूद खिलजी
6.	उदयपुर	मुहम्मदाबाद	अकबर
7.	जयपुर	इस्लामाबाद / मोमिनाबाद	बहादुरशाह प्रथम
8.	बूंदी	फर्रूखाबाद	फर्रूखशियर

सिरोही के चौहान

सिरोही के चौहान (देवड़ा शाखा)

- अचलेश्वर मंदिर लेख के अनुसार राव लुंबा में 1311 ई. में परमारों से आबू व चंद्रावती छीनकर सिरोही में चौहान वंश की देवड़ा शाखा की स्थापना कर चंद्रावती को अपनी राजधानी बनाया।
- शिवभाण ने सिरणवा पहाड़ी के नीचे शिवपुरी नामक शहर 1405 ई. में बसाया तथा यहां पर एक दुर्ग का निर्माण करवाया।
- कर्नल टॉड के अनुसार सिरोही नगर का मूल नाम 'शिवपुरी' था।
- प्राचीन साहित्य में सिरोही को अर्बुद प्रदेश व सरणवाही नगर भी कहा गया है।

सहसमल –

- 1425 ई. में सहसमल देवड़ा ने वर्तमान सिरोही नगर की स्थापना की तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।
- मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने सहसमल को पराजित किया तथा इस विजय के उपलक्ष्य में सिरोही में अचलगढ़ दुर्ग का पुनर्निर्माण करवाया।

लाखा देवड़ा

- पावागढ़ पर आक्रमण; कालिका माता की मूर्ति सिरोही लाई।
- लाखनाव तालाब का निर्माण।

जगमाल देवड़ा

- रायमल (मेवाड़) के समकालीन।
- 1474 ई. – बहलोल लोदी के आक्रमण में मेवाड़ की सहायता।
- मलिक मजीद खाँ (जालोर) को हराया।

सुरताण देवड़ा

- 1575 ई. – अकबर की अधीनता स्वीकार।
- 1583 ई. – दत्ताणी युद्ध में जगमाल सिसोदिया को हराया।
- दरबारी कवि दुरसा आढ़ा – ग्रंथ: राव सुरताण रा कवित्त।
- **नोट-** दुरसा आढ़ा की मूर्ति अचलगढ़ दुर्ग में लगी है।

शिवसिंह (1823 ई.)

- 1823 ई. में अंग्रेजों से संधि की। सिरोही अंग्रेजों से संधि करने वाली अंतिम रियासत बनी।

अभयसिंह देवड़ा

- सिरोही के चौहान वंश का अंतिम शासक।

हाड़ौती के चौहान

- हाड़ौती क्षेत्र - वर्तमान बूँदी, कोटा, बाराँ व झालावाड़।
- पहले यहाँ पर मीणाओं का शासन था।
- कुंभाकालीन रणकपुर (पाली) अभिलेख में बूँदी को वृंदावती कहा गया है।

देवा हाड़ा (1241 ई.)

- यह बम्बावदे (मेवाड़) का सामंत था।
- इसने जैता मीणा को हराकर 1241 ई. में बूँदी में चौहान वंश की हाड़ा शाखा की स्थापना की।
- इसके पुत्र समरसिंह हाड़ा ने कोटिया भील को हराकर 1264 ई. में कोटा पर अधिकार किया था।

बरसिंह हाड़ा (1354 ई.)

- इसने 1354 ई. में तारागढ़ दुर्ग (बूँदी) का निर्माण करवाया था। यह दुर्ग अपने भित्ति चित्रों के लिये प्रसिद्ध है।

राव सुर्जन हाड़ा (1554–1585 ई.)

- **1568 ई. –** बूँदी को मेवाड़ से स्वतंत्र किया
- **1569 ई.** में अकबर ने रणथंभौर पर आक्रमण किया।
- **1569 ई. –** अकबर की अधीनता स्वीकार
- **निर्माण –** द्वारका में रणछोड़ मंदिर
- **उपाधियाँ –** रावराजा, 5 हजार मनसब
- **दरबारी विद्वान –** चंद्रशेखर ने सुरजन चरित्र व हम्मीर हठ नामक ग्रंथों की रचना की।

रतनसिंह हाड़ा (1607–1631 ई.)

- जहाँगीर ने इसे न्यायप्रिय होने के कारण रामराज व चित्रकला प्रेमी होने के कारण सरबुलंदराय की उपाधि प्रदान की।
- इसने खुर्रम (शाहजहां) के विद्रोह को दबाया था।

बुद्धसिंह हाड़ा (1695–1730 ई.)

- **पुस्तक –** नेतरंग
- मुगल बादशाह बहादुरशाह ने इसे **'महाराव राणा'** का खिताब व कुछ परगने प्रदान किये थे।
- मुगल बादशाह फर्रुखशियर ने बूँदी पर आक्रमण कर इसका नाम बदल कर फर्रुखाबाद कर दिया था।
- इसके शासनकाल में राजस्थान में सर्वप्रथम बूँदी रियासत में मराठों का प्रवेश (1734 ई.) हुआ था।

उम्मेदसिंह (1749–1770 ई.)

- उम्मेद सिंह को एक राजा ने इराकी घोड़ा भेंट किया जिसका नाम **'हुंजा'** था।
- उम्मेद सिंह को **'श्रीजी'** के नाम से भी जाना जाता था।
- उम्मेद सिंह ने अपने जीवन काल में स्वयं की सोने की मूर्ति बनाकर उसका अंतिम संस्कार करवाया था।
- इन्होंने तारागढ़ दुर्ग (बूँदी) में **'चित्रशाला'** का निर्माण करवाया था।
- इसका शासन काल बूंदी चित्रकला का स्वर्ण काल माना जाता है।

विष्णु सिंह

- **10** फरवरी **1818** ई. को विष्णुसिंह ने अंग्रेजों के साथ सहायक संधि की थी।

बहादुर सिंह हाड़ा

- यह बूँदी में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का अंतिम आधिकारिक शासक था।
- **25** मार्च, **1948** ई. को एकीकरण के दूसरे चरण में बूँदी रियासत का राजस्थान संघ में विलय हुआ था।

कोटा के चौहान

कोटा के चौहान (हाड़ा वंश)

- कोटा प्रारंभ में बूंदी राज्य का ही अंग था। बूंदी के जैत्रसिंह हाड़ा ने कोटिया भील को हराकर कोटा पर अधिकार किया था और कोटिया भील के नाम पर इस राज्य का नाम कोटा रखा।
- जैत्रसिंह ने कोटा के गुलाब महल का निर्माण करवाया था।

माधोसिंह (1631–1648 ई.)

- 1631 ई. शाहजहाँ ने बूँदी का विभाजन कर राव रतनसिंह के पुत्र माधोसिंह को कोटा का स्वतंत्र शासक बना दिया। यहीं से कोटा में चौहानों की हाड़ा शाखा की स्थापना होती है।
- इसके शासनकाल में मुगल राज्य की दृष्टि में हाड़ौती की शक्ति का केन्द्र कोटा था।
- शाहजहाँ ने माधो सिंह को बाद रफ्तार घोड़ा पुरस्कार स्वरूप दिया था।
- राव मुकुन्द सिंह ने मुकुन्दरा हिल्स में 'अबली–मीणी का महल' बनवाया, जिसे राजस्थान का 'दूसरा ताजमहल' कहते हैं।
- 1658 ई. में मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में भाग लिया तथा धरमत के युद्ध में शाही सेना की तरफ से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

- राव किशोर सिंह ने कोटा किशोर सागर तालाब का निर्माण करवाया तथा इसके समय चांदखेड़ी के जैन मंदिरों का निर्माण हुआ था।
- महाराव भीम सिंह प्रथम ने कोटा का नाम बदलकर नंदगांव और शेरगढ़ का नाम बदलकर बरसाना कर दिया था।
- महाराव उम्मेद सिंह का शासन काल कोटा चित्रशैली का स्वर्ण काल माना जाता है। इस चित्रशैली में महिलाओं को शिकार करते हुए दर्शाया गया है।
- कोटा का अंतिम आधिकारिक शासक महाराव भीम सिंह द्वितीय था।

झालावाड़ के चौहान

झालावाड़ के चौहान (हाड़ा शाखा)

- 1837 ई. अंग्रेजों ने कोटा राज्य से 17 परगने अलग कर झालावाड़ राज्य की स्थापना की तथा अप्रैल 1838 ई. में इसे मान्यता प्रदान कर दी।
- अंग्रेजों ने झालावाड़ के शासकों को 'राजराणा' की उपाधि प्रदान की।
- राजराणा झालामदन सिंह झालावाड़ रियासत का पहला शासक था।
- 1857 की क्रांति के दौरान राजराणा पृथ्वी सिंह यहां का शासक था। इसने झालावाड़ में 'नवलखा दुर्ग' का निर्माण करवाया था।
- यहां के राजराणा राजेन्द्र सिंह ने राजकीय मंदिरों में हरिजनों के प्रवेश की अनुमति प्रदान की तथा इसने झालावाड़ में काठ का रैन बसेरा स्थापित किया।
- यह 'सुधारक' उपनाम से कविताएं लिखता था।
- झालावाड़ के अंतिम शासक राजराणा हरिशचंद्र ने प्रजामंडल आंदोलन का समर्थन किया था।

नोट-

1. डॉ.एम.एल. शर्मा कृत 'कोटा राज्य का इतिहास' के अनुसार 19 परगनों को मिलाकर बनाया गया था।
2. वी.के. वशिष्ठ कृत 'राजपूताना एजेंसी' के अनुसार 17 परगनों को मिलाकर झालावाड़ का गठन किया गया था।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्न कथनों में से कौन–सा एक कथन अजमेर के चौहान राजा अजयराज (अजय देव) के विषय में सही नहीं है?

(a) अजयराज ने अजमेर (अजयमेरू) के नवीन नगर की स्थापना की।

(b) पृथ्वीराज विजय के अनुसार, अजयराज ने 'गर्जन मतंगा' अर्थात् गजनी के मुस्लिम आक्रान्ताओं को पराजित किया था।

(c) दिल्ली (ढिल्लिका) को अपने अधिकार में लेने वाला वह पहला चौहान शासक था।

(d) कुछ सिक्कों पर उसकी रानी सोमलवती का नाम उल्लिखित है। **[c]**

2. अजमेर के चौहानों के विषय में निम्न कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए-

(अ) अजयराज ने अपनी राजधानी सांभर से अजमेर स्थानांतरित की थी।

(ब) अजयराज ने अपनी राजधानी में प्रसिद्ध झील का निर्माण करवाया और उसका नाम आनासागर रखा।

(a) (अ) एवं (ब) दोनों सत्य हैं।

(b) केवल (ब) सत्य है।

(c) (अ) एवं (ब) दोनों असत्य हैं।

(d) केवल (अ) सत्य है। **[d]**

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं एक अभिकथन A (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण R (Reason R) के रूप में।

अभिकथन-A: तराईन का दूसरा युद्ध राजपूतों और उनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा के लिए विध्वंसक था।

कारण-R: तराईन के दूसरे युद्ध और चंदावर के युद्ध ने भारत में अफगान शासन की नींव रखी थी।

उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए-

(a) A सही है लेकिन R सही नहीं है।

(b) A सही नहीं है लेकिन R सही है।

(c) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(d) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है। **[c]**

4. चौहान शासकों को कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित कीजिए–

1. विग्रहराज-IV 2. सोमेश्वर

3. पृथ्वीराज-II 4. पृथ्वीराज-III

कूट:–

(a) 3, 4, 1, 3 (b) 3, 2, 1, 4

(c) 1, 2, 3, 4 (d) 1, 3, 2, 4 **[d]**

5. जालौर के विरुद्ध अलाउद्दीन के अभियान के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए एवं सही विकल्प चुनिए-

1. अलाउद्दीन खिलजी ने मालिक कमाल-उद्-दीन गुर्ग के नेतृत्व में एक शक्तिशाली सेना भेजी।

2. जालौर के दहिया सेजवल बिक्रम को स्वर्ण का लालच देकर सुल्तान की सेना को गुप्त मार्ग से जालौर दुर्ग में प्रवेश करवाया।

(a) 1 और 2 दोनों सत्य है।

(b) केवल 2 सत्य है।

(c) केवल 1 सत्य है।

(d) 1 और 2 दोनों असत्य है। **[a]**

6. अल्लाउद्दीन खिलजी की विजयों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए-

1. रणथम्भौर 2. जालौर

3. चित्तौड़ 4. सिवाणा

(a) 1,3,4,2 (b) 1,2,3,4

(c) 1,2,4,3 (d) 1,3,2,4 **[a]**

7. चौहान राजवंश की प्रमुख मान्यताओं और भौगोलिक केंद्रों के संदर्भ में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए–

सूची-I (विवरण)	सूची-II (स्थान/देवता)
I. चौहानों का मूल स्थान	1. आशापुरा माता
II. प्रारंभिक राजधानी	2. हर्षनाथ (सीकर)
III. चौहानों के कुल देवता	3. सपादलक्ष (सांभर)
IV. जालौर व नाडोल के चौहानों की कुल देवी	4. अहिच्छत्रपुर (नागौर)

सही कूट (Code) का चयन करें:

(a) I-3, II-4, III-1, IV-2 (b) I-4, II-3, III-2, IV-1

(c) I-3, II-4, III-2, IV-1 (d) I-4, II-3, III-1, IV-2 **[c]**

8. शाकंभरी (सांभर) के चौहान शासक वासुदेव चौहान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. वासुदेव चौहान को चौहान राजवंश का 'आदिपुरुष' और 'मूलपुरुष' माना जाता है।

2. बिजौलिया शिलालेख (1170 ई.) के अनुसार, इन्होंने 551 ई. के लगभग सपादलक्ष में चौहान वंश की नींव रखी थी।

3. इन्होंने अपनी प्रारंभिक राजधानी अहिच्छत्रपुर (वर्तमान नागौर) को बनाया था।

4. बिजौलिया शिलालेख के अनुसार, सांभर झील के निर्माण का श्रेय भी वासुदेव चौहान को दिया जाता है।

5. राजशेखर के 'प्रबंधकोष' और डॉ. दशरथ शर्मा के ग्रंथ 'द अर्ली चौहान डायनेस्टी' से भी इनके बारे में ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

सही कूट (Code) का चयन करें:

(a) केवल 1, 2 और 5 सही हैं।
(b) केवल 3 और 4 सही हैं।
(c) सभी कथन सत्य हैं।
(d) केवल 2, 3 और 4 सही हैं। **[c]**

9. चौहान शासक विग्रहराज द्वितीय के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. विग्रहराज द्वितीय के शासनकाल और उनकी विजयों की विस्तृत जानकारी 973 ई. के हर्षनाथ शिलालेख से प्राप्त होती है।

2. हर्षनाथ लेख में विग्रहराज द्वितीय को प्रारंभिक चौहान शासकों में सबसे अधिक प्रतापी शासक के रूप में वर्णित किया गया है।

3. इन्होंने गुजरात के चालुक्य शासक मूलराज प्रथम को युद्ध में पराजित किया था।

4. अपनी विजय के उपलक्ष्य में इन्होंने भड़ौंच में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता के मंदिर का निर्माण करवाया था।

सही कूट (Code) का चयन करें–

(a) केवल 1 और 2 सही हैं।
(b) केवल 3 और 4 सही हैं।
(c) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(d) सभी कथन सत्य हैं। **[d]**

10. अर्णोराज (आनाजी) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए असत्य कथन का चयन कीजिए–

1. अर्णोराज ने अजमेर में तुर्कों पर विजय की स्मृति में आनासागर झील का निर्माण करवाया था।

2. इन्होंने पुष्कर में भगवान विष्णु के प्रसिद्ध वराह मंदिर का निर्माण करवाया।

3. अर्णोराज ने मालवा के नरवर्मन और गुजरात के जयसिंह सिद्धराज को युद्ध में परास्त किया था।

4. इनके दरबार में देवबोध और धर्मघोष जैसे प्रकाण्ड विद्वान निवास करते थे।

5. अर्णोराज ने चालुक्य शासक कुमारपाल को पराजित कर अपनी पुत्री जाल्हण देवी का विवाह उससे किया था।

कूट (Options):

(a) केवल 3 असत्य है
(b) केवल 5 असत्य है
(c) 2 और 4 असत्य हैं
(d) सभी कथन सत्य हैं **[b]**

11. विग्रहराज चतुर्थ के साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. विग्रहराज चतुर्थ ने संस्कृत भाषा में 'हरिकेलि' नाटक की रचना की, जो भारवि के 'किरातार्जुनीयम' पर आधारित है।

2. प्रसिद्ध यूरोपीय विद्वान किलहोर्न ने विग्रहराज की तुलना महाकवि कालिदास और भवभूति से की है।

3. विग्रहराज के दरबारी सोमदेव ने 'बीसलदेव रासो' नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें राजकुमारी देसलदेवी के साथ उनके प्रेम-प्रसंग का वर्णन है।

4. 'हरिकेलि' नाटक और 'ललित विग्रहराज' की पंक्तियाँ अजमेर की 'सरस्वती कंठाभरण' पाठशाला की दीवारों पर उत्कीर्ण करवाई गई थीं।

5. नरपति नाल्ह द्वारा रचित 'बीसलदेव रासो' में बीसलदेव और रानी राजमति की प्रेम कहानी का वर्णन मिलता है।

असत्य कूट का चयन कीजिए:

(a) केवल 1 और 4 (b) केवल 3
(c) केवल 2 और 5 (d) 1, 3 और 5 **[b]**

12. चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ की सैन्य विजयों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. बिजोलिया शिलालेख (1170 ई.) के अनुसार, विग्रहराज चतुर्थ ने तोमरों को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार किया था।

2. विग्रहराज चतुर्थ दिल्ली पर विजय प्राप्त करने वाले पहले चौहान शासक माने जाते हैं।

3. दिल्ली-शिवालिक स्तंभ लेख के अनुसार, इन्होंने म्लेच्छों (गजनी के अमीर खुसरो शाह) को पराजित कर आर्यावर्त को निष्कंटक बनाया था।

4. विग्रहराज ने चालुक्य नरेश कुमारपाल को हराकर उनसे जालौर, पाली और नागौर के क्षेत्र छीन लिए थे।

5. इन्होंने अपने राज्य की सीमा शिवालिक पहाड़ियों (सहारनपुर, उ.प्र.) तक विस्तृत कर दी थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1, 2 और 4 (b) केवल 3 और 5
(c) 1, 2, 3, 4 और 5 (d) केवल 1 और 3 **[c]**

13. अजमेर स्थित 'अढाई दिन का झोंपड़ा' के ऐतिहासिक संदर्भ में निम्नलिखित कथनों का परीक्षण कीजिए:

1. विग्रहराज चतुर्थ द्वारा निर्मित 'सरस्वती कंठाभरण' संस्कृत पाठशाला को कुतुबुद्दीन ऐबक ने मस्जिद में परिवर्तित करवाया था।

2. इस इमारत का डिजाइन 'अबु बकर' नामक वास्तुकार द्वारा तैयार किया गया था।

3. कर्नल जेम्स टॉड ने इसे राजस्थान की सबसे प्राचीन और सुरक्षित इमारत बताया है।

4. यहाँ प्रतिवर्ष पंजाब शाह पीर का अढाई दिन का उर्स लगता है, जिसके कारण इसे यह नाम मिला।

5. यह राजस्थान की पहली मस्जिद मानी जाती है, जिसे '16 खंभों का महल' भी कहा जाता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1, 2 और 4
(b) केवल 3 और 5
(c) केवल 1, 3 और 4
(d) 1, 2, 3, 4 और 5 **[d]**

14. पृथ्वीराज तृतीय के सांस्कृतिक और दरबारी परिवेश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. पृथ्वीराज के दरबारी कवि चन्दबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' की रचना पिंगल भाषा में की, जिसे उनके पुत्र जल्हण ने पूर्ण किया।

2. जयानक भट्ट ने संस्कृत में 'पृथ्वीराज विजय' की रचना की, जिसमें अजमेर नगर की सुंदरता की तुलना इंद्रपुरी से की गई है।

3. पृथ्वीराज ने एक पृथक कला एवं संस्कृति विभाग की स्थापना की थी, जिसका कार्यभार मंत्री पद्मनाभ को सौंपा गया था।

4. प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल के दौरान ही भारत (अजमेर) आए थे।

5. दिल्ली में पिथौरागढ़ दुर्ग का निर्माण पृथ्वीराज तृतीय द्वारा करवाया गया था।

सही कूट (Code) का चयन करें:

(a) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(b) केवल 3 और 5 सही हैं।
(c) सभी कथन सत्य हैं।
(d) केवल 2, 4 और 5 सही हैं। **[c]**

15. निम्नलिखित में से किस राजस्थानी ग्रन्थ में अलाउद्दीन खिलजी की जालौर विजय का विवरण मिलता है?

(a) कान्हड़दे प्रबन्ध
(b) खुमान रासो
(c) अचलदास खीची री वचनिका
(d) विरूद छिहतरी **[a]**

16. चौहान निम्नलिखित में से किस स्थान से सम्बद्ध नहीं थे?

(a) नाडौल (b) जालौर
(c) रणथम्भौर (d) लोद्रवा **[d]**

17. सुल्तान इल्तुतमिश के जालौर अभियान के दौरान वहाँ का शासक कौन था?

(a) कीर्तिपाल (b) सामंत सिंह
(c) उदय सिंह (d) कान्हड़ देव **[c]**

18. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए एवं नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही विकल्प का चयन कीजिए:

A. विग्रहराज चतुर्थ शैव मतावलम्बी था।

B. पृथ्वीराज विजय के अनुसार, विग्रहराज चतुर्थ ने 'एकादशी' के दिन पशुवध पर प्रतिबन्ध लगाया था।

कूट:-

(a) केवल A सही है। (b) केवल B सही है।
(c) A और B दोनों सही हैं। (d) A और B दोनों गलत हैं। **[c]**

19. 1298 ई. में जालौर के निकट कान्हड़देव ने किन सेनानायकों के अधीन खिलजी सेना को बुरी तरह परास्त किया था?

(a) कमालुद्दीन एवं शहीन
(b) मलिक नाइब एवं शम्स खाँ
(c) उलुग खाँ एवं नुसरत खाँ
(d) आइन-उल-मुल्क एवं खिज्र खाँ **[c]**

20. जालोर के चौहान वंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -

1. जालोर मध्यकालीन इतिहास में दिल्ली-गुजरात मार्ग पर स्थित था।

2. दिल्ली सल्तनत के समय जालोर पर चौहानों का अधिकार था।

3. इस राजवंश का संस्थापक कीर्तिपाल था, जिसने 1181 ई. में इसकी नींव डाली थी।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3 **[d]**

♦ ♦ ♦ ♦

प्रशासनिक व्यवस्था

मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था

- एक व्यवस्थित राज्य के लिए प्रशासनिक व्यवस्था अनिवार्य तत्व है। मध्यकाल में राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था से तात्पर्य मुगलों से सम्पर्क के बाद से लेकर 1818 ई. में अंग्रेजों के साथ हुई संधियों की काल अवधि के अध्ययन से है।
- राजस्थान की मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था के मूलतः तीन आधार थे- प्रथम **सामान्य एवं सैनिक प्रशासन**, द्वितीय **न्याय प्रशासन** व तीसरा **भू-राजस्व प्रशासन**। संपूर्ण शासन तंत्र राजा और सामंत व्यवस्था पर आधारित था।

सामान्य एवं सैनिक प्रशासन (7वीं से 12वीं शताब्दी)

1. **राजा -** यह संपूर्ण शासन का सर्वेसर्वा होता था। इसे महाराजाधिराज, राज-राजेश्वर, नृपेन्द्र व नारायन भी कहते थे।
- अपराधियों को दण्ड देना, प्रजा के हित के कार्य करना, युध्द में सेना का नेतृत्व करना, न्याय करना, सार्वजनिक उत्सवों में भाग लेना आदि राजा के कार्य थे।
- सम्पूर्ण शासन की शक्ति राजा में निहित होने के बावजूद भी वह स्वेच्छाचारी नहीं होता था। उस पर धर्मशास्त्रों व नीतिगत निर्णयों का दबाव रहता था।
- मेवाड़ के शासक अपने आराध्यदेव श्री एकलिंगजी के दीवान के रूप में शासन कार्य चलाते थे। मेवाड़ के सभी राजपत्रों में 'श्री एकलिंगजी प्रसादतु' और राणाओं के संबंध में "दीवाणजी आदेशतु' लिखा रहता था।
- बीकानेर के शासक अपनी कुलदेवता लक्ष्मीनारायण जी के प्रति अपनी अटूट श्रृद्धा प्रकट करते थे तथा उनके राजपत्रों में सबसे ऊपर 'श्रीजी दीवान वचनात' अंकित रहता था।
- यदि राजा अल्पायु होता था तो राजमाताएं संरक्षक के रूप में शासन संभालती थी। हंसाबाई, कर्मावती और भटियाणी रानी के उदाहरण सर्वविदित है।

2. **युवराज -** राजा का उत्तराधिकार युवराज व महाराज कुमार कहलाता था।
- यह शासन कार्यों में राजा की सहायता करता था।

3. **अमात्य -** प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री अमात्य कहलाता था। यह राजा का मुख्य सलाहकार होता था तथा शासन संचालन में राजा का मुख्य सहयोगी होता था।
4. **संधिविग्रहिक -** यह युद्ध और संधि का मंत्री होता था। इसे कईं भाषाओं और लिपियों का ज्ञान होता था तथा यह सभी आदेशों और विदेशों के लिए पत्र तैयार करता था।
5. **अक्षपटलिक -** यह राज्य में आय-व्यय का ब्यौरा रखने वाला अधिकारी था। यह राज्य में मुख्य लेखाधिकारी के रूप में काम करता था।
6. **भिषगाधिराज -** यह राजवैध होता था।
7. **बन्दिपति -** यह दरबार में कविता पाठ करता था।

> मेवाड़ के गुहिल शासक अल्लट के सारणेश्वर शिलालेख (953 ई.) में अमात्य, सांधिविग्रहिक, अक्षपटलिक, भिषगाधिराज व बन्दिपति नामक पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है। अल्लट को मेवाड़ में नौकरशाही का संस्थापक माना जाता है।

8. **नैमित्तिक -** यह राजकीय ज्योतिषि होता था।
9. **भाण्डारिक -** यह राजकोष का मुख्य अधिकारी था जो खजाने देख-रेख का कार्य करता था। यह पद भी वंशानुगत हो गया था।
10. **महापुरोहित -** यह राजा व राज्य के धार्मिक कार्यों का संपादन करता था।
11. **महाप्रतिहार -** राजसभा का उपरीय अधिकारी था जो दरबार में अनुशासन बनाये रखता था। इसकी आज्ञा के बिना राज-दरबार में प्रवेश नहीं किया जा सकता था।

प्रमुख नायक	
घुड़सवार सेना प्रमुख	महाअश्वपति
हाथी सेना का प्रमुख	पीलूपति
पैदल सेना का प्रमुख	पायकाधिपति
रथ सेना का प्रमुख	स्यन्दपति
किले का प्रमुख	कोट्टपाल

प्रशासनिक व्यवस्था (12वीं से 18वीं शताब्दी तक)

1. **राजा -** यह शासन की संपूर्ण धुरी का केन्द्र होता था। राज्य की समस्त शासन शक्तियाँ राजा में निहित होती थी। अपराधियों को दण्ड देना तथा राज्य में शांति व्यवस्था स्थापित करना इसका प्रमुख काम था।
- राजा के प्रशासनिक कार्यों को संपादित करने के लिए मुत्सद्दी वर्ग की पदसोपान व्यवस्था थी।

2. **प्रधान -** मध्यकालीन राजस्थान के राज्यों में शासक के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण पद / अधिकारी प्रधान होता था।
- यह शासन, सैनिक तथा न्याय संबंधी कार्यों में राजा की सहायता करता था।
- महाराणा रायमल का प्रधान पंचोली हिम्मत था। सांगा के समय गिरधर पंचौली प्रधान पद पर था। उदय सिंह का प्रधान शाह आशा तथा महाराणा प्रताप का प्रधानमंत्री भामाशाह था।
- अमर सिंह के समय प्रधान को 'मुख्यमंत्री' कहते थे और वह डूंगरशाह था। राजसिंह के समय प्रधान को 'मंत्रीप्रवर' कहते थे।
- कोटा-बूंदी में प्रधान को 'दीवान' या 'फौजदार, बीकानेर-भरतपुर में 'मुखत्यार', जयपुर में 'मुसाहिब' तथा मेवाड़, मारवाड़ व जैसलमेर में 'प्रधान' कहा जाता था।

3. **दीवान -** यह मुख्य रूप से अर्थ विभाग का अध्यक्ष होता था। इसके दफ्तर को 'दीवान-ए-हजूरी' कहा जाता था।
- इसके दफ्तर में "महकमा-ए- बकायात' होता था जो अच्छी फसल के समय शेष राजस्व को वसूलता था।
- इस पदाधिकारी के कामों में मुख्य रूप से आर्थिक कार्य, कोष और कर संग्रह के कार्य थे। इसके नीचे कई कारखाने जात के दरोगा, रोकड़ियाँ, मुंशी, पोतदार आदि होते थे।
- प्रत्येक विभाग के सभी कार्यों के विवरण इसके पास आते थे। राज्य की नियुक्तियाँ, पदोन्नति, स्थानान्तरण आदि सम्बन्धी

निर्णय उसकी सम्मति के बिना नहीं लिए जाते थे। उसकी स्वतंत्र मुहर होती थी जिस पर उसका नाम खोदा गया था।
- यह राजा को आर्थिक, वित्तीय तथा राजस्व संबंधी परामर्श देता था तथा परगनों में हाकिम की नियुक्ति की सिफारिश करता था।
- जिन राज्यों में प्रधान पद का प्रावधान नहीं था वहाँ दीवान प्रधान का कार्य भी करता था।
- राजा की अनुपस्थिति में वह राज्य संभालता था तब उसे 'देश दीवान' कहा जाता था।

4. **बख्शी -** यह सैन्य विभाग का अध्यक्ष होता था। सैनिक विभाग का मुखिया होने के नाते सेना के वेतन, रसद, सैनिकों का शिक्षण तथा अनुशासन आदि को देखता था।
- इसके कार्य संबंधी पत्रों से अनुमान लगाया जा सकता है कि वह पशु संबंधी रोगों का निदान करता था और उनका उपचार भी जानता था। संभवतः सैनिक अध्यक्ष होने से उसे पशु चिकित्सा में भी विशेषज्ञ होना पड़ता हो।
- नायब बख्शी, खबर नवीस व किलेदार इसके अधीनस्थ कर्मचारी थे।
- जोधपुर में इसे 'फौज बख्शी' कहा जाता था।

5. **खानसामा -** यह राजपरिवार के सबसे निकटस्थ अधिकारी होता था। यह दीवान के अधीन होता था। यह निर्माण कार्य, वस्तुओं का क्रय, राजकीय विभागों के सामान की खरीद और संग्रह का कार्य करता था। राज्य के सभी कारखानों से उसका सीधा सम्बन्ध होता था।
- यह राजमहल (राजप्रासाद व राजदरबार) की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। अतः राजा इस पद पर बहुत ही ईमानदार व्यक्ति को नियुक्त करता था।

6. **कोतवाल -** चौरी-डकेती का पता लगाना, वस्तुओं के दामों को निर्धारित करना, नाप-तौल पर नियंत्रण रखना, चौकसी का प्रबंध करवाना, मार्गो की देखभाल करना, साधारण झगड़े निपटाना तथा नगर में शांति व्यवस्था स्थापित करना आदि कार्य कोतवाल द्वारा संपादित किये जाते थे।
7. **खजांची -** राजकीय कोष का हिसाब-किताब रखता था। मेवाड़ में इसे कोषपति कहा जाता था।
8. **मीरमुंशी -** राज्य में कूटनीतिक पत्र-व्यवहार करने वाला मंत्री।
9. **ड्योढ़ीदार -** महल की सुरक्षा, देखरेख व निरीक्षण का दायित्व।
10. **हाकिम -** यह परगने का सर्वोच्च अधिकारी होता था जो सीधा महाराजा या प्रधान के आदेश से राजा के द्वारा नियुक्त किया जाता था।
- इसकी नियुक्ति राजा के खास रक्के या प्रधान के आदेश से होती थी।
- यह परगने का मुख्य न्यायाधिकारी होता था। खालसा क्षेत्र में न्याय का कार्य हाकिमों द्वारा किया जाता था।

11. **फौजदार -** परगने का दूसरा सर्वोच्च अधिकारी होता था, जो पुलिस और सेना का अध्यक्ष होता था।
- यह परगने की सीमा की सुरक्षा का प्रबंध रखता था।
- यह अमलगुजार, अमीन तथा आमिल को राजस्व वसूल करने के संबंध में सहायता पहुंचाता था।

12. **आमिल -** परगने का सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी जिसका कार्य परगनों में भू-राजस्व की दरें लागू करना तथा भू-राजस्व वसूलना था।
- कानूनगो, पटेल, पटवारी तथा चौधरी इस कार्य में आमिल की सहायता करते थे।

13. **पोतदार -** परगने का खजांची।
14. **दफेदार -** राजस्व का लेखा-जोखा रखने वाला अधिकारी।।
15. **मुत्सद्दी -** रियासतो में प्रशासन का संचालन करने वाला कर्मचारी वर्ग।
16. **शिकदार -** यह मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के कोतवाल के समान होता था तथा यह गैर-सैनिक कर्मचारियों के रोजगार से संबंधी कार्य देखता था।
17. **नायब बख्शी -** यह सेना और किलों पर होने वाले खर्च का विवरण रखता था और सामंत की 'रेख' का भी हिसाब रखता था।

दरोगा-ए-डाक चौकी	डाक प्रबंध
दारोगा-ए-शायर	दाण (चुंगी) वसूली हेतु
वाकया-नवीस	सूचना भेजने के लिए
दरोगा-ए-आबदार	खाना-पानी का दरोगा
दरोगा-ए-फराशखाना	सामान के विभाग का प्रमुख
दारोगा-ए-नवकार	बाजे व नगाड़ों का विभागाध्यक्ष
मुंशरिफ	अर्थ विभाग का सचिव
कानूनगो	भूमि कर वसूली हेतु
तलारक्ष / दुर्गाधिपति	दुर्ग का प्रमुख

राजस्व व्यवस्था

- मध्यकाल में कृषि ही आय का मुख्य स्रोत था, इस दृष्टि से भूमि और उस पर उत्पादित फसल पर लगान वसूल करने वाली संस्था का विशेष महत्व था।

मध्य काल में भूमि निम्नलिखित दो भागों में विभाजित थी-

1. **खालसा भूमि -** यह सीधे शासक के नियंत्रण में होती थी। अतः इसे केन्द्रीय भूमि भी कहा जा सकता है।
2. **जागीर भूमि -** यह भूमि सामंतों या जागीरदारों के नियंत्रण में होती थी।
- जागीर फारसी भाषा का शब्द है। प्रो. इरफान हबीब ने जागीर शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है- **"जागीर दो शब्द जय + गीर का संयुक्त रूप है, जिसका शाब्दिक अर्थ है राज्य द्वारा प्रदत्त भूमि का वह भाग जिससे उस भू-क्षेत्र से राजस्व वसूल करने का वैधानिक अधिकारी होता था।"**
- जागीरदार इस भूमि को न तो बेच सकता था और न ही किसी अन्य के नाम स्थानान्तरित कर सकता था। बड़े जागीरदार को ठाकुर कहा जाता था। 'कामदार' उस ठिकाने के राजस्व और सामान्य प्रशासन को देखता था। जागीरदार की निःसंतान मृत्यु होने पर उसकी जागीर खालसा करली जाती थी जिसे 'राजगामिता' कहा जाता था।

जागीर भूमि के प्रकार -

- **(क) सामन्त जागीर -** राजा द्वारा अपने भाई-बंधुओं तथा निकट संबंधियों की दी जाने वाली भूमि जिस पर उनका वंशानुगत अधिकार होता था, सामंत जागीर कहलाती थी।
- **(ख) हुकुमत जागीर -** राजा द्वारा अपने कर्मचारी (मुत्सद्दी) को वेतन के बदले दी जाने वाली जमीन जिस पर उसका वंशानुगत अधिकार नहीं होता था, हुकुमत जागीर कहलाती थी।

- **(ग) भौम जागीर -** राज्य की सेवा में बलिदान देने वाले शहीदों के परिवारों को दी जाने वाली जागीर भौम जागीर कहलाती थी। यह जागीर वंशानुगत व अवंशानुगत दोनों प्रकार की होती थी।
- **(घ) सासण जागीर -** धर्मार्थ (मंदिर-मस्जिद), शिक्षण कार्य, साहित्य लेखन कार्य करने वालों तथा चारनों व भाटों को अनुदान स्वरूप दी जाने वाली भूमि सासण जागीर कहलाती थी।
- यह जागीर कर मुक्त होती थी। इसलिए इसे 'माफी जागीर' भी कहा जाता है।

उपयोग के आधार पर भूमि के प्रकार

- उपयोग के आधार पर भूमि दो प्रकार की होती थी- कृषि भूमि व चरनोता भूमि।
- कृषि भूमि वह थी जो कि खेती योग्य हो और चरनोता भूमि पर पशुओं के लिए चारा उगाया जाता था, जिसे आधुनिक राजस्व भाषा में चरागाह या गोचर भूमि कहा जाता है। वस्तुतः चरनोत भूमि सार्वजनिक भूमि थी। इस पर किसी का भी अधिकार नहीं होता था।
- कृषि भूमि दो प्रकार की होती थी- बारानी और उन्नाव।
- असिंचित या बरसात के पानी से सिंचित भूमि बारानी व तालाब, कुंओं बावड़ियों आदि से सिंचित भूमि उन्नाव व पीवल कहलाती थी।
- किसान मुख्यतः दो प्रकार के होते थे- बापीदार और गैर-बापीदार।

बापीदार किसान	गैर-बापीदार किसान
1. इन्हें खुदकाश्त' भी कहा जाता है।	1. इन्हे 'शिकमी काश्कातर' या 'पाही काश्तकार' भी कहा जाता था।
2. इनका भूमि पर वंशानुगत अधिकार होता था।	2. इनके पास स्वयं की जमीन नहीं होती थी। इसलिए इन्हें 'खेतीहर मजदूर' भी कहा जाता था।
3. राज्य द्वारा इन्हें भूमि का पट्टा दिया जाता था जिसे 'दाखला' कहते थे।	3. ये भूमि के स्वामी नहीं थे। अतः इनके पास 'दाखला' नहीं होता था।

लगान वसूली की विधि (भू-राजस्व निर्धारण की विधियों)

- शासक, सामंत, जागीरदार एवं अधिकारी कृषकों से लगान वसूली के लिए अग्रलिखित विधियां अपनाते थे:-

1. **लाटा या बटाई विधि -** इसमें भू-राजस्व या लगान का भुगतान फसल के रूप में होता था।
   - इस पद्धति में फसल करने योग्य होने पर लगान वसूली के लिए नियुक्त अधिकारी की देखरेख में फसल की कटाई की जाती थी।
   - धान साफ होने के बाद फसल में से राजस्व के लिए दिए जाने वाले वाला भांग तौल कर अलग कर दिया जाता था।
   - भू-राजस्व निर्धारण की इस पध्दति को भाओली / गलाबख्शी / दानाबन्दी भी कहा जाता था।
2. **कुंता विधि -** इस विधि के अनुसार खड़ी फसल को देखकर अनुमानित लगान निर्धारण किया जाता था। कूंता विधि में तोल या माप नहीं किया जाता था।
3. **मुकाता -** भु-राजस्व का एकमुश्त निर्धारण।
4. **डोरी -** भूमि को नापकर उसका भू-राजस्व निर्धारण करना।
5. **घूघरी -** प्रति कुंआ अथवा खेत की पैदावार की मात्रा निश्चित कर राजस्व वसूला जाता था।
   - इस कर की दूसरी विधि के अनुसार शासक या सामंत किसान को जितनी घूघरी अर्थात् बीज देता था, उतना ही अनाज लगान के रूप में लेता था।
6. **इजारा -** यह राजस्व की ठेका प्रणाली थी। इसे ठेका अथवा आकबंदी के नाम से भी जाना जाता था।
   - इसके अनुसार एक निश्चित परगना अथवा क्षेत्र से राजस्व वसूली का अधिकार सार्वजनिक नीलामी द्वारा उच्चतम बोली लगाने वाले की निश्चित अवधि के लिए दे दिया जाता था।
7. **जब्ती -** यह भू-लगान निर्धारण की विधि थी। इसका प्रारंभ टोडरमल ने किया था।
   - नकदी फसलों (गन्ना, कपास, अफीम, नील) पर प्रति बीघा की दर से राजस्व का निर्धारण तथा वसूली जब्ती कहलाता था।
8. **बीघोड़ी -** मारवाड़ व बीकानेर राज्यों में बीघे के आधार पर लिया जाने वाला कर।
9. **कनकूत -** इस प्रणाली के तहत राजस्व का निर्धारण खड़ी फसल का अनुमान लगाकर किया जाता था।

भू-राजस्व प्रशासन से संबंधित शब्दावली

1. **जाजम -** भूमि के विक्रय पर लिया जाने वाला कर।
2. **अड्सट्टा -** जयपुर राज्य का भूमि संबंधी रिकॉर्ड।
3. **खालसा -** राज्य के स्वामित्व (सीधे राजा के अधीन) वाली भूमि / राजा की निजी सम्पति।
4. **भौम -** वह भूमि जिस पर कोई लगान नहीं था।
5. **जागीर -** राज्य सेवा, सैनिक सेवा या अन्य सेवा के बदले दी गई भूमि।
6. **चरनौता -** गोचर या चरागाह भूमि।
7. **छटून्द -** मेवाड़ राज्य में जागीरदार द्वारा अपनी आय का 1/6 भाग शासक को दिया जाता था जिसे छटूंद कहा जाता था।
8. **शहने / साहतो -** यह भू-राजस्व में राज्य का भाग निश्चित करने वाला अधिकारी था।
9. **तफेदार -** यह कर्मचारी गाँव में राज्य द्वारा वसूले जाने वाले कर का हिसाब रखता था।
10. **उद्रंग -** उपज पर कर (उपज का 1/6, 1/8, या 1/10)
11. **भोग -** अनाज के रूप में लिया जाने वाला कर।
12. **हिरण्यक -** नकद के रूप में लिया जाने वाला कर।
13. **हासिल / लगान -** एक प्रकार का भू-राजस्व।
14. **आभाव्य -** छोटे करों को आभाव्य कहा जाता था। जैसे- कोश्य, वेणी, खलभिक्षा, कन्धक आदि।
15. **कोश्य -** पिलाई कर।
16. **वेणी -** बांस या भारा पर कर।
17. **खलभिक्षा -** नाई, धोबी व कुम्हार पर लगने वाला कर।
18. **कन्धक -** कंधे पर ले जाने वाले सामान पर लगने वाला कर।
19. **हवालौ -** भूमि का लगान वसूल करने वाला विभाग।
20. **मदद-ए-माश -** मध्यकालीन राजस्थान में विद्वानों (चारण, भाट तथा ब्राह्मण) व धार्मिक व्यक्तियों को अनुदान में दी जाने वाली भूमि।
21. **डोली / डोहली -** यह पुण्यार्थ (मंदिर को) दी जाने वाली भूमि थी जो केवल राजा या सामंत द्वारा प्रदान की जाती थी। यह भूमि सभी प्रकार के कर एवं मूल्याकंनों से मुक्त थी।
22. **पसातिया -** यह सभी प्रकार के लगानों से मुक्त भूमि थी जो राज्य को सेवा प्रदान करने वाले व्यक्ति को दी जाती थी। व्यक्ति

की राज्य सेवा समाप्त होने पर इस भूमि को पुनः राज्य अधिकार में ले लिया जाता था।

23. **तिवारा कर -** दीपावली एवं होली जैसे त्योहारों पर लिया जाने वाला कर।
24. **खरड़ा -** ब्रिटिश काल में राजस्थान की श्रमजीवी जातियों से वसूली जाने वाली राशि।
25. **दाण -** राज्य के बाहर से बिक्री के लिए आने वाले पशुओं तथा वस्तुओं पर लगने वाला चुंगी कर दाण कहलाता था।
26. **सायर -** पारगमन शुल्क।
27. **आबियाना -** सिंचाई कर।

उपजाऊपन व उत्पादकता के आधार पर भूमि का वर्गीकरण

1. माल	काली उपजाऊ भूमि
2. मगरा	पहाड़ी भूमि
3. बीड़	नदी-नाले के समीप वाली भूमि
4. गोरमो	गाँव के पास वाली भूमि
5. चरनौता गोचर	चरागाह भूमि
6. पीवल / ऊनाव	सिंचित भूमि
7. बारानी	असिंचित भूमि
8. डीमड्डू	कुँए या गड्ढे के पास वाली भूमि
9. हकत-बकत	जोती जाने वाली भूमि
10. बंजर	अनुपजाऊ भूमि
11. गलत हाँस	पानी से भरी भूमि
12. कोशवाहक	चड्स से सींची जाने वाली भूमि
13. कच्छ भूमि	नदी के किनारे वाली भूमि
14. चाही भूमि	सिंचित भूमि (जिसमें कुओं, तालाबों, नहरों आदि से सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हो)
15. तलाई	तालाब के पेटे की भूमि जिसमें बिना सिंचाई फसल होती थी।
16. कांकड़	कंकर-पत्थर वाली जमीन / यह नाम गाँव की सीमा के लिए भी प्रयुक्त होता था।

- भरतपुर रियासत में महाराजा सूरजमल के समय कृषि की उन्नति हेतु दृढ़ नीति निर्धारित की गई, फलस्वरूप राजा सूरजमल के शासन के अंतिम वर्ष 1763 ई. में भरतपुर राज्य की कृषि से आय 17.5 लाख रूपये प्रतिवर्ष थी।
- मध्यकाल (16वीं-17वीं शताब्दी) में बयाना (भरतपुर) नील की खेती के लिए प्रसिद्ध था। उच यात्री फ्रेंकोइस पैल्सर्ट ने इसका उल्लेख किया है।
- उच्च जातियों के व्यक्तियों तथा राज्याधिकारियों का ऐसा वर्ग जिन्हें कृषि में रियायते दी जाती थी, उन्हें 'घरुहाला' कहा जाता था।
- राजस्व वसूली की सुविधा हेतु प्रत्येक परगना गाँवों के समूहों में विभाजित था जिसे 'तपो' कहा जाता था।
- गाँव में ही स्थायी रूप से रहने वाला कृषक 'गेवती' तथा दूसरे गाँव से आकर खेती करने वाला कृषक 'पाही' कहलाता था।
- मध्यकालीन राजस्थान में रहेंट, पावटी, चड्स, ठीकली, इडोणी, सांपल्या आदि सिंचाई के प्रमुख यंत्र थे। रहेट का प्रयोग केवल पर्वतीय स्थानों में होता था। कुंए पर लगा हुआ लकड़ी का तुला - यंत्र 'ढिकली' कहलाता था। पैरो के बल पर चलाया जाने वाला रहट 'पगपावटी' कहलाता था।
- मध्यकाल में राज्य की अर्थव्यवस्था का मूलाधार भू-राजस्व था। भूमि का स्वामित्व राजा में निहित था। भू-राजस्व को लगान, भोग, भोज व हासिल आदि कहा जाता था।
- यद्यपि भूमि का स्वामित्व राजा में निहित था तथापि भूमि का मालिक किसान ही होता था। राजस्थान में प्रचलित एक कहावत का कर्नल जेम्स टॉड ने उल्लेख कर शासक कृषक भू-राजस्व पर प्रकाश डाला है, कहावत थी- "भोग रा धनी राज हो, भोम रा धणी मा छौ।" अर्थात् भूमि (भौम) का मालिक जोतने वाला (किसान) तथा राजा राजस्व (भोग) का अधिकारी था।
- किसानों को दी जाने वाली जागीर का पट्टा जागीरदार के रजिस्टर में दर्ज रहता था जिसे 'दाखला' कहते थे'।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1807 ई. में कोटा राज्य में झाला जालिम सिंह ने भूमि बंदोबस्त करवाया था।
- ब्रिटिशकाल में मेवाड़ में भूमि बंदोबस्त की साद प्रथा प्रचलित थी। इसके तहत मेवाड़ क्षेत्र के किसानों से लगान की अदायगी के लिए राज्य द्वारा स्थानीय महाजन से आश्वासन लिया जाता था। इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित रहने लगा और उनके चंगुल में फंस गया।

अन्य कर एवं लाग-बाग

1. **सिंगोटी -** मवेशियों के विक्रय के समय वसूल की जाने वाली लाग।
2. **मूंगा लाग -** मवेशी चराने का कर अर्थात् चराई कर।
3. **घासमारी -** खालसा की पड़त भूमि पर पशुओं को चराने के लिए राज्य को दिया जाने वाला कर।
4. **कुंवरजी का कलेवा -** जागीरदारों के पूत्रों के जेब खर्च के लिए लिया जाने वाला कर।
5. **बाई बराड़ -** राजकुमारी के विवाह पर जनता से लिया जाने वाला कर।
6. **बाईजी की लाग -** जागीरदार के पूत्री का जन्म होने पर किसानों से वसूली जाने वाली लाग।
7. **कंदोई लाग -** हलवाइयों से वसूल की जाने वाली लाग।
8. **कारज लाग -** जागीरदार की मृत्यु पर खर्च हेतु वसूल की जाने वाली लाग।
9. **गंगाजी की लाग -** स्वर्गीय जागीरदार की भस्म (राख) को गंगाजी में डालने पर नए जागीरदार द्वारा प्रत्येक किसान से 1-2 रुपया गंगाजी की लाग के रूप में वसूला जाता था।
10. **काँसा पारोसा/काँसा लाग -** सामंत द्वारा मृत्युभोज या विवाह के अवसर पर यह कर जनता द्वारा वसूला जाता था।
11. **चंवरी लाग -** सामंत द्वारा किसानों से लड़की के विवाह पर बदला जाने वाला कर। बिजौनिया के सामंत राव कृष्ण सिंह ने 1903 ई. में लड़की के विवाह पर 5 रूपए चंवरी कर लगाया था।
12. **खरड़ा -** श्रमजीवी जातियों जैसे मोची, कुम्हार, छीपा, भांबी इत्यादि से वसूल की जाने वाली लाग।
13. **अंग लाग -** प्रत्येक किसान के परिवार के प्रत्येक सदस्य से जो पाँच वर्ष से ज्यादा आयु का होता था प्रति सदस्य एक रुपया लिया जाता था।

14. **कमठा लाग -** गढ़ (दुर्ग) निर्माण एवं मरम्मत हेतु लिया जाने वाला कर, जो दो रूपया प्रति घर था।
15. **चीला लाग -** जागीरदार द्वारा अपने ठिकाने की सीमा में से गुजरने वाली प्रत्येक गाड़ी से 6 पाई प्रति गाड़ी चीला लाग ली जाती थी।
16. **मालया मिलणो -** जागीरदार द्वारा व्यापारियों व किसानों से ली जाने वाली भेंट।
17. **खीचड़ी लाग -** राज्य की सेना जब किसी गाँव के पास पड़ाव डालती है, तब सेना के भोजन हेतु ग्रामवासियों से वसूल की जाने वाली लाग खीचड़ी लाग कहलाती थी।

- इनके अतिरिक्त राज्य की आय के लिए कई कर होते थे जैसे- मटक, विछायत, चू-सराई, धूतों, अवाने, बहो, टीष आदि।
- मध्यकालीन राजस्थान में कमोबेश प्रत्येक रियासत बस में जनता द्वारा गृहकर लिया जाता था। मेवाड़ में इसे घर गिनती बराड, कोटा में 'घर बराड़', जयपुर में घर की बिछौती बीकानेर में 'धुंआ भाछ' तथा मारवाड़ में 'घर गिनती' या 'घर बाब' कहा जाता था।
- विधवा के पुनर्विवाह के अवसर पर प्रति विवाह एक रुपए की दर से 'कागली' या 'नाता' कर लिया जाता था। मेवाड़ में 'नाता बराड़', कोटा में 'नाता कागली' बीकानेर में 'नाता' व जयपुर राज्य में इसे 'छैली राशि' नाम से जाना जाता था।

व्यापार-वाणिज्य

- मध्यकाल में राजपूत राज्यों से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में नमक, अफीम, कपास, संगमरमर, चमड़ा तथा ऊँन व उनी वस्त्र इत्यादि थी।
- ऊँन के निर्यात में जैसलमेर का प्रमुख स्थान था। पाली संपूर्ण उत्तरी भारत का एक बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र था।
- पाली के मार्ग से ही मालवा की अफीम चीन व पश्चिमी एशिया को निर्यात की जाती थी।
- मध्यकाल में परिहवन के लिए मुख्यतः ऊँटों, घोड़ो, गधो व बैलगाड़ियों का प्रयोग किया जाता था। माल ढोने का कार्य मुख्यत: बनजारे करते थे।
- बनजारो (बालदियो) के पास हजारों बैल होते थे जिन पर माल लादा जाता था।
- बनजारों के सार्थवाह (बैलों के समूह या काफिले) को स्थानीय भाषा में 'बालद या बाळद' कहा जाता था।
- निर्यात का कार्य मुख्यतः बनजारे करते थे। सागर झील के नमक (क्यार या सांभरी) का निर्यात उत्तर प्रदेश, हरियाणा व मध्य प्रदेश तथा पंचपदरा (बालोतरा) के नमक 'कोसिया' का निर्यात राजपूताना व मध्यप्रदेश को एवं डीडवाना के नमक 'डीडू' का निर्यात मुख्यत: पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश को किया जाता था।
- राजपूताना और मध्यप्रदेश की अफीम को 'मालवा अफीम' कहा जाता था।
- रियासतकाल में 'घासिया-कसुम्बों' (अफीम का गोल पिलाकर) मेहमान का स्वागत किया जाता था।
- आयात की जाने वाली वस्तुओं में नारियल, छुआरा, सूखे मेवे, हाथी, घोड़े शराब, सोना, मखमल, बनारसी साड़ियाँ, बुरहानपुरी कपड़ा, बूटेदार गुजराती रेशम व सारंगपुर की पगड़ियाँ इत्यादि थी।
- मेवाड़ में 'लेन-देन' से पहले महाराणा की सौगन्ध ली जाती थी जिसे 'आण' कहा जाता था।
- ब्रिटिश सरकार के अंग्रेज अधिकारी ईडन द्वारा नियुक्त पुलिस सुपरिटेंडेंट निजामुद्दीन ने 23 दिसम्बर 1863 ई. को आण प्रथा को गैर-कानूनी घोषित किया।
- मध्यकाल में वस्तु विनिमय भी प्रचलित था। लोग अनाज से सब्जी व अन्य वस्तुएँ खरीदते थे। मेवाड़ में ऐसे अनाज को 'कीणा' कहा जाता था।

सैन्य व्यवस्था

- मध्यकालीन राजस्थान की सैन्य व्यवस्था पर मुगल सैन्य व्यवस्था का प्रभाव दिखाई देता है।
- सेना का सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था। सेना मुख्यतः दो भागों में विभाजित थी:- (i) अहदी (ii) जमीयत
- राजा की सेना को अहदी तथा सामंतों की सेना को जमीयत कहा जाता था।

सैनिकों के प्रकार -

1. **प्यादे (पैदल सैनिक) -** राजपूतों की सेना में सबसे बड़ी शाखा प्यादे (पैदल सैनिकों) की थी। पैदल सेना में भी दो प्रकार के सैनिक थे-
   (i) अहशमा सैनिक तथा (ii) सेहबन्दी सैनिक

- 'अहशमा सैनिक' तीर, कमान, भाला, तलवार इत्यादि का प्रयोग करते थे।
- 'सेहबन्दी' सैनिकों की भर्ती बेरोजगार लोगों में से की जाती थी। इनकी भर्ती अस्थायी होती थी और सेहबंदी सैनिक मालगुजारी वसूल करने में सहायता करते थे।

2. **सवार -** इसमें घुड़सवार एवं शुतरसवार (ऊँट) सैनिक शामिल थे जो राजपूत सेना के 'प्राण' माने जाते थे।

- सेना में दो प्रकार के घुड़सवार होते थे- (i) बारगीर तथा (ii) सिबेदार
- बारगीर नामक सैनिकों को घोड़े व सारा सामान राज्य की ओर से मिलता था जबकि सिलेदार को घोड़ों व अस्त्र-शस्त्र की व्यवस्था स्वयं करनी पड़ती थी। इनका वेतन 'बारगीर' से ज्यादा होता था।
- घुड़सवारों को वेतन घोड़ों की नस्ल के आधार पर दिया जाता था।
- सर्वाधिक वेतन 'काल्डा' सवार एवं 'ताजी' सवार' को क्रमशः 20 रुपए एवं 16 रुपए मासिक मिलता था।
- भरतपुर के महाराजा जवाहर सिंह (1763-68 ई.) ने अपनी सेना में विदेशी सैनिको की भी भर्ती की थी।
- फ्रेंच समरू व रेने मादे को उसने अपना सैनिक कमाण्डर नियुक्त किया था।
- जयपुर के महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने भी फ्रेंच सेनानायक 'द बॉय' तथा जर्मन सेनापति 'समरू' की सेवाएं प्राप्त की थी।
- कस्बों की सेना का अधिकारी 'बलाधिकृत' होता था।
- **तोपखाना -** यह दो भागों में विभाजित था। भारी तोये 'जिन्सी' या 'रामचंगी' जबकि हल्की तोपें 'दस्ती' कहलाती थी।
- तोपों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने वाले विविध वाहनों के नाम पर भी जाना जाता है। जैसे-

(i) **गजनाल या हथनाल -** हाथी की पीठ पर लादकर ले जाने वाली तोपें।

(ii) **शुतुरनाल या जुजरबा** - ऊँट पर ले जाई जाने वाली छोटी तोपें।

(iii) **नरनाल** - लोगों की पीठ पर ले जाने वाली हल्की तोपें।

(iv) **रैकलो या रहकला** - पहियों वाली गाड़ी पर लगी हल्की तोपें जिन्हें बैलों द्वारा खींचा जाता था।

- 'गजनाल' व 'नरनाल' का उल्लेख अबुल फजल के संत 'आसे अकबरी' में भी हुआ है।
- युद्ध के समय सेना के अग्रिम भाग को 'हरावल' कहा जाता था। मेवाड़ रियासत में हरावल का सौभाग्य "चूण्डावतों'' को प्राप्त था। सेना के पृष्ठ भाग को 'चंदावल' कहा जाता था।
- हाथी, घोड़े, रथ व पैदल चार अंगों से सजी हुई पूर्ण सेना को 'चतुरंगिनी' कहा जाता था।
- सैन्य विभाग (शस्त्रागार) को 'सिलेहखाना' कहा जाता था। ऊँटों की सेना के प्रबंध हेतु गठित विभाग 'शुतरखाना' कहलाता था।

प्रमुख नायक	
सैन्य विभाग का प्रमुख	बख्शी
हाथी सेना का प्रमुख	पीलूपति
पैदल सेना का प्रमुख	पायकाधिपति
घुड़सवार सेना का प्रमुख	महाअश्वपति
रथ सेना का प्रमुख	स्यन्दपति
किले का प्रमुख	कोट्टपाल

न्याय व्यवस्था

- मध्यकालीन राजस्थान में परंपरागत न्याय व्यवस्था थी। राजा सर्वोच्च न्यायाधीश होता था।
- सामंत या ठिकानेदार अपनी जागीर में प्रमुख मुख्य न्यायाधीश की स्थिति रखता था।
- खालसा क्षेत्र में हाकिमों द्वारा न्याय का कार्य किया जाता था।
- बड़े अपराध एवं मृत्युदण्ड संबंधित विवादों में अंतिम निर्णय राजा का होता था।
- न्याय का मुख्य स्रोत व मुख्य आधार शासक होता था। स्मृतियाँ, धर्मशास्त्र, रीति-रिवाज व लोकाचार न्याय निर्णय के आधार थे।
- न्याय व्यवस्था का प्रथम सोपान छोटी अदालतों का था जहाँ राज्य के अधिकारी जिन्हें तलारक्ष, दण्डपाशिक, आरक्षक कहा जाता था, मामले की जाँच-पड़ताल करते थे।
- छोटे मामले गाँव की पंचायत या नगर का महामात्र सुलझा देता था।
- बीकानेर व जोधपुर में न्याय 'दरोगा-ए-असाल अदालत' करती थी। परगनों में हाकिम न्याय करते थे।
- इनके फैसलों की अपील दरोगा-ए-अदालत में हो सकती थी। अंतिम अपील राजा के पास होती थी। न्याय का आधार परम्परागत सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था थी।
- न्याय व्यवस्था के अनुसार सामंत को 'सरणा' (शरणागत) का अधिकार था। यदि कोई सामंत की शरण में चला जाता था तो उसकी रक्षा करना सामंत की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता था।
- कई बार अपराधी भी सामंत की शरण में चले जाते थे, जिसका समाज और न्याय व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता।
- मध्यकालीन न्याय व्यवस्था की मुख्य विशेषता न्याय का सस्ता, शीघ्र और सुलभ होना था। उस समय दण्डविधान भी कठोर नहीं थे।
- मेवाड़ में महाराणा शंभू सिंह ने न्यायिक प्रणाली में सुधार के लिए 1869 ई. में 'महकमा खास' की स्थापना की थी।
- महाराणा सज्जन सिंह (मेवाड़) ने 1877 ई. में 'इजलास खास' व 1880 ई. में 'महेन्द्रराज सभा' की स्थापना की थी। महेन्द्रराज सभा मेवाड़ की सर्वोच्च न्यायिक संस्था थी।

मध्यकालीन राजस्थान में स्वायत्त शासन का स्वरूप

1. **संघ** - जैन ग्रंथों से हमें ज्ञात होता है कि राजस्थान के गाँवों में तथा कस्बों में संघ नाम की एक संस्था होती थी जिसकी सदस्यता एतद् सम्बन्धी गाँव के कुछ एक सयाने व्यक्ति करते थे।
- संघ का मुख्य कार्य यह रहता था कि वह धार्मिक उत्सवों, पर्वो, प्रवचनों, धर्म-यात्राओं और संघो के कार्यक्रमों तथा धार्मिक संस्थाओं के संबंध में निर्णय ले और उसकी उचित व्यवस्था करे। संघ का प्रमुख 'संघपति' कहलाता था।

2. **गोष्ठी** - इनका कार्य किसी व्यवस्था या धार्मिक संस्था की देखरेख रहता था मंदिरों की व्यवस्था के लिए भी गोष्ठियाँ थी, तो विशेष व्यवसायों के लिए भी।
- इसके पास एक धनराशि भी रहती थी जो मण्डपिका के करों से या अनुदान से बनती थी और उसका उपयोग उस व्यवसाय से संबंध रखने वाले व्यक्तियों के लिए होता था।
- सुनारों, लुहारों, दर्जियों आदि की गोष्ठियाँ विशेष रूप से उन व्यवसायों के परिवर्द्धन में लगी रहती थी।

3. **पंचकुल** - पंचकुल एक स्थानीय संस्था होती थी जिन्हे अर्द्ध-सामाजिक और अर्द्ध-राजनीतिक कहा जा सकता है।
- पंचकुलों का प्रमुख कार्य भूमि से संबंधित था। जिसमें भूमि का बदलना, उसका नाप, उपज की व्यवस्था करना आदि था। सरकार द्वारा जो भी भूमि संबंधी आदेश होते थे उनका परिपालन पंचकुल के द्वारा करवाया जाता था।
- इस संस्था द्वारा क्रय-विक्रय पर कर लगाये जाते थे और उसका कुल अंश लोकोपकारी कामों में व्यय किया जाता था।
- इसमें पाँच या पाँच से अधिक व्यक्ति होते हो जो भूमि संबंधी झगड़े निपटाते थे।
- इन पंचकुलों में एक या दो कर्णिक (राजकीय अधिकारी जैसे मंत्री, आमात्य, महामात्य) होते थे जो राज्य का प्रतिनिधित्व करते थे।

4. **पंचायत** - पंचकुल की यह परम्परा पंचायत, पोतरा, चोरा, हथाई आदि संस्थाओं में देखी जाती थी।
- गाँवों की पंचायते अपनी-अपनी सीमाओं में होने वाले भूमि संबंधी झगड़ों तथा खेती की सरहद के फैसले करती थी।
- जन्म-मृत्यु की गणना का ब्यौरा भी रखा जाने लगा था।
- उन्नीसवी शताब्दी के पुरालेखों से प्रतीत होता है कि इन पंचायतों का काम चौधरी द्वारा किया जाने लगा जो अपने आपको सरकार के प्रति उत्तरदायी मानता था।

5. **जातीय पंचायत** - सामाजिक संस्था के रूप में हमें जातीय पंचायतें प्रत्येक गाँव, कस्बे तथा नगरों में मिलती है। जितनी जातियाँ एक स्थान में होती थीं उतनी ही पंचायतें वहाँ रहती थीं।
- आज भी इनका वही स्वरूप दिखायी देता है, परन्तु उसका मध्ययुगीन प्रभाव नहीं दिखायी देता।
- इन सभी जातीय पंचायतों का स्वरूप तथा कार्य-क्षेत्र लगभग एक-सा ही होता था।

- ये पंचायतें विवाह सम्बन्धी झगड़ों, व्यभिचार के आरोपों, कुटुम्ब की कटुताओं तथा जाति के सदस्यों की अशिष्टता सम्बन्धी कार्यों की जाँच किया करती थीं और उस सम्बन्ध में दण्ड तजबीज किया करती थी।
- खुली बैठक में जाँच का ढंग अपनाया जाता था और आमतौर से खुले रूप में ही फैसलें सुनाये जाते थे।

शासक वर्ग से सम्बन्धित राजकीय आदेश

- **हस्बुल हुक्म** - इसके तहत शाही परिवार के किसी सदस्य अथवा वजीर द्वारा प्रेषित आदेश जिसमें किसी व्यक्ति को कोई स्वीकृति दी जाती थी तथा जिसमें बादशाह की सहमति होती थी।
- **खरीता** - एक राजा द्वारा दूसरे राजा को लिखा जाने वाला पत्र खरीता कहलाता है। इनका संग्रह "खतूत संग्रह" कहलाता है।
- **परवाना** - राजा द्वारा अधीनस्थों को लिखा जाने वाला पत्र परवाना कहलाता है।
- **अर्जदाश्त** - प्रजा द्वारा राजा को लिखा जाने वाला पत्र अर्जदाशत कहलाता है।
- **फरमान** - मुगल बादशाह द्वारा जारी शाही आदेश। जयपुर रिकॉर्ड में 140 फरमान सुरक्षित है।
- **मंसूर** - मुगल बादशाह की उपस्थिति में शहजादे द्वारा जारी किये जाने वाले शाही आदेश। जयपुर रिकॉर्ड में 18 मंसूर सुरक्षित है।
- **सनद** - यह एक प्रकार की स्वीकृति होती थी, जिसके द्वारा मुगल सम्राट अपने अधीनस्थ राजा को जागीर प्रदान करता था।
- **निशान** - बादशाह के परिवार के किसी सदस्य (मुगल शहजादों व बेगमों) द्वारा मनसबदार को अपनी मोहर के साथ जारी किये जाने वाले आदेश 'निशान' कहलाते थे। जयपुर रिकॉर्ड में 132 निशान सुरक्षित है।
- **रुक्का** - राज्य के अधिकारियों के मध्य के पत्र-व्यवहार को 'रुक्का' कहा जाता है।
- **अखबारात** - राज्य और दरबार की कार्यवाहियों की प्रोसिडिंग्स को अखबासत कहा जाता है। यह मुगल दरबार द्वारा प्रकाशित दैनिक समाचारों का संग्रह है। इनसे मुगल दरबार की महत्वपूर्ण नियुक्तियाँ एवं राजस्थान के विभिन्न शासकों के कार्य-कलापों की जानकारियाँ मिलती है।
- **वकील रिपोर्टस** - मुगल राज्यों में राजपूत राज्यों का एक प्रतिनिधि रहता था, जिसे वकील कहा जाता था। इन वकील के माध्यम से शासकों को मुगल दरबार की गतिविधियों की रिपोर्ट प्राप्त होती थी, जो वकील रिपोर्ट कहलाती थी।
- **सियाह हुजूर** - यह जयपुर राज्य से संबंधित है। इसमें राजपरिवार के दैनिक खर्चे लिखे जाते थे।
- **दस्तूर कौमवार** - यह भी जयपुर राज्य से संबंधित है। यह 32 जिल्दों में सुरक्षित है।
- इसमें राज्य के अधिकारियों का नाम एवं जातिवार ब्यौरा मिलता है।
- इसमें जयपुर राज्य से संबंधित आय-व्यय, भेंट, उपहार आदि का विवरण प्राप्त होता है।
- इसमें जयपुर राज्य की सेवा करते हुए जिन्हें पद एवं इनाम प्राप्त हुए उनका विवरण है।
- दस्तूर कौमवार से जयपुर रियासत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- इससे तत्कालीन वेशभूषा, आभूषणों तथा उत्सवों व पर्वो के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।
- **बहियाँ** - किसी भी कार्य या घटना का रिकॉर्ड संधारण करना बही कहलाता है।

बहियों के प्रकार -

- **हकीकत बही** - यह मुख्य रूप से जोधपुर राज्य से संबंधित है। इसमें राजा की दिनचर्या का उल्लेख रहता था।
- **हुकुमत बही** - इसमें शासकीय आदेश लिखे जाते थे।
- **खरीता बही** - महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से प्राप्त पत्रों की नकल जिसमें रहती थी, उसे खरीता बही कहा जाता था।
- **ब्याह री बही** - यह विवाह से संबंधित होती थी।
- **कमठाना बही** - सरकारी भवनों के निर्माण से संबंधित बही
- वर्तमान में यह बहियाँ राज्य अभिलेखागार बीकानेर में संरक्षित है।
- राणा राजसिंह की बही राजस्थान की सबसे प्राचीनतम बही मानी जाती है। इससे मेवाड़ राज्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- राजस्थान की दूसरी सबसे प्राचीनतम बहीं "जोधपुर हुकुमत री बहीं" है। यह महाराजा जसवन्त सिंह युगीन आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करती है।
- **रम्ज तथा अहकाम** - यह बादशाहों द्वारा अपने निजी सचिव को लिखवाई गई टिप्पणियाँ थी, जिसके आधार पर सचिव पूरा पत्र तैयार करता था।
- **दस्तक** - इसके आधार पर सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया-ले जाया जा सकता था। यह आधुनिक परमिट के समान था।
- **अडसट्टा** - जयपुर राज्य के भू-राजस्व व प्रबंध का रिकॉर्ड।
- **परवाना** - शासक द्वारा अपने अधीन कर्मचारियों को भेजे गये पत्र परवाना कहलाते थे। इन पत्रों से विभिन्न राज्यों की राजनीतिक घटनाओं के अतिरिक्त सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति की भी जानकारी मिलती है इन्हे चार भागों में विभक्त किया जा सकता है-
- **(अ) दोवर्की** - दो परतों वाले दस्तावेज दोवर्की के नाम से जाने जाते है। इन परतों में मुख्य रूप से दैनिक प्रशासन, युध्द से संबंधित खर्च, घायलों के उपचार आदि पर प्रकाश पड़ता है।
- **(ब) जमाबंदी** - ये पत्र राजस्व से संबंधित है। अधिकृत पत्रों में चुंगी तथा जंगलात का हिसाब आदि हैं। ये पत्र राज्य की आर्थिक स्थिति जानने के लिए उपयोगी है।
- **(स) मुल्की** - ये हिसाब से संबंधित बहियाँ हैं, जिनमें 3 वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक का हिसाब मिलता है। इनमें राज्य की आमदनी, कर्मचारियों के वेतन आदि से संबंधित ब्यौरा हैं।
- **(द) तलकी** - इनमें राजाओं के आदेश तथा अन्य राज्यों के शासकों, सामंतों एवं अन्य कर्मचारियों को भेजे हुए पत्रों की नकलें हैं।

सामन्त प्रथा

- सामंतवादी व्यवस्था के प्रारंभ के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। प्रो. राय चौधरी ने इसका उदयकाल छठी शताब्दी माना है।
- प्रो. डी.डी. कौशाम्बी ने गुप्तकाल के बाद सामंत व्यवस्था का विकास काल माना है।
- गुप्तकाल के अंत में उच्चाधिकारियों को वेतन के बदले भूमि दी जाने लगी। इन भूमि मालिकों को सामंत कहा जाने लगा।
- अधिकांश इतिहासकारों की मान्यता है कि सामंत व्यवस्था संभवत: गुप्तकाल में प्रारंभ हुई थी।
- सामंत व्यवस्था मूलतः प्रशासनिक सैनिक थी। संपूर्ण शासन तंत्र राजा और सांमत व्यवस्था पर आधारित था।
- कर्नल जेम्स टॉड प्रथम अंग्रेजी इतिहासकार था जिसने अपनी पुस्तक "एनाल्स एण्ड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान" में राजस्थान की जागीरदारी (फ्यूडलिज्म) व्यवस्था पर लिखा है।

सामंत व्यवस्था का स्वरूप

- लेफ्टिनेन्ट कर्नल जेम्स टॉड (राजस्थान इतिहास का जनक) ने राजस्थान की सामंत व्यवस्था को इंग्लैण्ड की 'फ्यूडल' व्यवस्था के समान माना है।
- लेकिन राजस्थान की सामंत व्यवस्था का स्वरूप पश्चिमी व्यवस्था से पूर्णतः भिन्न है।
- पश्चिम में राजा और सामंत के मध्य स्वामी और सेवक का संबंध होता था इसके विपरीत राजस्थान में भाई-बंधु का संबंध होता था यहाँ राजा समकक्षों में प्रथम होता था।
- राजा राज्य की सर्वोच्च सत्ता का केन्द्र होता था और उसके बाद सामंतों का समूह होता था जो कुलीय व्यवस्था से संगठित होता था, राजा राज्य का प्रधान तो सामंत अपनी जागीर का प्रधान होता था।
- इस प्रकार राजस्थान में प्रचलित राजा और सामंत शासन व्यवस्था का प्रारंभिक स्वरूप पदसोपान व्यवस्था पर आधारित नहीं था बल्कि एक टेन्ट के समान स्तंभों पर आधारित व्यवस्था थी, जिसमें राजा मध्य में स्थित मुख्य स्तंभ होता था।
- टेन्ट के एक भी स्तंभ के कमजोर होने पर व्यवस्था बिगड़ जाती है उसी प्रकार सामन्त और शासक के सम्बन्ध परस्पर निर्भर थे।

सामन्त प्रशासन स्वरूप की विशेषतायें -

- राजा से जन्मजात अधिकार के रूप में प्राप्त भूमि के साथ ही सामंत के विशेषाधिकार एवं उत्तरदायित्व भी निर्धारित हो जाते थे। इस व्यवस्था की निम्न विशेषताए थी-

1. यह रक्त सम्बन्ध पर आधारित सगोत्रिय कुलीय व्यवस्था थी।
2. राजा महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर सामन्तों को नियुक्त करता था।
3. बिना सामंतों से परामर्श किये राजा कोई भी महत्वपूर्ण प्रशासनिक, सैनिक एवं नीतिगत निर्णय नहीं ले सकता था।
4. राजा और सामन्त के सम्बन्ध स्वामी और सेवक के नहीं होते थे, इस तथ्य को सम्मान देते हुए यह आचार संहिता रूपी परम्परा प्रचलित थी कि शासक सामन्त को **'काकाजी'** एवं **'भाई जी'** सम्बोधित करे, इसी प्रकार सामन्त भी राजा को **'बापजी'** सम्बोधित करते थे।
5. सामन्त का उत्थान और पतन राजा के साथ ही होता था। इस दृष्टि से सामन्त किसी अन्य राज्य से युध्द एवं संधि का निर्णय नहीं कर सकता था।
6. राजा के उत्तराधिकारी के निर्णय में सामन्त निर्णायक भूमिका निभाते थे, कई बार शासक द्वारा मनोनीत उत्तराधिकारी को सामन्तों ने स्वीकार नहीं किया और उसे बदल दिया।

- यहाँ ज्येष्ठ पूत्र को उत्तराधिकारी बनाने की परम्परा थी लेकिन ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब सामंतों को ज्येष्ठ पुत्र की योग्यता और नेतृत्व पर संदेह हो तो वे योग्य पुत्र या भाई को सिंहासन पर बैठा देते थे।
- उदाहरण स्वरूप जब महाराणा उदय सिंह ने जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया तब सलूम्बर के कृष्णदास चुण्डावत ने मेवाड़ के सामतों व जन-भावनाओं के अनुरूप **'महाराणा प्रताप'** का राज्याभिषेक कर उन्हें मेवाड़ की गद्दी पर आसीन किया था।

7. राज्य की सुरक्षा के लिए सामंत को एक सेना रखनी होती थी तथा आवश्यकता पड़ने पर उसे सेना सहित राज्य की सेवा में उपस्थित होना पड़ता था।

- राजस्थान में सामन्त व्यवस्था का मूल तत्त्व था शासक पिता की मृत्यु के बाद बड़ा पूत्र राजा बनता, राजा अपने छोटे भाइयों को जीवन यापन के लिए भूमि आंवटित करता, भाई-बंधु को प्रदत्त उक्त भूमि का स्वामी सामंत कहलाता था।
- मध्यकाल में भू-स्वामी सामन्त को सामन्त जागीरदार कहा जाने लगा।
- सामन्त जागीर पर सामन्त का **'जन्मजात अधिकार'** माना जाता था। अर्थात् राजा सामंत जागीर को खालसा (केन्द्रीय भूमि) में पुनः सम्मिलित नहीं कर सकता था।
- सामंत अपनी जागीर (फारसी भाषा का शब्द) क्षेत्र से राजस्व वसूल करने का वैधानिक अधिकारी होता था।
- सामंत व्यवस्था को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है कि "सामन्त व्यवस्था रक्त सम्बन्ध पर आधारित कुलीय प्रशासनिक और सैनिक व्यवस्था थी, जिसमें राजा समकक्षों में प्रमुख होता था। राज्य को एक परिवार और राजा को उसका प्रमुख मानते हुए, सामंत परिवार के सदस्य होने के नाते उसकी सुरक्षा और संचालन का उत्तरदायित्व राजा और सामन्त सामूहिक रूप से मानते थे। राजा और सामन्तों के मध्य भाईचारे का सम्बन्ध था।

सामंतों की श्रेणियाँ -

- मध्यकाल में सामन्तों की श्रेणियाँ एवं पद प्रतिष्ठा भी निर्धारित कर दी गई।
- यह व्यवस्था मुगल मनसबदारी व्यवस्था से प्रभावित थी लेकिन पूर्णतः उसके अनुसार नहीं थी।
- मनसबदारी व्यवस्था नौकरशाही व्यवस्था थी जिसका निर्धारण आय के आधार पर होता था, इसके विपरीत राजस्थान में सामन्तों की श्रेणियों का निर्धारण 'कुलीय प्रतिष्ठा एवं पद के अनुसार' होता था।
- मेवाड़ राज्य में महाराणा अमर सिंह द्वितीय (1698-1710 ई.) के समय सामन्त प्रथा को व्यवस्थित किया गया। मेवाड़ में सामन्तों की तीन श्रेणियों (सोलह, बत्तीस व गोल के सामन्त) होती थी। इन्हें **'उमराव'** कहा जाता था।
- मेवाड़ में प्रथम श्रेणी के सामंत **'सोलह'** द्वितीय श्रेणी के सामंत 'बत्तीस' व तृतीय श्रेणी के सामंत 'गोल के सामंत' कहलाते थे। यह व्यवस्था **'अमरशाही रेख'** कहलाती थी।

- प्रथम श्रेणी के 16 उमरावों में सलुम्बर के सामन्त का विशेष स्थान होता था।
- महाराणा की अनुपस्थिति में यह राजधानी संभालता था, तथा मेवाड़ की सेना के **'हरावल'** का नेतृत्त्व करता था। सलूम्बर मेवाड़ का सबसे बड़ा ठिकाना था।
- मारवाड़ में सामन्तों की चार श्रेणियाँ थी- राजवी, सरदार, गनायत और मुत्सद्दी।
- राजवी राजा के छोटे भाई तथा राजा के तीन पीढ़ियों तक के निकट के संबंधी होते थे, जिन्हें रेख, चाकरी व हुक्मनामा नहीं देना पड़ता था।
- राजपरिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य राठौड़ सामन्तों को **'सरदार'** कहा जाता था।
- सरदारों की भी **'चार उप श्रेणियाँ'** थी, जिनमें सिरायत प्रथम श्रेणी के सरदार थे, अर्थात् प्रथम श्रेणी के **'सरदार'** सिरायत कहलाते थे। ये राजा के पास बैठते थे। ये दो पंक्तियों में राजा के दायें व बायें बैठते थे।
- सिरायत सरदार दाई मिसल (राव रणमल के वंशज) व बाई मिसल (राव जोधा के वंशज) में विभाजित थे। इन सामन्तों को दोहरी ताजीम प्राप्त थी। मिसल राज्य दरबार में एक महत्वपूर्ण पद या स्थान था, जो राज्य के प्रमुख सरदारों व सामंतों को दिया जाता था।
- जोधपुर राज्य दरबार में आठ स्थान (मिसल) निश्चित थे। मिसल एकमत होकर राजा को भी बदल सकती थी।
- जोधपुर में यह (मिसल) व्यवस्था राव सूर सिंह (1595-1619 ई.) के शासनकाल में मारवाड़ के दीवान गोविन्द दास भाटी द्वारा की गई।
- राजदरबार में पंक्तिबद्ध तरीके से बैठने की रीति को **'मिसल'** कहा जाता था।
- अपनी शाखा के अतिरिक्त बाहर से आए हुए सरदार (गैर-राठोड़) **'गनायत'** कहलाते थे।
- ये सामन्त मारवाड़ में राठौड़ों का प्रभुत्व स्थापित होने से पहले ही मारवाड़ क्षेत्र में विद्यमान थे, तथा इन्होने राठौड़ों की अधीनता स्वीकार कर ली थी।
- **'गनायत'** श्रेणी के सामन्तों के राजपरिवारों के साथ 'वैवाहिक संबंध' थे।
- राज्य के प्रशासन में कार्य करने के बदले में प्राप्त जागीर के अधिकारी **'मुत्सद्दी सामंत'** कहलाते थे।
- मारवाड़ में नए राजा का राजतिलक बगड़ी व जैतावत ठाकुर अपने अंगूठे को तलवार से चीरकर रक्त से करते थे।
- मेवाड़ में महाराणा का राजतिलक ऊन्दरी गाँव का भील गमेती अपने अंगूठे को चीर कर रक्त से करता था।
- मेवाड़ में शासक का निर्धारण सलूम्बर के सामंत द्वारा किया जाता था।
- बीकानेर में नए राठौड़ राजा का राजतिलक **'गोदारा'** जाटों द्वारा जबकि आमेर के कच्छवाह शासकों का राजतिलक **'मीणाओं'** द्वारा किया जाता था।
- जयपुर महाराजा पृथ्वीराज कच्छवाह ने आमेर राज्य को 12 भागों में विभाजित कर अपने 12 पुत्रों में बांट दिया। इसे आमेर में **'बारह कोटड़ी'** व्यवस्था कहा जाता था।
- जयपुर राज्य में सामंत मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित थे- ताजीमी और खास चौकी।
- बीकानेर में सामंतों की तीन श्रेणियाँ थी- प्रथम श्रेणी में बीका के वंशज, द्वितीय श्रेणी में बीका के भाई व चाचा के वंशज तथा तृतीय श्रेणी में स्थानीय व तृतीय श्रेणी में परदेसी सामन्त थे जो भाटी, सांखला इत्यादि वंशों के थे।
- कोटा राज्य में जागीरदार (सामंत) दो श्रेणियों में विभाजित थे- देशथी और हजूरथी।
- देश में ही रह कर सेवा (रक्षा) करने वाले सामन्त **'देशथी'** तथा दरबार के साथ मुगल सेवा में रहने वाले सामन्त **'हजूरथी'** कहलाते थे।
- कोटा नरेश के निकट कुटुम्बी **'राजवी'** व अन्य सरदार अमीर उमराव कहलाते थे। कोटा में मुख्य सामंतों की संख्या 30 थी।
- जैसलमेर में भाटी शासक रावल हरराज ने सामंतों को डाबी (बायीं) व जीवणी (दायीं) नामक दो श्रेणियों में विभाजित किया था।
- इसके अतिरिक्त सामंतों की दो अन्य श्रेणियों भी थी- भौमिया सामंत व ग्रासियाँ समंत।
- वे सामंत जिन्हें राज्य बलिदान (सीमा या गाँव की रक्षा के लिए) के बदले भूमि देता था **''भौमिया सामन्त''** कहलाते थे। यह भूमि वंशानुगत होती थी। अर्थात् इन्हें उनकी जागीर से बेदखल नहीं किया जा सकता था।
- राज्य द्वारा सैनिक सेवा के बदले दी जाने वाली भूमि के मालिक ग्रासियाँ सामंत कहलाते थे।
- यदि ग्रासियाँ अपनी सेवा में किसी भी प्रकार की ढील दिखाते तो उन्हें ग्रास सामंत से बेदखल किया जा सकता था।

सामन्तों की सैनिक सेवा

- परम्परागत रूप से सामन्त युध्द एवं शांति के समय राजा को अपनी सेवाएं देता था।
- युद्ध के समय राजा सामन्त को 'खास रुक्का' भेजकर जमीयत (सेना) सहित सेवा में उपस्थित होने के लिए कहता था।
- शांति के समय वर्ष में एक बार निश्चित अवधि के लिए सामन्त अपनी जमीयत (सेना) सहित शासक की सेवा में उपस्थित होकर शासक को राजकार्य में सहयोग देता था।
- कुल विशेष अवसर एवं त्योहार जैसे दशहरा, अक्षय तृतीया आदि पर भी सामन्त को राजा के दरबार में उपस्थित होना पड़ता था।

सामन्तों द्वारा राजा को दिये जाने वाले कर

1. **रेख -** रेख से तात्पर्य जागीर की अनुमानित वार्षिक राजस्व से था, जिसका उल्लेख शासक प्रदत्त जागीर के पट्टे में करता था।

- रेख का दूसरा अर्थ सैनिक कर से भी लिया जाता था। सामान्य शब्दों में सामन्तों की जागीर की वार्षिक उपज का अनुमान रेख कहलाता था।
- रेख के आधार पर ही सामन्त से उत्तराधिकार शुल्क, सैनिक सेवा, न्यौता शुल्क (राजकुमारी के विवाह पर कर) का निर्धारण होता था।
- **रेख दो प्रकार की होती थी-** पट्टा रेख व भरतु रेख।
- राजा द्वारा प्रदत्त जागीर के पट्टे में उल्लेखित अनुमानित राजस्व पट्टा रेख तथा राजा द्वारा सामन्त को प्रदत्त जागीर के पट्टे में

उल्लेखित रेख के अनुसार राजस्व भुगतान भरतु रेखा कहलाता था।

- महाराजा अजीत सिंह (जोधपुर) के समय तागीरात नामक कर सामंतों से वसूला जाने लगा था।

2. **उत्तराधिकार कर -** सामन्त व जागीरदार की मृत्यु के बाद उक्त जागीर के नए उत्तराधिकारी से गद्दीनसीनी के समय राज्य द्वारा यह कर वसूल किया जाता था।

- उत्तराधिकार या तलवार बंधाई कर को जोधपुर (मारवाड़) में 'हुक्मनामा' और पेशकशी, मेवाड़ और जयपुर में नजराना तथा कुछ अन्य रियासतों में 'कैद खालसा' और 'तलवार बंधाई' कर कहा जाता था।
- राजस्थान में जैसलमेर एकमात्र ऐसी रियासत थी जहाँ उत्तराधिकार शुल्क नहीं लिया जाता था।

3. **चाकरी -** जागीरदार (सामन्त) द्वारा राजा को युद्ध व शांति के समय दी जाने वाली सेवा 'चाकरी' कहलाती थी। जैसलमेर एकमात्र ऐसी रियासत थी जिसमें चाकरी के बदले धन मिलता था।
4. **नजराना -** राजा के ज्येष्ठ पुत्र के प्रथम विवाह के अवसर पर सामंतों द्वारा दी जाने वाली भेंट या कर "नजराना" कहलाता था।

- होली, दीपावली, दशहरा, आखातीज आदि अवसरों व त्योहारों पर सामंत द्वारा राजा को दी जाने वाली भेंट भी "नजराना" कहलाती थी।

5. **न्योत बराड़ -** सामन्त द्वारा शासक की राजकुमारी के विवाह के अवसर पर दिया जाने वाला कर 'न्योत बराड़' कहलाता था। यह एक प्रकार का विवाह कर था।
6. **गनीम बराड़ -** यह एक प्रकार का युद्ध कर था जो सामंत द्वारा राजा को युद्ध के समय दिया जाता था।

सामंतों के विशेषाधिकार -

1. **ताजीम -** सामन्त के दरबार में आने तथा वापस जाने पर राजा द्वारा खड़े होकर उसका अभिवादन करना 'ताजीम' कहलाता था।

- यह दो प्रकार की होती थी- **1. इकेवड़ी ताजीम -** इसमें राजा केवल सामन्त के दरबार में आने पर खड़ा होकर उसका अभिवादन करता था, तथा **2. दोवड़ी ताजीम -** राजा द्वारा सामन्त के दरबार में आने तथा वापस जाने दोनों समय पर खड़े होकर अभिवादन करना 'दोवड़ी ताजीम' कहलाता था।

2. **बाहँ पसाव -** शासक जमीदार के अभिवादन को स्वीकार करते हुए अपने हाथ उस सामन्त (जमीदार) के कंधों पर रख देता था।
3. **हाथ कुरब -** सामन्त को दिया जाने वाला विशेष सम्मान, जिसमें शासक सामन्त के कन्धों पर हाथ रखकर अपनी छाती तक ले जाता था जिसका तात्पर्य होता था कि आपका स्थान मेरे हृदय में है।

- यह सम्मान पाना सामन्त के लिए गौरवशाली पल होता था। इसके सम्बन्ध में मारवाड़ में एक कहावत प्रचलित थी "कुरब सिर सांटे मिलता है, दाम सांटे नहीं।"

4. **बड़ी ओल -** मेवाड़ महाराणा के दायीं तरफ की बैठक को 'बड़ी ओल' कहा जाता था, जिसमें उमराव बैठते थे। महाराणा के बायीं तरफ की बैठक को "कुंवरों की ओल" कहा जाता था जिसमें युवराज व राजकुमार बैठते थे।
5. **सिरोपाव -** सिर से पैर तक पहनने के वस्त्र आदि जो राजा-महाराजा द्वारा किसी को विशिष्ट सेवा के लिए सम्मानार्थ दिए जाते थे। इस संदर्भ में कहा जाता था कि "मान घौई राखियौ, जातां दिया सिरपाव।"

- मारवाड़ में वीरता, साहित्य व सेवा के लिए 'सिरोपाव' देने की परम्परा रही थी। मारवाड़ में सर्वोच्च सिरोपाव 'हाथी सिरोपाव' था।

प्रमुख सिरोपाव: एक दृष्टि में -

- **हाथी सिरोपाव -** जिसको यह सिरोपाव मिलता है उसे राज्य से कपड़ों वगैरा ये सब मिलाकर 780 रुपए दिए जाते हैं। परन्तु विवाह के मौके पर (चोगे और कमरबंद की कीमत मिलाकर) 849 रुपए मिलते हैं।
- इसके अलावा महाराजा साहब के नजदीकी भाई-बंधुओं को, जो मारवाड़ में 'महाराज' कहलाते हैं, विशेष कृपा और मान प्रदर्शित करने के लिए 1000 रुपए दिये जाते हैं।
- **पालकी सिरोपाव -** इसमें महाराजा साहब की तरफ से 472 रुपए दिए जाते हैं। परन्तु विवाह के मौके पर इसकी रकम 553 रुपए कर दी जाती थी।
- **घोड़ा सिरोपाव -** इसमें साधारण तौर पर 240 रुपए और विवाह के मौके पर 340 रुपए मिलते थे।
- **सादा सिरोपाव -** इसके प्रथम दर्जे में साधारण तौर पर 140 रुपए व विवाह के समय 240 रुपए दिये जाते थे। परन्तु इसके दूसरे दर्जे में 100 रुपये व तीसरे दर्जे में 71 रुपये मिलते थे।
- **कंठी-दुपट्टा सिरोपाव -** इसकी प्रथम श्रेणी में 75 रुपए, द्वितीय श्रेणी में 60 रुपए व तृतीय श्रेणी में 45 रुपए दिए जाते थे।
- **कड़ा, मोती, दुशाला और मदील (जरीदार पगड़ी) सिरोपाव -** इसमें प्रथम श्रेणी वाले को 121 रुपए, द्वितीय श्रेणी वाले को 85 रुपए और तृतीय श्रेणी वाले को 65 रुपए मिलते थे।
- **कड़ा और दुशाला सिरोपाव -** इसमें 37 रुपए दिये जाते थे।

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान के राजवंशों की राजस्व प्रणाली के अन्तर्गत किस प्रकार की भूमि को राजा की निजी सम्पत्ति माना जाता था?

(a) भोम
(b) जागीर
(c) हवाला
(d) खालसा **[d]**

2. कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) खालसा भूमि राजा के नियंत्रण में होती थी।
(b) जागीरी भूमि पर जागीरदार या ठिकानेदार का पैतृक नियंत्रण होता था।
(c) भोमियों को कुछ भूमि उनकी चौकीदारी की सेवाओं तथा मार्गों की सुरक्षा के कर्तव्यों को पूरा करने के लिये दी जाती थी।
(d) चरणौता भूमि पर राजा का नियंत्रण होता था। **[d]**

3. **राजस्थान की पारंपरिक भूमि श्रेणियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**
कथन:
1. 'माल' काली उपजाऊ भूमि को कहा जाता है, जबकि 'चरणौता' चरागाह या गौचर भूमि के लिए प्रयुक्त शब्द है।
2. 'चाही भूमि' कुओं और नहरों द्वारा सिंचित भूमि होती है, जबकि 'बारानी' पूर्णतः असिंचित भूमि को कहा जाता है।
3. 'तलाई भूमि' तालाब के पेटे की वह भूमि है जहाँ बिना सिंचाई के फसल पैदा होती है और 'हकत-बकत' जोती जाने वाली भूमि को कहते हैं।
विकल्प:
(a) केवल 1 और 2 सही हैं।
(b) केवल 2 और 3 सही हैं।
(c) केवल 1 और 3 सही हैं।
(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं। **[d]**

4. **ईजारा किसके लिए जाना जाता है?**
(a) भूमि मूल्यांकन
(b) मुद्रा परिवर्तन
(c) राजस्व की ठेका प्रणाली
(d) स्वर्ण की खरीद **[c]**

5. **मध्यकालीन राजस्थान के राज्यों में शासक के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी जाना जाता था-**
(a) दीवान
(b) प्रधान
(c) मुसाहिब
(d) अमात्य **[b]**

6. **8वीं से 12वीं सदी के समाज में राजस्थान में प्रचलित अधिकारी 'अक्षपटलिक' का संबंध किस से था?**
(a) कृषि कार्य पर नजर रखने वाला अधिकारी
(b) राज्य में आय-व्यय का ब्यौरा रखने वाला अधिकारी
(c) राजकोष और आभूषणों को रखने वाला अधिकारी
(d) विदेश नीति से संबंधित अधिकारी **[b]**

7. **राजस्थान के पूर्व मध्यकालीन राज्यों में 'नैमित्तिक' पदनाम को प्रयोग किया जाता था-**
(a) राजकीय कवि के लिए
(b) लोक स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख के लिए
(c) राजकीय ज्योतिष के लिए
(d) मुख्य न्यायिक अधिकारी के लिए **[c]**

8. **'डाबी' और 'जीवणी' सामन्तों की श्रेणी राजस्थान में कहाँ प्रचलित थी?**
(a) जैसलमेर
(b) उदयपुर
(c) मारवाड़
(d) कोटा **[a]**

9. **सोलह, बत्तीस और गोल का संबंध किससे है?**
(a) बीकानेर राज्य में सामन्तों की श्रेणियाँ
(b) जयपुर राज्य में सामन्तों की श्रेणियाँ
(c) मेवाड़ राज्य में सामन्तों की श्रेणियाँ
(d) मारवाड़ राज्य में सामन्तों की श्रेणियाँ **[c]**

10. **अकबर द्वारा आरंभ की गई मनसबदारं प्रणाली मुख्यतया किससे संबंधित थी? (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें)**
(a) सैन्य सह-नौकरशाही तंत्र
(b) धार्मिक सुधार
(c) ग्राम-स्तर प्रशासन
(d) भूमि राजस्व प्रणाली **[a]**

11. **मारवाड़ के वे सामंत, जिन्हें राजा का निकट संबंधी होने के कारण तीन पीढ़ियों तक चाकरी और रेख देने से मुक्त रखा जाता था, कहलाते थे-**
(a) राणावत (b) कुम्पावत
(c) राजवी (d) सरदार **[c]**

12. **राजवी, सरदार, मुत्सदी और गनायत किस राज्य में सामन्तों की श्रेणियाँ थी?**
(a) मारवाड़ (b) हाड़ौती
(c) जयपुर (d) मेवाड़ **[a]**

13. **राजपूताना की एकमात्र रियासत जहाँ उत्तराधिकारी शुल्क नहीं लगता था, वह है –**
(a) मारवाड़ (b) जैसलमेर
(c) मेवाड़ (d) कोटा **[b]**

14. **राजस्थान के इतिहास में 'पट्टा रेख' से क्या अभिप्राय है?**
(a) बेगार
(b) आयात-निर्यात कर
(c) सैन्य कर
(d) पट्टा में लिखा हुआ निर्धारित कर **[d]**

♦♦♦♦